

उ0प्र0 के समाज के दिव्यांग अभ्यर्थियों के लिए शासन द्वारा अधिसूचित (चिन्हित) किये गये पदों पर रिक्तियां बनने पर आरक्षण अनुमन्य होगा।

नोट:- (1) शासनादेश संख्या-39 रिट/का-2/2019 दिनांक-26 जून, 2019 द्वारा शासनादेश संख्या-18/1/99/का-2/2006 दिनांक-09 जनवरी, 2007 के प्रस्तर-4 में दिये गये प्राविधान, "यह भी स्पष्ट किया जाता है कि राज्याधीन लोक सेवाओं और पदों पर सीधी भर्ती के प्रक्रम पर महिलाओं को अनुमन्य उपरोक्त आरक्षण केवल उत्तर प्रदेश की मूल निवासी महिलाओं को ही अनुमन्य है" को रिट याचिका संख्या-11039/2018 विपिन कुमार मौर्या व अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य व अन्य तथा सम्बद्ध 6 अन्य रिट याचिकाओं में मा. उच्च न्यायालय, इलाहाबाद द्वारा दिनांक-16-01-2019 को अधिकारातीत (ULTRA VIRES) घोषित करने सम्बन्धी निर्णय के अनुपालन में शासनादेश दिनांक-09-01-2007 से प्रस्तर-04 को विलोपित किए जाने का निर्णय लिया गया है। उक्त निर्णय शासन द्वारा मा. उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक-16.01.2019 के विरुद्ध दायर विशेष अपील (डी) संख्या-475/2019 में मा. न्यायालय द्वारा पारित होने वाले अन्तिम निर्णय के अधीन होगा। (2) आरक्षण/आयु में छूट का लाभ चाहने वाले अभ्यर्थी संबंधित आरक्षित श्रेणी के समर्थन में इस विस्तृत विज्ञापन के परिशिष्ट-3 में मुद्रित तथा आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध निर्धारित प्रारूप पर सक्षम अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र प्राप्त कर लें एवं जब उनसे अपेक्षा की जाय तब वे उसे आयोग को प्रस्तुत करें। (3) उ0प्र0 के आरक्षित श्रेणी के सभी अभ्यर्थी आवेदन में अपनी श्रेणी/उप श्रेणी अवश्य अंकित करें। (4) एक से अधिक आरक्षित श्रेणी/आयु सीमा में छूट का दावा करने वाले अभ्यर्थियों को केवल एक छूट, जो अधिक लाभकारी होगी, दी जायेगी। (5) अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के आश्रित, दिव्यांगजन तथा भूतपूर्व सैनिक अभ्यर्थियों को, जो उत्तर प्रदेश राज्य के मूल निवासी नहीं हैं, उन्हें आरक्षण/आयु में छूट का लाभ अनुमन्य नहीं है। (6) महिला अभ्यर्थियों के मामले में पिता पक्ष से निर्गत जाति प्रमाण पत्र ही मान्य होंगे। (7) भूतपूर्व सैनिकों हेतु समूह 'ग' के पदों की उपलब्धता होने की दशा में नियमानुसार आरक्षण अनुमन्य होगा। (8) अभ्यर्थियों द्वारा प्रारम्भिक परीक्षा में अपने आवेदन में पात्रता तथा आरक्षण का लाभ प्राप्त करने हेतु जिस श्रेणी/उपश्रेणी का दावा किया गया है, उसके समर्थन में समस्त वॉछित प्रमाण-पत्रों की स्वप्रमाणित प्रतियाँ मुख्य परीक्षा के आवेदन पत्र के साथ संलग्न किया जाना अनिवार्य है, अन्यथा उनका दावा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

8. आपात कमीशन प्राप्त/अल्पकालिक कमीशन प्राप्त अधिकारियों की पात्रता शर्त:- (केवल आयु में छूट हेतु) आपात कमीशन प्राप्त/अल्पकालिक कमीशन प्राप्त अधिकारी, जो सेना से अवमुक्त नहीं हुये हैं किन्तु जिनकी सैन्य सेवा में वृद्धि पुनर्वास के लिए की गई है, भी इस परीक्षा के लिए शासनादेश संख्या-22/10/1976-कार्मिक-2-85, दिनांक 30 जनवरी, 1985 के अनुसार निम्नलिखित शर्तों पर आवेदन कर सकते हैं :- (अ) ऐसे आवेदकों को थल सेना/नौ सेना/वायु सेना के सक्षम अधिकारी द्वारा जारी इस आशय का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा कि उनकी सेवा में वृद्धि पुनर्वास के लिये की गयी है और उनके विरुद्ध कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही लम्बित नहीं है। (ब) ऐसे आवेदकों को यथा समय यह लिखित अण्डरटेकिंग प्रस्तुत करना होगा कि आवेदित पद के लिये चुन लिये जाने पर वे अपने को सैन्य सेवा से तत्काल अवमुक्त करा लेंगे। आपात/अल्पकालिक कमीशन प्राप्त अधिकारी को यह सुविधा अनुमन्य नहीं होगी, यदि (क) उसे सेना में स्थायी कमीशन प्राप्त हो गया हो। (ख) वह त्याग पत्र देकर सेना से अवमुक्त हुआ हो एवं (ग) वह सेना से कदाचार अथवा शारीरिक अक्षमता के कारण अथवा स्वयं की प्रार्थना पत्र के आधार पर अवमुक्त न हुआ हो और जिसे ग्रेच्युटी प्रदान की गई हो।

9. वैवाहिक प्रास्थिति:- ऐसे विवाहित पुरुष अभ्यर्थी, जिनकी एक से अधिक जीवित पत्नी हो तथा महिला अभ्यर्थी जिन्होंने किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह किया है जिसकी पहले से ही एक पत्नी हो, पात्र नहीं होंगे, जब तक कि महामहिम राज्यपाल ने उक्त शर्त से छूट प्रदान न कर दी हो।

10. शैक्षिक अर्हता :- सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा में सम्मिलित पदों हेतु:- आवेदन पत्र स्वीकार किये जाने की अन्तिम तिथि तक अभ्यर्थियों को भारत में विधि द्वारा स्थापित किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की स्नातक डिग्री या समकक्ष अर्हता अवश्य धारित करनी चाहिए। इसका उल्लेख अभ्यर्थी अपने आन-लाइन आवेदन के निर्धारित स्तम्भ में करें। किन्तु कतिपय पदों हेतु विशिष्ट अर्हतायें भी हैं, जिनका विवरण निम्नवत् है :-

उपनिबन्धक, सहायक अभियोजन अधिकारी (परिवहन)	विधि स्नातक
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी/सह जिला विद्यालय निरीक्षक एवं अन्यसमकक्षीय प्रशासनिक पद, जिलाप्रशासनिक अधिकारी।	स्नातकोत्तर उपाधि।
जिला लेखा परीक्षा अधिकारी (वित्त लेखापरीक्षा अनुभाग)।	वाणिज्य स्नातक।
सहायक नियंत्रक विधिक माप विज्ञान (श्रेणी-1)/सहायक नियंत्रक विधिक माप विज्ञान (श्रेणी-2)।	एक विषय के रूप में भौतिकी या यांत्रिकी अभियंत्रण सहित विज्ञान में स्नातक उपाधि।
सहायक श्रमायुक्त।	वाणिज्य/विधि या एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र या समाजशास्त्र के साथ कला में स्नातक।
जिला कार्यक्रम अधिकारी।	समाज शास्त्र या समाज विज्ञान या गृह विज्ञान या समाज कार्य में स्नातक उपाधि।
वरिष्ठ प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान।	स्नातकोत्तर उपाधि के साथ शिक्षा स्नातक।
जिला प्रोबेशन अधिकारी।	मनोविज्ञान या समाज शास्त्र या सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर उपाधि या उसके समकक्ष कोई अर्हता या सामाजिक कार्य की किसी मान्यता प्राप्त संस्था से सामाजिक कार्य की किसी शाखा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
बाल विकास परियोजना अधिकारी	समाज शास्त्र या समाज कार्य या गृह विज्ञान में स्नातक उपाधि या सरकार द्वारा उसके समकक्ष मान्यता प्राप्त अर्हता।
अभिहित अधिकारी/खाद्य सुरक्षा अधिकारी	(एक) भारत में विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि या सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त उसके समकक्ष कोई अर्हता हो, या (दो) खाद्य सुरक्षा अधिकारी के पद पर सीधी भर्ती के लिए विहित अर्हता में से कम से कम एक अर्हता, जो निम्नवत् है:- मान्यता प्राप्त किसी विश्वविद्यालय से खाद्य प्रौद्योगिकी या डेयरी प्रौद्योगिकी या जैव प्रौद्योगिकी या तेल प्रौद्योगिकी या कृषि विज्ञान या पशु चिकित्सा विज्ञान या जैव रसायन विज्ञान या सूक्ष्म जीव विज्ञान में स्नातक की उपाधि या रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि या औषधि में उपाधि या केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित कोई अन्य समकक्ष/मान्यता प्राप्त अर्हता, परन्तु किसी व्यक्ति को, जिसका विनिर्माण आयात या किसी खाद्य पदार्थ के विक्रय में कोई वित्तीय हित हो, खाद्य सुरक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्त नहीं किया जायेगा।

सांख्यिकी अधिकारी	भारत में विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय से गणित या गणितीय सांख्यिकी या सांख्यिकी या कृषि सांख्यिकी में स्नातकोत्तर उपाधि या सरकार द्वारा उसके समकक्ष मान्यता प्राप्त कोई अर्हता।
श्रम प्रवर्तन अधिकारी	अर्थशास्त्र/समाज शास्त्र/वाणिज्य के साथ स्नातक उपाधि तथा विधि/श्रम संबंध/श्रम कल्याण/श्रम विधि/वाणिज्य/समाज शास्त्र/समाज कार्य/समाज कल्याण/व्यापार प्रबंधन/कार्मिक प्रबंधन में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा अथवा परास्नातक उपाधि।

नोट:- "अभ्यर्थियों द्वारा विशिष्ट अर्हता वाले पदों हेतु स्पष्ट रूप से विकल्प "हाँ" दिये जाने की स्थिति में ही उन्हें विशिष्ट अर्हता वाले पदों हेतु पद की अर्हता धारित करने की स्थिति में विचार किया जायेगा।"

सहायक वन संरक्षक/ क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा में सम्मिलित पदों हेतु:-

(क) सहायक वन संरक्षक पद हेतु अनिवार्य शैक्षिक अर्हतायें:- भारत में विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय से या समय-समय पर केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित किसी विदेशी विश्वविद्यालय से कम से कम एक विषय अर्थात् वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, भूगर्भ विज्ञान, वानिकी, सांख्यिकी के साथ स्नातक उपाधि या कृषि में स्नातक उपाधि या अभियंत्रण में स्नातक उपाधि या सरकार द्वारा उसके समकक्ष मान्यता प्राप्त कोई अर्हता होना आवश्यक है।

अधिमानि अर्हता:- ऐसे अभ्यर्थियों को जिन्होंने (i) कम से कम 02 वर्षों तक प्रादेशिक सेना में सेवा की हो या (ii) एन.सी.सी. का "बी" प्रमाण पत्र प्राप्त किया हो, अन्य बातों के समान होने पर सीधी भर्ती के मामले में अधिमान दिया जाएगा।

(ख) क्षेत्रीय वन अधिकारी पद हेतु अनिवार्य शैक्षिक अर्हतायें:- भारत में विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय से गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वानिकी, भूगर्भ विज्ञान, कृषि, सांख्यिकी, उद्यान विज्ञान और पर्यावरण विषयों में से दो या अधिक विषयों के साथ स्नातक उपाधि या कृषि में या अभियांत्रिकी में या पशु चिकित्सा विज्ञान में स्नातक उपाधि धारक हो, या सरकार द्वारा उसके समकक्ष मान्यता प्राप्त कोई अर्हता धारक हो।

अधिमानि अर्हता:- अन्य बातों के समान होने पर सीधी भर्ती के मामले में ऐसे अभ्यर्थी को अधिमान दिया जाएगा जिसने- (1) प्रादेशिक सेना में न्यूनतम दो वर्ष की अवधि तक सेवा की हो, या (2) राष्ट्रीय कैडेट कोर का "बी" प्रमाण-पत्र प्राप्त किया हो, या (3) किसी खेल में राज्य का प्रतिनिधित्व किया हो।

न्यूनतम शारीरिक मानक:- सहायक वन संरक्षक पद हेतु- (1) सीधी भर्ती के लिए किसी अभ्यर्थी को सेवा में नियुक्त नहीं किया जाएगा जब तक कि वह ऊँचाई व सीने के घेरे के लिए नीचे विनिर्दिष्ट रूप से न्यूनतम मानक न रखता हो-

लिंग	ऊँचाई	सीने का घेरा (पूर्ण फुलाने के पश्चात्)	विस्तार
1	2	3	4
पुरुष	163 सेमी.	84 सेमी.	5 सेमी.
महिला	150 सेमी.	79 सेमी.	5 सेमी.

परन्तु अनुसूचित जनजातियों और गोरखा, नेपाली, आसामी, मेघालयीय जनजाति, लद्दाखी, सिक्किमी, भूटानी, गढ़वाली, कुमाऊँनी, नागा और अरुणाचल प्रदेश के मूलवंश के अभ्यर्थियों की दशा में न्यूनतम ऊँचाई का मानक निम्न प्रकार होगा-

लिंग	ऊँचाई
1	2
पुरुष	152.5 सेमी.
महिला	145.0 सेमी.

(2) पुरुष अभ्यर्थियों से चार घन्टों में पूरी की जाने वाली 25 किलोमीटर की और महिला अभ्यर्थियों से चार घन्टे में पूरी की जाने वाली 14 किलोमीटर की पैदल चाल परीक्षण में अर्हता प्राप्त करने की अपेक्षा की जायेगी। इस परीक्षण के संचालन की व्यवस्था मुख्य वन संरक्षक, उत्तर प्रदेश द्वारा की जायेगी जिससे कि इसे चिकित्सा परिषद की बैठक के साथ-साथ किया जा सके।

क्षेत्रीय वन अधिकारी पद हेतु:-

(1) सीधी भर्ती के लिए किसी अभ्यर्थी को सेवा में तब तक नियुक्त नहीं किया जाएगा जब तक कि वह ऊँचाई व सीने के घेरे के लिए नीचे विनिर्दिष्ट न्यूनतम मानक न रखता हो:-

लिंग	ऊँचाई	सीने का घेरा (पूर्ण फुलाने के पश्चात्)	विस्तार
1	2	3	4
पुरुष	163 सेमी.	84 सेमी.	5 सेमी.
महिला	150 सेमी.	79 सेमी.	5 सेमी.

परन्तु अनुसूचित जनजातियों और गोरखा, नेपाली, गढ़वाली और कुमाऊँनी मूलवंश के अभ्यर्थियों की दशा में न्यूनतम ऊँचाइयों का मानक निम्न प्रकार होगा:-

लिंग	ऊँचाई
1	2
पुरुष	152.5 सेमी.
महिला	145.0 सेमी.

(2) पुरुष अभ्यर्थियों से चार घन्टों में पूरी की जाने वाली 25 किलोमीटर की और महिला अभ्यर्थियों से चार घन्टे में पूरी की जाने वाली 14 किलोमीटर की पैदल चाल परीक्षण में अर्हता प्राप्त करने की अपेक्षा की जायेगी। इस परीक्षण की व्यवस्था प्रमुख मुख्य वन संरक्षक, उत्तर प्रदेश द्वारा इस प्रकार की जायेगी कि चिकित्सा परिषद की बैठक के साथ समन्वय स्थापित रहे।

शारीरिक स्वस्थता:- सहायक वन संरक्षक पद हेतु- (1) किसी अभ्यर्थी को सेवा में किसी पद पर नियुक्त नहीं किया जायेगा जब तक कि मानसिक और शारीरिक दृष्टि से उसका स्वास्थ्य अच्छा न हो और वह किसी ऐसे शारीरिक दोष से मुक्त न हो, जिससे उसे अपने कर्तव्यों का दक्षतापूर्वक पालन करने में बाधा पड़ने की सम्भावना हो। किसी अभ्यर्थी को सीधी भर्ती द्वारा नियुक्ति के लिए अन्तिम रूप से अनुमोदित किये जाने से पूर्व उससे यह अपेक्षा की जायेगी कि वह चिकित्सा परिषद की परीक्षा उत्तीर्ण कर ले। **(2)** किसी महिला अभ्यर्थी को परीक्षण के आधार पर बारह सप्ताह या अधिक की गर्भवती पाये जाने पर अस्थायी रूप से अस्वस्थ घोषित किया जायेगा। प्रसूति के दिनोंक से छः सप्ताह पश्चात् स्वस्थता के लिए उसका पुनः परीक्षण किया

Cont..

आबकारी निरीक्षक पद हेतु

अभ्यर्थियों की श्रेणी	ऊँचाई (से.मी. में)	सीना (से.मी. में)	
		बिना फुलाए	फुलाने पर
(एक) पुरुष अभ्यर्थी	167	81.2	86.2
(दो) महिला अभ्यर्थी (अनु. जाति/अनु.जन जाति)	147		
(तीन) अन्य महिला अभ्यर्थियों हेतु	152		

उपकारापाल पद हेतु

अभ्यर्थियों की श्रेणी	ऊँचाई (से.मी. में)	सीने की माप (बिना फुलाए)	सीने का फुलाव न्यूनतम (से.मी.)
1- पुरुष अभ्यर्थियों के लिए	168 से.मी.	81.3 से.मी.	0.5 से.मी.
2- महिला अभ्यर्थियों के लिए	152 से.मी.	वजन 45 से 58 कि.ग्रा.	

अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थी की दशा में ऊँचाई की माप निम्नवत है-

पुरुष - 160 से.मी.

महिला - 147 से.मी.

जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी

पुरुष अभ्यर्थी

1	ऊँचाई	सेंटीमीटर में (न्यूनतम)
(क)	अनुसूचित जनजातियों के अभ्यर्थियों के लिए	160.0 सेंटीमीटर
(ख)	पहाड़ी क्षेत्र में स्थायी रूप से रहने वाले अभ्यर्थियों के लिए	162.6 सेंटीमीटर
(ग)	अन्य अभ्यर्थियों के लिए	167.7 सेंटीमीटर

2	सीना	बिना फुलाए हुए सेंटीमीटर में	फुलाने पर सेंटीमीटर में
(क)	अनुसूचित जनजातियों और पहाड़ी क्षेत्र में स्थायी रूप से रहने वाले अभ्यर्थियों के लिए	76.5 सेंटीमीटर	81.3 सेंटीमीटर
(ख)	अन्य अभ्यर्थियों के लिए	78.5 सेंटीमीटर	83.5 सेंटीमीटर

महिला अभ्यर्थी

	ऊँचाई	सेंटीमीटर में (न्यूनतम)
(क)	अनुसूचित जनजातियों और पहाड़ी क्षेत्र में स्थायी रूप से रहने वाले अभ्यर्थियों के लिए	147.0 सेंटीमीटर
(ख)	अन्य अभ्यर्थियों के लिए	152.0 सेंटीमीटर

सामान्य अनुदेश

1- अन्तिम नियत तिथि व समय के पश्चात् किसी भी स्तर के आवेदन पत्र किसी भी दशा में स्वीकार नहीं किये जायेंगे। अपेक्षित सूचनाओं से रहित तथा ऐसे आवेदन पत्र, जिन पर अभ्यर्थी के फोटो अथवा हस्ताक्षर नहीं होंगे, समय से प्राप्त होने पर भी सरसरी तौर पर निरस्त कर दिए जायेंगे।

2- सभी प्रकार से पूर्ण आवेदन जमा करने की निर्धारित अन्तिम तिथि व समय तक अभ्यर्थी द्वारा 'ONLINE APPLICATION' प्रक्रिया में SUBMIT बटन को CLICK करना अनिवार्य है। अभ्यर्थी अपने द्वारा भरी गयी सूचनाओं का प्रिन्ट प्राप्त कर लें और उसे सुरक्षित रखें, किसी विसंगति की दशा में अभ्यर्थी को उक्त प्रिन्ट आयोग कार्यालय को प्रस्तुत करना होगा अन्यथा अभ्यर्थी का अनुरोध स्वीकार नहीं किया जायेगा।

3- आरक्षण/आयु सीमा में छूट का लाभ चाहने वाले अभ्यर्थी संबंधित आरक्षित श्रेणी के समर्थन में इस विस्तृत विज्ञापन में मुद्रित निर्धारित प्रारूप पर (परिशिष्ट-3) सक्षम अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र प्राप्त कर लें एवं जब उनसे अपेक्षा की जाये तब वे उसे आयोग को प्रस्तुत करें। एक से अधिक आरक्षित श्रेणी/आयु सीमा में छूट का दावा करने वाले अभ्यर्थियों को केवल एक छूट, जो अधिक लाभकारी होगी, दी जायेगी। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अधिक रूप से कमजोर वर्ग, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के आश्रित, दिव्यांगता से ग्रस्त, भूतपूर्व सैनिक, तथा कुशल खिलाड़ियों को जो उ0प्र0 राज्य के मूल निवासी नहीं हैं, उन्हें आरक्षण/आयु सीमा का लाभ अनुमन्य नहीं है। महिला अभ्यर्थियों के मामले में पिता पक्ष से निर्गत जाति प्रमाण-पत्र ही मान्य होंगे।

4- आयोग अभ्यर्थियों को उनकी पात्रता के सम्बन्ध में कोई परामर्श नहीं देते हैं, इसलिए उन्हें विज्ञापन का सावधानी पूर्वक अध्ययन करना चाहिये और तभी आवेदन करें जब सन्तुष्ट हो जायें कि वे विज्ञापन की शर्तों के अनुसार अर्ह हैं। पद के लिए वांछित सभी अर्हताएं आवेदन पत्र स्वीकार किये जाने की अंतिम तिथि तक अवश्य धारित करनी चाहिए।

5- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के आश्रितों की श्रेणी में केवल पुत्र, पुत्री तथा पौत्र (पुत्र का पुत्र/पुत्री का पुत्र) एवं पौत्रियाँ (पुत्र की पुत्री/पुत्री की पुत्री, विवाहित/अविवाहित) ही आते हैं। इस श्रेणी के अभ्यर्थी आरक्षण विषयक प्रमाण-पत्र शासनादेश संख्या-453/79-वी-1-15-1(का) 14-2015, दिनांक 07.04.2015 द्वारा निर्धारित प्रारूप पर जिलाधिकारी से प्राप्त कर प्रस्तुत करें।

6- किसी कदाचार, किसी महत्वपूर्ण सूचना को छिपाने, अभियोजन/आपराधिक वाद लम्बित होने, दोष सिद्ध होने, एक से अधिक जीवित पति या पत्नी के होने, तथ्यों को गलत प्रस्तुत करने तथा अभ्यर्थन/चयन के सम्बन्ध में सिफारिश करने आदि कृत्यों में लिप्त पाये जाने पर अभ्यर्थन निरस्त करने तथा आयोग की प्रश्नगत परीक्षा व आगामी परीक्षाओं एवं चयनों से प्रतिवारित (Debar) करने का अधिकार आयोग को होगा।

7- यदि अभ्यर्थी को आन-लाइन आवेदन में कोई कठिनाई हो रही है तो दूरभाष द्वारा अथवा Website पर "Contact us" से अपनी कठिनाई/समस्या का हल प्राप्त कर सकते हैं।

8- फोटो व हस्ताक्षर स्कैन करके अपलोड करने की प्रक्रिया परिशिष्ट-1 में दी गई है। प्रारम्भिक परीक्षा हेतु जिलों की सूची परिशिष्ट-2 पर तथा आरक्षण सम्बन्धी प्रमाण पत्रों का प्रारूप परिशिष्ट-3 पर उपलब्ध है। इसी प्रकार परीक्षा की योजना परिशिष्ट-4 पर, प्रारम्भिक परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम परिशिष्ट-5 पर तथा सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा मुख्य परीक्षा हेतु अनुदेश एवं पाठ्यक्रम परिशिष्ट-6 पर उपलब्ध है। सहायक वन संरक्षक/क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा हेतु मुख्य (लिखित) परीक्षा की परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम क्रमशः परिशिष्ट-7 एवं 8 पर उपलब्ध है।

Detailed Application Form

At the top of the page there is a Declaration. The candidates are advised to go through the contents of the Declaration carefully. Candidate has the option either to agree or disagree with the contents of Declaration by clicking on 'I agree' or 'I do not agree' buttons. In case the candidate opts to disagree, the application will be dropped, and the procedure will be terminated. Accepting to agree only will submit the candidate's On-line Application.

Notification Details:

This section shows information relevant to notification.

Personal Details:

This section shows information about candidate's personal details i.e. Registration Number, Candidate's Name, Father/Husband's Name, Gender, Date of Birth, UP domicile, Category, Marital Status, Email-ID and Contact Number.

Other Details of Candidate

Other details of candidate shows the information details about UP Freedom Fighter, Ex Army, service duration and your physical deformity.

Education & Experience Details

It shows your educational and experience details.

Candidate Address, Photo & Signature details

Here you will see your complete communication address and photo with your signature.

Declaration Segment

At the bottom of the page there is a 'Declaration' for the candidates. Candidates are advised to go through the contents of the Declaration carefully. After filling all above particulars there is provision for preview your detail before final submission of application form on clicking on "Preview" button. Preview page will display all facts/particulars that you have mentioned on entry time if you are sure with filled details then click on "Submit" button to finally push data into server with successfully submission report that you can print. Otherwise using "Back" button option you can modify your details.

(CANDIDATES ARE ADVISED TO TAKE A PRINT OF THIS PAGE BY CLICKING ON THE "PRINT" OPTION AVAILABLE)

For Other Information:

For other information candidates are advised to select desired Option in 'Home Page' of Commission's website <http://uppsc.up.nic.in>

CANDIDATE SEGMENT

NOTIFICATIONS/ADVTS.

ALL Notifications / Advertisements

ONLINE FORM SUBMISSION

1. Candidate Registration (FIRST STAGE)

2. Fee Deposition / Reconciliation (SECOND STAGE)

3. Submit Application Form (THIRD STAGE)

APPLICATION FORM STATUS

Update your transaction ID by Double Verification mode

View Application Status

List of Applications Having Photo related Objections

Print Duplicate Registration Slip

Print Detailed Application Form

EXAMINATION SEGMENT

Print Address Slip for sending Documents to Commission [Only for Direct Recruitment]

DOWNLOAD SEGMENT

Download Admit Card

Download Interview Letter

Download Syllabus

Know Your Registration No.

Click here to view Key Answer Sheet

Regarding Application:

1- On clicking "View Application status" option in candidate Segment page you can see current status of candidate.

2- On clicking "Result" option in candidate Segment page candidate can see result status of periodically.

3- "Interview/Exam Schedule" option in candidate Segment page candidate can see interview and examination schedule details periodically.

4- On clicking "Key Answer Sheet" candidate can download key answer sheet.

5- On clicking "Admit Card/Hall Ticket" candidate can download their Admit Card using with some basic credential of candidate.

6- On clicking "List of Rejected Candidate" candidate can view rejected candidate list.

7- On clicking "Syllabus" candidate can view syllabus of particular examination.

[Candidates applying on-line need NOT send hard copy of the On-line Application filled by them on-line or any other document/ certificate/testimonial to the Uttar Pradesh Public Service Commission. However they are advised to take printout of the On-line Application and retain it for further communication with the UPPSC.] [The Candidates applying for the examination should ensure that they fulfill all eligibility conditions for admission to examination. Their admission at all the stages of the examination will be purely provisional subject to satisfying the prescribed eligibility conditions]. UPPSC takes up verification of eligibility conditions with reference to original documents at subsequent stages of examination process.

LAST DATE FOR RECEIPT OF APPLICATIONS:

On-line Application process must be completed (including filling up of Part-I, Part-II and Part-III of the Form) before last date of form submission according to advertisement, after which the Web. Link will be disabled.

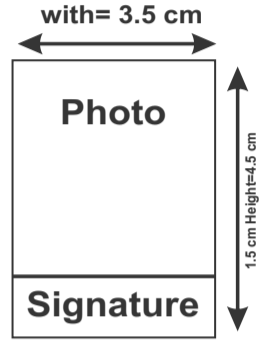
Cont..

परिशिष्ट - 1

**The Procedure relating to upload Photo & Signature:-
Guide Lines for Scanning Photograph with Signature**

1. Paste the Photo on any white paper as per the above required dimensions. Sign in the Signature Space provided. Ensure that the signature is within the box.
2. Scan the above required size containing photograph and signature. Please do not scan the complete page.
3. The entire image (of size 3.5 cm by 6.0 cm) consisting of the photo along with the signature is required to be scanned, and stored in*.jpg, .jpeg, .gif, .tif, .png format on local machine.
4. Ensure that the size of the scanned image is not more than 50 KB.
5. If the size of the file is more than 50 KB, then adjust the settings of the scanner such as the DPI resolution, no. colours etc., during the process of scanning.
6. The application has to sign in full in the box provided. Since the signature is proof of identify, it must be genuine and in full; initials are not sufficient. Signature in CAPITAL LETTERS is not permitted.
7. The signature must be signed only by the application and not by any other person.
8. The signature will be used to put on the Hall Ticket and wherever necessary. If the Applicant's signature on answer script, at the time of the examination, does not match the signature on the Hall Ticket, the applicant will be disqualified.

Sample Image & Signature:-



परिशिष्ट - 2

जिन नगरों में प्रारम्भिक परीक्षा आयोजित की जायेगी वे निम्न प्रकार हैं:-

आगरा, अयोध्या, आजमगढ़, बाराबंकी, बरेली, गाजियाबाद, गोरखपुर, जौनपुर, झांसी, कानपुर नगर, लखनऊ, मथुरा, मेरठ, मिर्जापुर, मुरादाबाद, प्रयागराज, रायबरेली, सीतापुर और वाराणसी।

परिशिष्ट-3

उ.प्र. की अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन जाति के लिए जाति प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी.....सुपुत्र/सुपुत्री श्री.....निवासी ग्राम..... तहसील..... नगर.....जिला.....उत्तर प्रदेश राज्य की.....जाति के व्यक्ति है जिसे संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 (जैसा कि समय-समय पर संशोधित हुआ) / संविधान (अनुसूचित जनजाति, उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967 के अनुसार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दी गई है। श्री/श्रीमती/कुमारी.....तथा अथवा उनका परिवार उत्तर प्रदेश के.....ग्राम.....तहसील.....नगर.....जिला.....में सामान्यतया रहता है।

स्थान.....हस्ताक्षर.....

दिनांक.....पूरा नाम.....

मुहर.....पद का नाम.....

जिलाधिकारी/अतिरिक्त जिलाधिकारी/सिटी मजिस्ट्रेट/परगना मजिस्ट्रेट/तहसीलदार/ अन्य वेतन भोगी मजिस्ट्रेट यदि कोई हो/ जिला समाज कल्याण अधिकारी

उत्तर प्रदेश के अन्य पिछड़े वर्ग के लिए जाति प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी.....सुपुत्र/सुपुत्री श्री.....निवासी ग्राम..... तहसील.....नगर.....जिला.....उत्तर प्रदेश राज्य की.....पिछड़ी जाति के व्यक्ति हैं। यह जाति उत्तर प्रदेश लोक सेवा (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के लिये आरक्षण) अधिनियम, 1994 (यथासंशोधित) की अनुसूची एक के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी.....पूर्वोक्त अधिनियम, 1994 (यथासंशोधित) की अनुसूची-दो (जैसा कि उत्तर प्रदेश लोक सेवा) (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिये आरक्षण) (संशोधन) अधिनियम, 2001 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है एवं जो उत्तर प्रदेश लोक सेवा (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिये आरक्षण) (संशोधन) अधिनियम, 2002 द्वारा संशोधित की गयी है, से आच्छादित नहीं है। इनके माता-पिता की निरंतर तीन वर्ष की अवधि के लिये सकल वार्षिक आय आठ लाख रुपये या इससे अधिक नहीं है तथा इनके पास धनकर अधिनियम, 1957 में यथा विहित छूट सीमा से अधिक सम्पत्ति भी नहीं है।

श्री/श्रीमती/कुमारी.....तथा/अथवा उनका परिवार उत्तर प्रदेश के ग्राम.....तहसील.....नगर.....जिला.....में सामान्यतया रहता है।

स्थान.....हस्ताक्षर.....

दिनांक.....पूरा नाम.....

मुहर.....पद का नाम.....

जिलाधिकारी/अतिरिक्त जिलाधिकारी/सिटी मजिस्ट्रेट/परगना मजिस्ट्रेट/तहसीलदार।

(प्रपत्र-I)

उत्तर प्रदेश सरकार

कार्यालय का नाम.....

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला आय एवं परिसम्पत्ति प्रमाण पत्र प्रमाण-पत्र संख्या.....दिनांक.....

वित्तीय वर्ष.....के लिए मान्य

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी.....

पुत्र/पति/पुत्री.....ग्राम/कस्बा.....

पोस्ट ऑफिस.....थाना.....

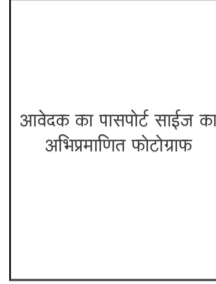
तहसील.....जिला.....राज्य.....

पिन कोड.....के स्थायी निवासी है, जिनका फोटोग्राफ नीचे अभिप्रमाणित है, आर्थिक रूप से

कमजोर वर्ग के सदस्य है, क्योंकि वित्तीय वर्ष.....में इनके परिवार की कुल वार्षिक आय 8 लाख (आठ लाख रुपये मात्र) से कम है। इनके परिवार के स्वामित्व में निम्नलिखित में से कोई भी परिसम्पत्ति नहीं है:-

- 5(पाँच) एकड़ कृषि योग्य भूमि अथवा इससे ऊपर।
- एक हजार वर्ग फिट अथवा इससे अधिक क्षेत्रफल का प्लैट।
- अधिसूचित नगरपालिका के अन्तर्गत 100 वर्ग गज अथवा इससे अधिक का आवासीय भूखण्ड
- अधिसूचित नगरपालिका से इतर 200 वर्ग गज अथवा इससे अधिक का आवासीय भूखण्ड

2. श्री/श्रीमती/कुमारी.....जाति.....के सदस्य है जो अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों के रूप में अधिसूचित नहीं है।



हस्ताक्षर.....(कार्यालय का मुहर सहित)

पूरा नाम.....

पद नाम.....

जिलाधिकारी/अतिरिक्त जिलाधिकारी/सिटी मजिस्ट्रेट/परगना मजिस्ट्रेट/तहसीलदार।

(प्रपत्र-II)

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लाभार्थ स्वयं घोषणा पत्र

स्वयं घोषणा पत्र

मैं.....पुत्र/पुत्री/पत्नी.....

ग्राम/कस्बा.....पोस्ट ऑफिस.....

थाना.....ब्लाक.....तहसील.....

जिला.....राज्य.....ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के प्रमाण पत्र हेतु आवेदन दिया है, एतद् द्वारा घोषणा करता/करती हूँ:-

1. मैं.....जाति से सम्बन्ध रखता/रखती हूँ जो उत्तर प्रदेश हेतु अधिसूचित अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की सूची में सूचीबद्ध नहीं है।
2. मेरे परिवार की कुल श्रोतों (वेतन, कृषि, व्यवसाय, पेशा इत्यादि) से कुल वार्षिक आय रु.....(शब्दों में) है।
3. मेरे परिवार के पास उल्लिखित आय के सिवाय अथवा इसके अतिरिक्त अन्यत्र कोई परिसम्पत्ति नहीं है।

अथवा

कई स्थानों पर स्थित परिसम्पत्तियों को जोड़ने के पश्चात भी मैं (नाम).....आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के दायरे में आता/आती हूँ।

4. मैं घोषणा करता/करती हूँ कि मेरे परिवार की सभी परिसम्पत्तियों को जोड़ने के पश्चात् निम्नलिखित में से किसी भी सीमा से अधिक नहीं है।
- I. 5(पाँच) एकड़ कृषि योग्य भूमि अथवा इससे ऊपर।
- II. एक हजार वर्ग फिट अथवा इससे अधिक क्षेत्रफल का प्लैट।
- III. अधिसूचित नगरपालिका के अन्तर्गत 100 वर्ग गज अथवा इससे अधिक का आवासीय भूखण्ड
- IV. अधिसूचित नगरपालिका से इतर 200 वर्ग गज अथवा इससे अधिक का आवासीय भूखण्ड

मैं प्रमाणित करता/करती हूँ कि मेरे द्वारा उपरोक्त जानकारी मेरे ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य है और मैं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आरक्षण सुविधा प्राप्त करने हेतु पात्रता धारण करता/करती हूँ। यदि मेरे द्वारा दी गई जानकारी असत्य/गलत पायी जाती है तो मैं पूर्ण रूप में जानता हूँ/जानती हूँ कि इस आवेदन पत्र के आधार पर दिये गये प्रमाण पत्र के द्वारा शैक्षणिक संस्थान में लिया गया प्रवेश/लोक सेवाओं एवं पदों में प्राप्त की गई नियुक्ति निरस्त कर दी जायेगी/कर दिया जायेगा अथवा इस प्रमाण पत्र के आधार पर कोई अन्य सुविधा/लाभ प्राप्त किया गया है उससे भी वंचित किया जा सकेगा और इस सम्बन्ध में विधि एवं नियमों के अधीन मेरे विरुद्ध की जाने वाली कार्यवाही के लिये मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

नोट: जो लागू नहीं हो उसे काट दें।

आवेदक/आवेदिका का हस्ताक्षर तथा पूरा नाम।

स्थान :-
दिनांक :-

उ.प्र. के दिव्यांगों के लिये प्रमाण-पत्र

CERTIFICATE FOR PHYSICALLY HANDICAP OF U.P.

NAME & ADDRESS OF THE INSTITUTE/HOSPITAL

Certificate No.....Date

DISABILITY CERTIFICATE

This is certified that Shri/Smt Kum..... son/wife/daughter of Shri..... age..... sex.....identification mark (S).....is suffering from permanent disability of following category:

A. Locomotor or cerebral palsy:

(i) BL-Both legs affected but not arms.

(ii) BA-Both arms affected

(a) Impaired reach (b) Weakness of grip

(iii) BLA-Both legs and both arms affected

(iv) OL-One leg affected (right or left)

(a) Impaired reach (b) Weakness of grip (c) Ataxic

(v) OA-One arm affected

(a) Impaired reach (b) Weakness of grip (c) Ataxic

(vi) BH-Stiff back and hips (Cannot sit or stoop)

(vii) MW-Muscular weakness and limited physical endurance.

B. Blindness or Low Vision:

(i) B-Blind

(ii) PB-Partialy Blind

C. Hearing impairment:

(i) D-Deaf

(ii) PD-Partialy Deaf

(Delete the category whichever is not applicable)

2. This condition is progressive/non-progressive/likely to improve/not likely to improve. Re-assessn of this case is not recommended/is recommended after a period of..... year..... months.

3. Percentage of disability in his/her case is.....percent.

4. Sh./Smt./Kum.meets the following physical requirements discharge of his/her duties:

(i) F-can perform work by manipulating with fingers.	Yes/No
(ii) PP-can perform work by pulling and pushing.	Yes/No
(iii) L-can perform work by lifting.	Yes/No
(iv) KC-can perform work by kneeling and crouching.	Yes/No
(v) B-can perform work by bending	Yes/No
(vi) S-can perform work by sitting.	Yes/No
(vii) ST-can perform work by standing.	Yes/No
(viii) W-can perform work by walking	Yes/No
(ix) SE-can perform work by seeing.	Yes/No
(x) H-can perform work by hearing/speaking.	Yes/No
(xi) RW-can perform work by reading and writing.	Yes/No

(Dr.) (Dr.) (Dr.)

Member Medical Board Member Medical Board Chairperson Medical Board

Countersigned by the Medical Superintendent/CMO/HQ Hospital (with seal)

* Strike out which is not applicable.

उत्तर प्रदेश लोक सेवा (शारीरिक रूप से विकलांग, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के आश्रितों और भूतपूर्व सैनिकों के लिए आरक्षण) अधिनियम, 1993 (यथासंशोधित) के अनुसार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के आश्रित के लिए प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी.....

निवासी..... ग्राम..... तहसील.....

नगर..... जिला..... उत्तर प्रदेश लोक सेवा (शारीरिक रूप से विकलांग, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के आश्रित और भूतपूर्व सैनिक के लिए आरक्षण) अधिनियम 1993 के अनुसार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं और श्री/श्रीमती/कुमारी (आश्रित) पुत्र/पुत्री/पौत्र (पुत्र का पुत्र या पुत्री का पुत्र) पौत्री (पुत्र की पुत्री या पुत्री की पुत्री) (विवाहित अथवा अविवाहित) उपरोक्त अधिनियम 1993 (यथा संशोधित) के प्रावधानों के अनुसार उक्त श्री/श्रीमती (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) के आश्रित हैं।

स्थान..... हस्ताक्षर.....

दिनांक..... पूरा नाम.....

मुहर.....

जिलाधिकारी.....

सील.....

कुशल खिलाड़ियों के लिये प्रमाण-पत्र जो उ.प्र. के मूल निवासी हैं शासनादेश संख्या-22/21/1983-कार्मिक-2 दिनांक 28 नवम्बर, 1985

प्रमाण-पत्र के फार्म - 1 से 4

प्रारूप - 1

(मान्यता प्राप्त क्रीडा/खेल में अपने देश की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी के लिये) सम्बन्धित खेल की राष्ट्रीय फेडरेशन/राष्ट्रीय एसोसिएशन का नाम..... राज्य सरकार की सेवाओं/पदों पर नियुक्ति के लिए कुशल खिलाड़ियों के लिए प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी..... आत्मज/पत्नी/आत्मजा श्री..... निवासी..... पूरा पता..... ने दिनांक..... से दिनांक..... तक..... (स्थान का नाम) में आयोजित..... (क्रीडा/खेल-कूद का नाम) की प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में देश की ओर से भाग लिया। उनके टीम के द्वारा उक्त प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में..... स्थान प्राप्त किया गया। यह प्रमाण-पत्र राष्ट्रीय फेडरेशन/राष्ट्रीय एसोसिएशन/(यहाँ संस्था का नाम दिया जाये)..... में उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर दिया गया है।

स्थान..... हस्ताक्षर.....

दिनांक..... नाम.....

पद.....

संस्था का नाम.....

मुहर.....

नोट : यह प्रमाण-पत्र नेशनल फेडरेशन / नेशनल एसोसिएशन के सचिव द्वारा व्यक्तिगत रूप से किये गये हस्ताक्षर होने पर ही मान्य होगा।

प्रारूप - 2

(मान्यता प्राप्त क्रीडा/खेल में अपने प्रदेश की ओर से राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी के लिये) (सम्बन्धित खेल की प्रदेशीय एसोसिएशन का नाम)..... राज्य सरकार की सेवाओं/पदों पर नियुक्ति के लिए कुशल खिलाड़ियों के लिये प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी..... आत्मज/पत्नी/आत्मजा श्री..... निवासी (पूरा पता)..... ने दिनांक..... से दिनांक..... तक..... में (क्रीडा/खेल-कूद का नाम) की प्रतियोगिता (दूर्नामेन्ट स्थान का नाम)..... आयोजित राष्ट्रीय..... में (क्रीडा/खेल-कूद का नाम) की प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में प्रदेश की ओर से भाग लिया। उनके टीम के द्वारा उक्त प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में..... स्थान प्राप्त किया गया। यह प्रमाण-पत्र..... (प्रदेशीय संघ का नाम) में उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर दिया गया है।

स्थान..... हस्ताक्षर.....

दिनांक..... नाम.....

पद.....

संस्था का नाम.....

पता.....

मुहर.....

नोट : यह प्रमाण-पत्र प्रदेशीय खेल-कूद संघ के सचिव द्वारा व्यक्तिगत रूप से किये गये हस्ताक्षर होने पर ही मान्य होगा।

प्रारूप- 3

(मान्यता प्राप्त क्रीडा/खेल में अपने विश्वविद्यालय की ओर से अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी के लिये)

विश्वविद्यालय का नाम.....राज्य स्तर की सेवाओं/पदों पर नियुक्त के लिये कुशल खिलाड़ियों के लिए प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी..... आत्मज/पत्नी/आत्मजा श्री..... निवास (पूरा नाम)..... विश्वविद्यालय की कक्षा..... के विद्यार्थी ने दिनांक..... से दिनांक..... तक..... (स्थान का नाम) में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय..... (क्रीडा/खेल-कूद का नाम) प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में..... विश्वविद्यालय की ओर से भाग लिया। उनके टीम के द्वारा उक्त प्रतियोगिता / दूर्नामेन्ट में..... स्थान प्राप्त किया गया। यह प्रमाण-पत्र डीन आफ स्पोर्ट्स अथवा इंचार्ज खेल कूद..... विश्वविद्यालय में उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर दिया गया है।

स्थान..... हस्ताक्षर.....

दिनांक..... नाम.....

पद.....

संस्था का नाम.....

मुहर.....

नोट : यह प्रमाण-पत्र विश्वविद्यालय के डीन आफ स्पोर्ट्स या इंचार्ज खेल-कूद द्वारा व्यक्तिगत रूप से किये गये हस्ताक्षर होने पर ही मान्य होगा।

प्रारूप - 4

(मान्यता प्राप्त क्रीडा/खेल में अपने स्कूल की ओर से राष्ट्रीय खेल-कूद में भाग लेने वाले खिलाड़ी के लिये)

डाररेक्ट्रेट आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्स/निदेशक, शिक्षा, उत्तर प्रदेश..... राज्य स्तर की सेवाओं/पदों पर नियुक्ति के लिये कुशल खिलाड़ियों के लिये प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी..... आत्मज/पत्नी/आत्मजा श्री..... निवास (पूरा नाम)..... में..... स्कूल में कक्षा..... के विद्यार्थी ने दिनांक..... से दिनांक..... तक..... (स्थान का नाम) में आयोजित स्कूलों के नेशनल गेम्स की..... (क्रीडा/खेल-कूद का नाम) प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में..... स्कूल की ओर से भाग लिया। उनके टीम के द्वारा उक्त प्रतियोगिता/दूर्नामेन्ट में..... स्थान प्राप्त किया गया। यह प्रमाण-पत्र डायरेक्ट्रेट आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्स/शिक्षा में उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर दिया गया है।

स्थान..... हस्ताक्षर.....

दिनांक..... नाम.....

पद.....

संस्था का नाम.....

मुहर.....

नोट : यह प्रमाण-पत्र निदेशक / या अतिरिक्त/संयुक्त या उपनिदेशक डायरेक्ट्रेट ऑफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्स/शिक्षा द्वारा व्यक्तिगत रूप से हस्ताक्षर होने पर मान्य होगा।

परिशिष्ट - 4

परीक्षा की योजना

सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा-2020 तथा सहायक वन संरक्षक/क्षेत्रीय वन अधिकारी परीक्षा - 2020 हेतु प्रतियोगिता परीक्षा में क्रमवार तीन स्तर सम्मिलित हैं यथा : (1) प्रारम्भिक परीक्षा (वस्तुनिष्ठ व बहुविकल्पी प्रकार की), (2) मुख्य परीक्षा (परम्परागत प्रकार की अर्थात् लिखित परीक्षा) (3) मौखिक परीक्षा (व्यक्तित्व परीक्षा)

प्रारम्भिक परीक्षा

सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा तथा सहायक वन संरक्षक/ क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा हेतु प्रारम्भिक परीक्षा दो अनिवार्य प्रश्नपत्रों की होगी। जिनके उत्तर पत्रक ओ.एम.आर. सीट के रूप में होंगे। सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा तथा सहायक वन संरक्षक/ क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा हेतु प्रारम्भिक परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम इस विज्ञापन के परिशिष्ट - 5 में उल्लिखित है। प्रत्येक प्रश्न-पत्र 200 अंकों के तथा दो - दो घण्टे अवधि के होंगे। दोनों प्रश्न पत्र वस्तुनिष्ठ व बहुविकल्पीय प्रकार के होंगे जिनमें क्रमशः 150 व 100 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न पत्र पूर्वाह्न 9:30 बजे से 11:30 बजे तक तथा द्वितीय प्रश्नपत्र अपराह्न 2:30 बजे से सायं 4:30 बजे तक।

नोट: (1) प्रारम्भिक परीक्षा का द्वितीय प्रश्नपत्र अर्हकारी होगा जिसमें न्यूनतम 33% अंक प्राप्त किया जाना अनिवार्य होगा। (2) मूल्यांकन के उद्देश्य से अभ्यर्थियों को प्रारम्भिक परीक्षा के दोनों प्रश्नपत्रों में सम्मिलित होना बाध्यकारी है। अतएव यदि कोई अभ्यर्थी दोनों प्रश्नपत्रों में सम्मिलित नहीं होता है तो वह अनर्ह (disqualify) हो जायेगा। (3) अभ्यर्थियों के योग्यताक्रम (Merit) का निर्धारण उनके प्रारम्भिक परीक्षा के प्रथम प्रश्नपत्र में प्राप्त अंकों के आधार पर किया जायेगा।

2. सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा हेतु मुख्य (लिखित) परीक्षा के लिए निर्धारित विषय : मुख्य परीक्षा में निम्नलिखित अनिवार्य तथा वैकल्पिक विषय होंगे जिनका पाठ्यक्रम इस विज्ञापन के परिशिष्ट- 6 में उल्लिखित है। अभ्यर्थियों को मुख्य परीक्षा हेतु वैकल्पिक विषयों की सूची में से कोई एक विषय चुनना होगा जिसके दो प्रश्न-पत्र होंगे।

(अ) अनिवार्य विषय	
1. सामान्य हिन्दी	150 अंक
2. निबन्ध	150 अंक
3. सामान्य अध्ययन, प्रथम प्रश्न-पत्र	200 अंक
4. सामान्य अध्ययन, द्वितीय प्रश्न-पत्र	200 अंक
5. सामान्य अध्ययन, तृतीय प्रश्न-पत्र	200 अंक
6. सामान्य अध्ययन, चतुर्थ प्रश्न पत्र	200 अंक

अनिवार्य विषयो यथा सामान्य हिन्दी, निबन्ध तथा सामान्य अध्ययन-प्रथम प्रश्न पत्र, द्वितीय प्रश्न पत्र, तृतीय प्रश्न - पत्र एवं चतुर्थ प्रश्न- पत्र परम्परागत (Conventioal) प्रकार के होंगे। इन प्रश्न-पत्रों के हल करने की अवधि 3 घन्टे होगी। इसके अतिरिक्त वैकल्पिक विषय के प्रश्न-पत्रों हेतु 3 घन्टे का समय निर्धारित है। वैकल्पिक विषय का प्रत्येक प्रश्न पत्र 200 अंको का होगा।

नोट : (1) 3 घण्टे वाले प्रश्नपत्र का परीक्षा समय पूर्वान्ह 9.30 बजे से 12.30 बजे तक तथा अपराह्न 2 बजे से सायं 5 बजे तक होगा। अभ्यर्थी से सामान्य हिन्दी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र में न्यूनतम अंक प्राप्त करने की अपेक्षा की जायेगी जो यथा स्थिति, शासन या आयोग द्वारा अवधारित किये जायेंगे। वैकल्पिक विषय के सभी प्रश्न-पत्रों में 2 खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड में चार-चार प्रश्न होंगे। अभ्यर्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक खण्ड से कम से कम दो-दो प्रश्न हल करना आवश्यक है।

(ब) वैकल्पिक विषय

विषय	विषय	विषय
1. कृषि	14. पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान	27. वाणिज्य एवं लेखांकन
2. प्राणि विज्ञान	15. सांख्यिकी	28. लोक प्रशासन
3. रसायन विज्ञान	16. प्रबन्ध	29. चिकित्सा विज्ञान
4. भौतिक विज्ञान	17. राजनीति विज्ञान एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	
5. गणित	18. इतिहास	
6. भूगोल	19. नृ विज्ञान	
7. अर्थशास्त्र	20. सिविल अभियान्त्रिकी	
8. समाजशास्त्र	21. यान्त्रिक अभियान्त्रिकी	
9. दर्शनशास्त्र	22. विद्युत अभियान्त्रिकी	
10. भू-विज्ञान	23. अंग्रेजी साहित्य	
11. मनोविज्ञान	24. उर्दू साहित्य	
12. वनस्पति विज्ञान	25. हिन्दी साहित्य	
13. विधि	26. संस्कृत साहित्य	

3. व्यक्तित्व परीक्षा/मौखिक परीक्षा (कुल अंक 100) : यह परीक्षा अभ्यर्थियों की सामान्य जागरूकता, बुद्धि, चरित्र, अभिव्यक्ति की क्षमता, व्यक्तित्व एवं सेवा के लिए सामान्य उपयुक्तता को दृष्टि में रखते हुये सामान्य अभिरूचि के विषयों से सम्बन्धित होगी।

परिशिष्ट-5

सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा तथा सहायक वन संरक्षक/ क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा दोनों से सम्बन्धित प्रारम्भिक परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम प्रश्नपत्र-1 सामान्य अध्ययन-1

अवधि-दो घण्टे
अंक - 200

Cont....

– राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनायें
– भारत का इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
– भारत एवं विश्व का भूगोल— भारत एवं विश्व का भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल
– भारतीय राजनीति एवं शासन— संविधान, राजनीतिक व्यवस्था, पंचायती राज, लोकनीति, अधिकारिक मुद्दे (राइट्स इश्यूज) आदि
– आर्थिक एवं सामाजिक विकास—सतत विकास, गरीबी, अन्तर्विष्ट जनसांख्यिकीय, सामाजिक क्षेत्र के इनिशियेटिव आदि
– पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी सम्बन्धी सामान्य विषय, जैव विविधता एवं जलवायु परिवर्तन इस विषय में विषय विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है
– सामान्य विज्ञान
– **राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनायें:** राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाओं पर अभ्यर्थियों को जानकारी रखनी होगी।
– **भारत का इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन:** इतिहास के अन्तर्गत भारतीय इतिहास के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्षों की व्यापक जानकारी पर विशेष ध्यान देना होगा। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर अभ्यर्थियों से स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रकृति तथा विशेषता, राष्ट्रवाद का अभ्युदय तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बारे में सामान्य जानकारी अपेक्षित है।
– **भारत एवं विश्व का भूगोल:** भारत एवं विश्व का भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल: विश्व भूगोल में विषय की केवल सामान्य जानकारी की परख होगी। भारत का भूगोल के अन्तर्गत देश के भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल से सम्बन्धित प्रश्न होंगे।
– **भारतीय राजनीति एवं शासन—संविधान, राजनीतिक व्यवस्था, पंचायती राज, लोकनीति, आधिकारिक प्रकरण आदि:** भारतीय राज्य व्यवस्था, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति के अन्तर्गत देश के पंचायती राज तथा सामुदायिक विकास सहित राजनीतिक प्रणाली के ज्ञान तथा भारत की आर्थिक नीति के व्यापक लक्षणों एवं भारतीय संस्कृति की जानकारी पर प्रश्न होंगे।
– **आर्थिक एवं सामाजिक विकास— सतत विकास, गरीबी अन्तर्विष्ट जनसांख्यिकीय, सामाजिक क्षेत्र के इनिशियेटिव आदि:** अभ्यर्थियों की जानकारी का परीक्षण जनसंख्या, पर्यावरण तथा नगरीकरण की समस्याओं तथा उनके सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में किया जायेगा।
– **पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी सम्बन्धी सामान्य विषय जैव विविधता एवं जलवायु परिवर्तन:** इस विषय में विषय विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है। अभ्यर्थियों से विषय की सामान्य जानकारी अपेक्षित है।
– **सामान्य विज्ञान:** सामान्य विज्ञान के प्रश्न दैनिक अनुभव तथा प्रेक्षण से सम्बन्धित विषयों सहित विज्ञान के सामान्य परिबोध एवं जानकारी पर आधारित होंगे, जिसकी किसी भी सुशिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जा सकती है, जिसने वैज्ञानिक विषयों का विशेष अध्ययन नहीं किया है।
नोट: अभ्यर्थियों से यह अपेक्षित होगा कि उत्तर प्रदेश के विशेष परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त विषयों का उन्हें सामान्य परिचय हो।

प्रश्नपत्र-2
सामान्य अध्ययन-II

अवधि—दो घण्टे
अंक — 200

– काम्प्रिहेन्सन (विस्तारीकरण)
– अन्तर्व्यक्तिक क्षमता जिसमें सम्प्रेषण कौशल भी समाहित होगा।
– तार्किक एवं विश्लेषणात्मक योग्यता।
– निर्णय क्षमता एवं समस्या समाधान।
– सामान्य बौद्धिक योग्यता।
– प्रारम्भिक गणित हाईस्कूल स्तर तक— अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित व सांख्यिकी।
– सामान्य अंग्रेजी हाईस्कूल स्तर तक।
– सामान्य हिन्दी हाईस्कूल स्तर तक।
प्रारम्भिक गणित (हाईस्कूल स्तर तक) के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने वाले विषय

- 1. अंकगणित:**
(1) संख्या पद्धति: प्राकृतिक, पूर्णांक, परिमेय—अपरिमेय एवं वास्तविक संख्यायें, पूर्णांक संख्याओं के विभाजक एवं अविभाज्य पूर्णांक संख्यायें। पूर्णांक संख्याओं का लघुतम समापवर्त्य एवं महत्तम समापवर्त्य तथा उनमें सम्बन्ध।
(2) औसत
(3) अनुपात एवं समानुपात
(4) प्रतिशत
(5) लाभ—हानि
(6) ब्याज— साधारण एवं चक्रवृद्धि
(7) काम तथा समय
(8) चाल, समय तथा दूरी
2. बीजगणित
(1) बहुपद के गुणनखण्ड, बहुपदों का लघुतम समापवर्त्य एवं महत्तम समापवर्त्य एवं उनमें सम्बन्ध, शेषफल प्रमेय, सरल युगपत समीकरण, द्विघात समीकरण
(2) समुच्चय सिद्धान्त: समुच्चय, उप समुच्चय, उचित उपसमुच्चय, रिक्त समुच्चय, समुच्चयों के बीच संक्रियायें (संघ, प्रतिच्छेद, अन्तर, समिमित अन्तर), बेन—आरेख
3. रेखागणित:
(1) त्रिभुज, आयत, वर्ग, समलम्ब चतुर्भुज एवं वृत्त की रचना एवं उनके गुण सम्बन्धी प्रमेय तथा परिमाप एवं उनके क्षेत्रफल,
(2) गोला, समकोणीय वृत्ताकार बेलन, समकोणीय वृत्ताकार शंकु तथा धन के आयतन एवं पृष्ठ क्षेत्रफल।
4. सांख्यिकी: आंकड़ों का संग्रह, आंकड़ों का वर्गीकरण, बारम्बारता, बारम्बारता बंटन, सारणीयन, संचयी बारम्बारता, आंकड़ों का निरूपण, दण्डचार्ट, पाई चार्ट, आयत चित्र, बारम्बारता बहुभुज, संचयी बारम्बारता वक्र, केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप— समान्तर माध्य, माध्यिका एवं बहुलक।

General English Upto Class X Level

1. Comprehension
2. Active Voice and Passive Voice
3. Parts of Speech
4. Transformation of Sentences
5. Direct and Indirect Speech
6. Punctuation and Spellings

7. Words meanings
8. Vocabulary & Usage
9. Idioms and Phrases
10. Fill in the Blanks

सामान्य हिन्दी (हाईस्कूल स्तर तक) के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने वाले विषय

- (1) हिन्दी वर्णमाला, विराम चिन्ह
- (2) शब्द रचना, वाक्य रचना, अर्थ
- (3) शब्द—रूप
- (4) संधि, समास
- (5) क्रियायें
- (6) अनेकार्थी शब्द
- (7) विलोम शब्द
- (8) पर्यायवाची शब्द
- (9) मुहावरे एवं लोकोक्तियां
- (10) तत्सम एवं तद्भव, देशज, विदेशी (शब्द भंडार)
- (11) वर्तनी
- (12) अर्थबोध
- (13) हिन्दी भाषा के प्रयोग में होने वाली अशुद्धियाँ
- (14) उ०प्र० की मुख्य बोलियाँ

परिशिष्ट-6

सम्मिलित राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा की मुख्य (लिखित) परीक्षा हेतु निर्देश तथा पाठ्यक्रम

1. आयोग प्रवेश पत्र के बिना किसी भी अभ्यर्थी को मुख्य (लिखित) परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं देंगे। किसी भी अभ्यर्थी के परीक्षा में प्रवेश हेतु अर्हता/ पात्रता के सम्बन्ध में आयोग का निर्णय अंतिम होगा। 2. अभ्यर्थियों को सचेत किया जाता है कि उत्तर पुस्तिका में केवल निर्धारित स्थान पर ही अपना अनुक्रमांक लिखें अन्यथा दण्डस्वरूप उनके अंकों में कटौती की जायेगी। अभ्यर्थी उत्तर पुस्तिका में कहीं भी अपना नाम न लिखें अन्यथा उन्हें परीक्षा के लिये अनर्ह घोषित किया जा सकता है। 3. यदि अभ्यर्थी की हस्तलिपि अस्पष्ट/अपठनीय है तो उसके प्राप्तियों के कुल योग में से कटौती की जा सकती है। 4. अभ्यर्थी प्रश्न-पत्रों के उत्तर अंग्रेजी रोमन लिपि में अथवा हिन्दी देवनागरी लिपि में अथवा उर्दू फारसी लिपि में लिख सकते हैं परन्तु उन्हें भाषा के प्रश्न-पत्र का उत्तर जब तक की प्रश्न में अन्यथा निर्दिष्ट न हो अनिवार्य रूप से उसी भाषा में लिखना होगा। 5. प्रश्न-पत्र केवल अंग्रेजी लिपि में व हिन्दी देवनागरी लिपि में होंगे। 6. सामान्य अध्ययन एवं वैकल्पिक विषय के प्रश्न-पत्रों का पाठ्यक्रम अन्यथा उल्लिखित विवरण के अतिरिक्त, किसी विश्वविद्यालय से स्नातक डिग्रीधारी अभ्यर्थी से अपेक्षित स्तर का होगा।

सामान्य हिन्दी

(1) दिये हुए गद्य खण्ड का अवबोध एवं प्रश्नोत्तर। (2) संक्षेपण। (3) सरकारी एवं अर्धसरकारी पत्र लेखन, तार लेखन, कार्यालय आदेश, अधिसूचना, परिपत्र (4) शब्द ज्ञान एवं प्रयोग (अ) उपसर्ग एवं प्रत्यय प्रयोग, (ब) विलोम शब्द, (स) वाक्यांश के लिए एक शब्द (द) वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि (5) लोकोक्ति एवं मुहावरे।

निबन्ध

निबन्ध हिन्दी, अंग्रेजी अथवा उर्दू में लिखे जा सकते हैं।

निबन्ध के प्रश्न-पत्र में 3 खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक-एक विषय पर 700 (सात सौ) शब्दों में निबन्ध लिखना होगा। प्रत्येक खण्ड 50. -50 अंकों का होगा। तीनों खण्डों में निम्नलिखित विषयों पर आधारित निबन्ध के प्रश्न होंगे।

खण्ड (क)	खण्ड (ख)	खण्ड (ग)
1. साहित्य और संस्कृति	1. विज्ञान पर्यावरण और प्रौद्योगिकी	1. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
2. सामाजिक क्षेत्र	2. आर्थिक क्षेत्र	2. प्राकृतिक आपदाएं भू-स्खलन भूकम्प, बाढ़, सूखा, आदि।
3. राजनैतिक क्षेत्र	3. कृषि उद्योग एवं व्यापार	3. राष्ट्रीय विकास योजनाएं एवं परियोजनाएं

सामान्य अध्ययन— I

1. भारतीय संस्कृति के इतिहास में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला प्रारूप, साहित्य एवं वास्तुकला के महत्वपूर्ण पहलू शामिल होंगे।
2. आधुनिक भारतीय इतिहास (1757 ई० से 1947 ई० तक)— महत्वपूर्ण घटनाएं, व्यक्तित्व एवं समस्याएं इत्यादि।
3. स्वतंत्रता संग्राम— इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति/उनका योगदान।
4. स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन (1965 ई० तक)।
5. विश्व के इतिहास में 18 वीं सदी से बीसवीं सदी के मध्य तक की घटनाएं जैसे फ्रांसीसी क्रान्ति 1789, औद्योगिक क्रान्ति, विश्व युद्ध, राष्ट्रीय सीमाओं का पुनः सीमांकन, उपनिवेशवाद, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राजनीतिक दर्शन शास्त्र जैसे साम्यवाद, पूँजीवाद, समाजवाद, नाजीवाद, फासीवाद इत्यादि के रूप और समाज पर उनके प्रभाव इत्यादि शामिल होंगे।
6. भारतीय समाज और संस्कृति की मुख्य विशेषताएं।
7. महिलाओं की समाज और महिला—संगठनों में भूमिका, जनसंख्या तथा सम्बद्ध समस्याएं, गरीबी और विकासात्मक विषय, शहरीकरण, उनकी समस्याएं और उनके रक्षोपाय।
8. उदासीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण का अभिप्राय और उनका भारतीय समाज के अर्थ व्यवस्था, राज्य व्यवस्था और समाज संरचना पर प्रभाव।
9. सामाजिक सशक्तीकरण, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता।
10. विश्व के प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों का वितरण— जल, मिट्टियाँ एवं वन, दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में (भारत के विशेष संदर्भ में)।
11. भौतिक भूगोल की प्रमुख विशिष्टताएं— भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी क्रियाएँ, चक्रवात, समुद्री जल धाराएं, पवन एवं हिम सरिताएं।
12. भारत के सामुद्रिक संसाधन एवं उनकी संभाव्यता।
13. मानव प्रवास— विश्व की शरणार्थी समस्या— भारत— उपमहाद्वीप के संदर्भ में।
14. सीमान्त तथा सीमाएं— भारत उप— महाद्वीप के संदर्भ में।
15. जनसंख्या एवं अधिवास— प्रकार एवं प्रतिरूप, नगरीकरण, स्मार्ट नगर एवं स्मार्ट ग्राम।

Cont...

बंधुता। 10. कार्बोटाः उत्पत्ति, चतुष्पादों की उत्पत्ति। 11. पिपिजीः श्वसन, प्रवास, फुफ्फुस मीन। 12. ऐम्फिबियाः चिरडिम्भता तथा शावकीजनन, पैतृत देखभाल। 13. रेप्टीलियाः करोटि—प्रारूप, डाइनोसॉर। 14. ऐवीजः वायवीय अनुकूलन, श्वसन, प्रवास, उड़डयन—विहीन पक्षी। 15. मैमेलियाः दन्त—विन्यास, प्रोटोथीरिया तथा मेटाथीरिया, यूथीरिया के चर्म व्युत्पन्न।

(खण्ड—ब पारिस्थितिकी, व्यवहारिकी, जैव सांख्यिकी तथा आर्थिक प्राणि विज्ञान)

1. पारिस्थितिकी : अजैव तथा जैव कारक, अंतराजातीय तथा आंतरजातीय सम्बंध, पारिस्थितिकीय अनुक्रम, जीवोम के विभिन्न प्रकार, जीवभूरसायन चक्र, खाद्य जाल, ओजोन पर्त तथा जीव मंडल, वायु, जल तथा थल का प्रदूषण। 2. व्यवहारिकी: प्राणि व्यवहार के प्रकार, व्यवहार में हार्मोन तथा फीरोमोन की भूमिका, प्राणि व्यवहार के अध्ययन की विधियां, जैविक लय। 3. जैव सांख्यिकी : प्रतिचयन विधियां, बारंबारता—बंटन तथा केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, मानक विचलन तथा मानक त्रुटि, सहसम्बन्ध तथा समाश्रयण, कार्डी—वर्ग तथा टी—परीक्षण। 4. आर्थिक प्राणि विज्ञान: फसलों (धान, चना और गन्ना) और संग्रहित अनाजों के कीट पीड़क, मौन पालन, रेशमकीट पालन, लाख कीट पालन, मत्स्य पालन और सीप पालन।

प्राणिविज्ञान

(प्रश्नपत्र—I)

(कोशिका जैविकी, आनुवंशिकी, विकास, वर्गीकरण विज्ञान, जैवरसायन, कार्यिकी तथा परिवर्धन जैविकी)

(खण्ड—अ)

(कोशिका जैविकी, आनुवंशिकी, विकास और वर्गीकरण विज्ञान),

1. कोशिका जैविकी— प्राककेन्द्रीकी तथा सुकेन्द्रीकी कोशिकायें, सुकेन्द्रीकी कोशिकाओं की इलेक्ट्रान माईक्रोस्कोपिक संरचना, कोशिका झिल्ली—संरचना, कार्य तथा अभिगमन क्रियाविधियां, कोशिका अंगक—संरचना तथा कार्य, कोशिका कंकाल, कोशिका चक्र कोशिका विभाजन—समसूत्रण तथा अर्धसूत्रण, तर्कु—निर्माण तथा गुणसूत्र गति। 2. आनुवंशिकी : वंशागति की मंडल के नियम, सुकेन्द्रीकी गुणसूत्रों की संरचना, महा गुणसूत्र तथा लेम्बुश गुणसूत्र, सहलग्नता, जीन संकल्पना, जीन मानचित्रण, लिंग गुणसूत्र तथा लिंग निर्धारण, लिंग सहलग्न विशेषक, जीन अन्योन्यक्रिया (सहप्रभाविता, बहु एलील घातक जीन, प्रबल जीन, अबल जीन तथा अनेक जीवी वंशागति) विभिन्नता—प्रकार तथा स्रोत, गुणसूत्री तथा जीनी उत्परिवर्तन, मानव के आनुवंशिक रोग (दात्र कोशिका अरक्तता, डाउन, टर्नर तथा क्लाइफेल्डर के संलक्षण), प्राककेन्द्रिकियों तथा सुकेन्द्रिकियों में जीन नियमन तथा अभिव्यक्ति, पुनर्योगज डी एन ए प्रौद्योगिकी—मूल सिद्धान्त, उपकरण, संवाहक तथा उपयोग, पारजीनी प्राणि। 3. विकास जीवोत्पत्ति—सिद्धान्त तथा प्रायोगिक साक्ष्य, विकास—सिद्धान्त, प्राकृतिक वरण, विभिन्नता, एलील बारम्बारता गणन (हार्डी—वाइन्बर्ग प्रणाली), जाति तथा उपजाति की संकल्पना, जाति उद्भवन की क्रियाविधि, द्वीपीय जाति, गोपकता—सिंहावलोकन तथा विभिन्न प्रकार। 4. वर्गीकरण विज्ञान—वर्गीकी के सिद्धान्त, प्राणिनामपद्धति, जीवाश्म, भूवैज्ञानिक महाकल्प, अश्व तथा हाथी की जातिवृत्त, मानव की उत्पत्ति एवं विकास, जन्तुओं का महाद्वीपीय वितरण, विश्व के प्राणि—भौगोलिक परिमण्डल तथा उनकी अभिलक्षणिक प्राणिजात।

(खण्ड—ब)

जैवरसायन, कार्यिकी तथा परिवर्धन जैविकी

1. जैवरसायन: कार्बोहाइड्रेट: प्रोटीन, वसा तथा न्यूक्लीक अम्लों की संरचना, वर्गीकरण तथा जैविक कार्य, डी एन ए का वाटसन—क्रिक प्रतिरूप, आनुवंशिकी कूट, प्रोटीन—जैव संश्लेषण, जैविक आक्सीकरण, उच्च—ऊर्जा योगिक, इलेक्ट्रॉन अभिगमन श्रृंखला, आक्सीकरण फास्फोरीलेशन, ग्लाइकोलिसिस, टी सी ए / क्रेब्स चक्र, एन्जाइम—नामपद्धति, वर्गीकरण, एन्जाइम सक्रियता प्रभावन कारक तथा क्रिया की क्रियाविधि, विटामिन—आहार्य स्रोत जैवरसायनिक कार्य, अल्पता लक्षण, अतिविटामिनता ए, सहज तथा उपार्जित प्रतिरक्षा, प्रतिरक्षा कोशिकायें, इमुनोग्लोबुलिन, साइटोकाइन (इन्टरल्यूकिन)। 2. कार्यिकी (स्तनियों के विशेष संदर्भ में): समस्थापन, खुला तथा बन्द परिसंचरण तंत्र, तंत्रिकाजन तथा पेशीजनक हृदय, रक्त—संरचना, कार्य, स्कंदन तथा रक्त समूह, आक्सीजन तथा कार्बनडाईआक्साइड अभिगमन, हृद—चक्र, हृदय गति का तंत्रकीय तथा हार्मोनी नियमन, श्वसन की क्रियाविधि तथा उसका नियमन, मूत्र—निर्माण, वृक्क के समस्थैतिक कार्य, तापअनुसारक तथा तापनियामक प्राणियों में तापनियमन, तंत्रिका आवेग—तंत्रिकाक्षीय तथा अंतर्ग्रथनी प्रेषण, तंत्रिप्रेषी, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा तथा न्यूक्लीक अम्लों का पाचन तथा अवशोषण, पाचक रसों के स्राव का नियंत्रण, पेशी—प्रकार, संरचना तथा संकुचन—क्रियाविधि, मानव नेत्र तथा कर्ण की संरचना एवं कार्य, प्रकाशग्रहण, श्रवण तथा संतुलन की क्रियाविधि, हार्मोन—अंतःस्रावी, परास्रावी तथा स्वस्रावी, हार्मोन के प्रकार: हार्मोन क्रिया की क्रियाविधि, हार्मोन ग्राही के प्रकार, अद्यत्तक, पीयूष, अवटु, परावटु, अन्याशय, जनद तथा पिनियल ग्रन्थियों के हार्मोन की भूमिका। आर्तव चक्र का नियमन, रजोदर्शन तथा रजोनिवृत्ति। 3. परिवर्धन जैविकी—ब्रेकियोस्टोमा, मेढक तथा कुक्कुट में युग्मकजनन, निषेचन, विदलन तथा गैस्ट्रलन (कंडुकन), अंड के प्रकार, मेढक तथा कुक्कुट के गैस्ट्रलन के नियति मानचित्र, मेढक तथा कीटों में कायांतरण तथा उसका हार्मोनी नियंत्रण, कुक्कुट में भ्रूण बाह्य कलाओं का निर्माण, स्तनी में अपरा—प्रकार, संगठक परिघटना, मास्तिष्क, नेत्र तथा हृदय का अंगविकास, पुनर्जनन, परिवर्धन का आनुवंशिक नियंत्रण।

(3) रसायन विज्ञान—प्रथम प्रश्न पत्र

परमाणु संरचना: द — ब्राग्ली समीकरण, होइजेनबर्ग का अनिशिचतता का सिद्धान्त, क्वाण्टम यांत्रिकीय ऑपरैटर तथा श्रॉडिंजर तरंग समीकरण, तरंग फलन का भौतिक महत्व तथा इसकी विशेषताएं (सामान्यीकृत लॉम्बिक) अरीय वितरण तथा s, p, एवं d कक्षकों की आकृतियां एक विमीय बाक्स में कण, इलेक्ट्रानिक, ऊर्जाओं का क्वाण्टीकरण (हाइड्रोजन परमाणु का गुणात्मक अध्ययन पाउली का अपवर्जन सिद्धान्त, अधिकतम चक्रण की बहुलता का हुण्ड नियम, आफबाऊ सिद्धान्त, परमाणुओं का इलेक्ट्रानिक विन्यास, परालारेथियम तत्त्वों को सम्मिलित करते हुए आवर्त तालिका की दीर्घ प्रणाली। तत्त्वों के गुणों में आवर्तता जैसे कि परमाणु एवं आयनिक त्रिज्याएं, आयनन विभव, इलेक्ट्रान बंधुता तथा जलयोजन ऊर्जा।

नाभिकीय एवं विकिरण रसायन: नाभिकीय बल, नाभिकीय स्थायित्व n/p अनुपात, नाभिकीय बंधन ऊर्जा। तत्त्वों का कृत्रिम तत्वान्तरण तथा नाभिकीय अभिक्रियायें, नाभिक विखण्डन तथा संगलन, रेडियोएक्टिवता की बल गतिकी, रेडियों एक्टिव समस्थानिक तथा उनकी उपयोगिताएं, रेडियो कार्बन काल निर्धारण, विकिरण रसायन की प्रारम्भिक जानकारी।

रासायनिक आबंधन: संयोजकता आबंध सिद्धान्त (हाइड्रलर लंदन तथा पाउलिंग —स्लेटर के सिद्धान्त) संकरण, वी.एस.ई. पी आर सिद्धान्त, समांग तथा विषमांग द्विपरमाणुक अणुओं की आण्विक कक्षक ऊर्जा स्तर आरेख, आबंध क्रम, आबंध दैर्ध्य, एवं आबंध सामर्थ्य सिग्मा तथा पाई आबंध, हाइड्रोजन आबंध, आयनिक आबंध की विशेषताएं, S तथा P खण्ड के तत्त्वों का रसायन S तथा P खण्ड के तत्त्वों का सामान्य गुण: तत्त्वों की रासायनिक सक्रियता तथा समूह प्रवृत्तियां, उनके हाइड्राइडों, हैलाइडों तथा आक्साइडों का रासायनिक आचरण।

संक्रमण तत्त्वों का रसायन: सामान्य विशेषताएं, परिवर्ती आक्सीकरण अवस्थाएं, जटिलों का निर्माण, उनका रंग तथा चुम्बकीय एवं उत्प्रेरिकीय गुण। आयनिक त्रिज्याओं, आक्सीकरण अवस्थाओं तथा चुम्बकीय गुणों की दृष्टि से 4d और 5d संक्रमण तत्त्वों एवं उनके अनुरूप 3d तत्त्वों का तुलनात्मक अध्ययन।

लैथेनाइडों तथा एक्टिनाइडों का रसायन: लैथेनाइडों, संकुचन, आक्सीकरण अवस्थाएं, लैथेनाइडों तथा एक्टिनाइडों के पृथक्करण का सिद्धान्त, उनके यौगिकों का चुम्बकीय तथा स्पेक्ट्रमी गुण।

उप सहसंयोजन रसायन: उप सहसंयोजन यौगिकों का वर्नर सिद्धान्त नाम पद्धति की आई.यू. पी.ए.सी. (IUPAC) प्रणाली प्रभावी परमाणु क्रमांक, उप सह संयोजन यौगिकों में समावयवता, संयोजकता बंध सिद्धान्त तथा उसकी सीमाएं, क्रिस्टल क्षेत्र सिद्धान्त अष्टफलकीय, चतुष्फलकीय तथा वर्ग तलीय जटिलों में d कक्षकों का क्रिस्टल क्षेत्र विपाटन। Δ तथा इसके मान को प्रभावित करने वाले कारक d_1 से d_9 तक के लिए क्रिस्टल क्षेत्र स्थायित्व ऊर्जाओं की गणना, दुर्बल तथा प्रबल क्षेत्र के अष्टफलकीय जटिल, स्पेक्ट्रो रासायनिक श्रेणी।

3d संक्रमण धातु जटिलों के इलेक्ट्रानिक स्पेक्ट्रम, इलेक्ट्रानिक उत्तेजन के प्रकार, इलेक्ट्रानिक उत्तेजन के लिए सेलेक्शन नियम।

जैव अकार्बनिक रसायन : जैविक प्रक्रमों में अनिवार्य तथा सूक्ष्म मात्रिक तत्व धात्विक हीमोग्लोबिन तथा मायाग्लोबिन के सन्दर्भ में धात्विकपारफिरिस, कैल्सियम आयन के विशेष संदर्भ में क्षारीय तथा मृदाक्षारीय धातु आयनों का जैविक महत्व।

निम्नांकित अकार्बनिक यौगिकों का निर्माण, उनके गुण धर्म तथा उपयोग: भारी जल, बोरिक एसिड, डाइबोरेन, हाईड्रॉजिन, हाईड्रॉक्सिलीमिन, पोटेशियम डाइक्रोमेट, पोटेशियम परमैंगनेट, Ce (iv) सल्फेट तथा Ti (III) सल्फेट।

बहुलक: अवसादन, प्रकाश विकीर्णन, श्यानता तथा परसारण दाब, विधियों द्वारा बहुलकों के अणुभार का ज्ञात करना। संख्या माध्य तथा भार माध्य अणुभार, बहुलकों की प्रत्यास्थता तथा क्रिस्टलता। बोराजीन, सिलीकोन तथा फास्फोनाइट्रिलिक हैलाइड बहुलक।

रासायनिक ऊष्मा गतिकी: ऊष्मा गतिकी फलन, ऊष्मा गतिकी के प्रथम तथा द्वितीय नियम, संभवन, उदासिनीकरण तथा दहन ऊष्मा, ऊष्मा योग का हेस का नियम, ताप दाब एवं आयतन परिवर्तन से एन्ट्रोपी में परिवर्तन। गिब्स हेल्महॉल्ट समीकरण, साम्य एवं स्वतः अभिक्रिया की कसौटी, विभिन्न भौतिकी—रसायनिक अभिक्रियाओं में ऊष्मा गतिकी का उपयोग, रासायनिक विभव की धारणा, गिब्स—ड्यूहेम समीकरण, क्लासियस—क्लेपेरान समीकरण, तनुविलयनों के सहजात गुण धर्मों की ऊष्मागतिकी विवेचना।

रासायनिक बल गतिकी : अभिक्रिया की अणुकता तथा कोटि, वेग स्थिरांक तथा विशिष्ट वेग स्थिरांक, शून्य कोटि, प्रथम कोटि तथा द्वितीय कोटि अभिक्रियायें, अर्द्ध आयुकाल, अभिक्रिया कोटि ज्ञात करने की विधियां, ताप गुणांक, आरहीनियस समीकरण, सक्रियण ऊर्जा, अभिक्रिया वेग का संगट्ट सिद्धान्त, स्थिर अवस्था सन्निकटन, अभिक्रिया वेग का संक्रमण अवस्था सिद्धान्त, प्रथम कोटि की क्रमागत उत्क्रमणीय तथा पार्श्व अभिक्रियाएं।

प्रावस्था साम्य: प्रावस्था घटक तथा स्वतंत्रता की कोटि, एक घटक (जल तथा सल्फर) तथा दो घटक (Pb-Ag) निकाय का प्रावस्था आरेख, नर्स्ट का वितरण नियम। वितरण नियम का अनुप्रयोग।

विद्युत रसायन: प्रबल विद्युत अपघट्य का सिद्धान्त— सक्रियता गुणांक का डिबाईह्यूकल सिद्धान्त विद्युत चालन के नियम अभिगमनांक, अभिगमनांक ज्ञात करना (हिटाफ तथा गतिशील सीमांक विधि) इलेक्ट्रोड तथा इलेक्ट्रोड विभव, हाईड्रोजन इलेक्ट्रोड, कलोलम इलेक्ट्रोड, गैलबेनिक सेल का ई0एम0एफ0, अभिगमन सहित तथा अभिगमन रहित सान्द्रण सेल, द्रव जंक्शन विभव तथा ईधन सेल।

ठोस अवस्था का रसायन: क्रिस्टल तंत्र क्रिस्टलों में समिति के तत्व, त्रिविम जालक तथा एकक सेल, गोलकों का सुसंकुलन, षटकोणीय सुसंकुलन, घन सुसंकुलन, बाडी सेन्टर्ड क्यूबिक पैकिंग उपसहसंयोजन क्रमांक तथा त्रिज्या अनुपात प्रभाव। एक्स—किरण विवर्तन के लिए ब्रैग का नियम, पावडर विधि द्वारा NaCl, KCl तथा जिंक सल्फाइड की क्रिस्टल संरचनाएं।

पृष्ठ रसायन: कोआगुलेशन, हार्डी—सुल्ज रूल—कोलाइडों का स्थायित्व तथा उन पर आवेष्ट का उद्गम, विद्युत गतिकी विभव, विभिन्न प्रकार के अधिशोषण समतापी, उत्प्रेरण, एन्जाइम उत्प्रेरण (माइकेलिस—मेंटन समीकरण)

स्पेक्ट्रा : रमन स्पेक्ट्रम : रमन प्रभाव, स्टोक तथा प्रतिस्टोक रेखायें, तथा तीव्रता अन्तर, पारस्परिक अपवर्जन का नियम। इलेक्ट्रानी स्पेक्ट्रम : इलेक्ट्रानी उत्तेजन, फैंक—कॉण्डाम सिद्धान्त, प्रतिदीप्ति तथा स्फुर दीप्ति।

साम्यावस्था : भौतिकी तथा रासायनिक अभिक्रियाओं में साम्यावस्था, साम्यावस्था का डायनमिक प्रकृति, रासायनिक साम्यावस्था का नियम, साम्य स्थिरांक, साम्य को प्रभावित करने वाले कारक, ली—शेटिलियर सिद्धान्त, प्रबल तथा दुर्बल विद्युत अपघट्य, कामन आयन प्रभाव, पालीबेसिक अम्लों का आयनीकरण, अम्लीय बल, पी0एच0 की अवधारणा, लवणों का जल अपघटन, बफर बिलयन, हेण्डरसन समीकरण, अल्प विलेय की विलेयता तथा विलेयता गुणांक।

रसायन विज्ञान—द्वितीय प्रश्न पत्र

1— सामान्य कार्बनिक रसायन : अतिसंयुग्मन, अस्थानीकरण एवम् इनके अनुप्रयोग, इलेक्ट्रान स्नेही, हाईड्रोजन बन्ध, ऐरोमैटिकता और प्रति ऐरोमैटिकता।

2— रासायनिक क्रिया विधि : (i) रासायनिक अभिक्रियाओं के निर्धारण हेतु सामान्य विधियाँ : गतिक समस्थानिक प्रभाव, पारगमन प्रयोग, मध्यवर्ती विपाषण (ट्रैपिंग), उष्मागतिकी नियमक बनाम गतिकी नियमक अभिक्रियायें।

(ii) क्रियाशील मध्यवर्ती : कार्बनायन, कार्बनरूपायन मुक्त मूलक, कार्वन्सि तथा वेजाइन के स्थायित्व, बनने की विधि, ज्यामिती, प्रकृति (इलेक्ट्रान स्नेही तथा नाभिक स्नेही) तथा अभिक्रियायें।

(iii) योग अभिक्रियायें : कार्बन : कार्बन द्विआवन्ध पर ब्रोमीन, कार्वीन एवम पर ऐसिड (आक्सीरेन का बनना) की इलेक्ट्रान स्नेही योग अभिक्रियायें, हाइड्रोजनोरेसन—आक्सीकरण, आक्सीमरक्यूरेशन—डीमरक्यूरेशन एवम् आयडोलेक्टोनाइजेसन।

ब्रोमीन का संयुग्मी डार्इन के साथ 1,2 और 1,4 योग अभिक्रियायें। HBr की मुक्तमोलक योग अभिक्रियायें। कार्बन, आक्सीजन, सल्फर तथा नाइट्रोजन नाभिक स्नेही अभिकर्मकों का कार्बोनिल समूह के साथ नाभिक स्नेही योग अभिक्रियायें।

(iv) विलोपन अभिक्रियायें: E1, E2 तथा E1cb अभिक्रियाओं की क्रिया विधि, E2 अभिक्रियाओं का अभिविन्यास (सेटजेफ तथा हाफमैन), कोप विलोपन अभिक्रिया।

(v) प्रतिस्थापन अभिक्रियायें:

(a) SN1 तथा SN2 क्रिया विधि।

(b) इलेक्ट्रान स्नेही ऐरोमैटिक प्रतिस्थापन अभिक्रियायें : मोनो प्रतिस्थापित बेन्जीनों के लिये अभिविन्यास एवम् क्रियाशीलता।

3— अभिक्रियायें एवं पुनर्विन्यास अभिक्रियायें :

(i) अभिक्रियायें : एलडोल संघनन क्लेसन संघनन नोवेनागेल अभिक्रिया, विटिग अभिक्रिया, माइकेल योग, मानिस अभिक्रिया, परकिन, रायमर—टीमान अभिक्रिया, कैनिजरो अभिक्रिया तथा वेन्जोइन संघनन।

(ii) पुनर्विन्यास अभिक्रियायें : पिनेकाल — पिनेकोलीन, हाफमान, बेकमान, करटियस पुनर्विन्यास तथा कार्बनायनों की पुनर्विन्यास अभिक्रियायें।

4— त्रिविम रसायन: काइरल केन्द्र के कारण ध्रुवण घूर्णकता: एक तथा दो काइरल केन्द्रो वाले यौगिकों का R, S नामकरण। प्रतिबिम्बी तथा अप्रतिबिम्बी रूपों का गुणधर्म। रासायनिक विधि द्वारा रैसेमिक मिश्रण का पृथक्करण। ज्यामिती समावयवता: E, Z नामकरण। विवृत श्रृंखला वाले यौगिकों (n—ब्यूटेन, 2—फ्लोरोइथेनोल, 1,2—इथेन डायान, 1,2 डार्ई—फ्लोरोइथेन) का संरूपण। साइक्लोहेक्सेन, एकल प्रतिस्थापित तथा द्विप्रतिस्थापित साइक्लोहेक्सेनों का संरूपण।

5—स्पेक्ट्रमिकी:— (i) UV स्पेक्ट्रमिकी: इलेक्ट्रानिक संक्रमण के प्रकार, वर्णमूलक (क्रोमोफोर), वर्णवर्धक (आक्सोक्रोम), वर्णोत्कर्शी विस्थापन, वर्णवर्धक विस्थापन। संयुग्मित पालीनों तथा कार्वीनिल यौगिक के λ_{max} की गणना के लिये वुडवर्ड तथा फाइनर नियम।

(ii) इनफारेड स्पेक्ट्रमिकी: तनन आवृत्तियों को प्रभावित करने वाले कारक।

(iii) 1H NMR स्पेक्ट्रमिकी: मूल सिद्धान्त, केमिकल शिफ्ट, स्पिन—स्पिनअन्योन्य क्रिया तथा युग्मनांक। साधारण यौगिकों की संरचना निर्धारण के लिए UV, IR तथा 1H NMR पर आधारित प्रश्न।

6—कार्बनिक बहुलक: बहुलीकरण की क्रियाविधि, औद्योगिक महत्व के बहुलक (पालिमेराइड, पालिएस्टर, ऑरलान, पी0वी0सी0, टेपलान, एस0बी0आर0, एन0बी0आर0)

7— कार्बोहाइड्रेटस: मानोसैकराइडस (ग्लूकोस तथा फ्रक्टोस) का रसायन। ग्लूकोस तथा फ्रक्टोस की चक्रीय संरचना। परिवर्ती ध्रुवण घूर्णन, एपिमैराजेसन, अमाडोरी पुनर्विन्यास, डाइसैकराइडस (माल्टोस तथा सुक्रोस)।

Cont...

8- पेरिसाइक्लिक अभिक्रियाएँ: वर्गीकरण तथा उदाहरण, वुडवर्ड-हाफमान नियम, इलेक्ट्रोसाइक्लिक अभिक्रियाएँ, साइक्लोएडीशन (1+2 तथा 1+4) अभिक्रियाएँ।

9- विषमचक्रीय यौगिक: पायराॅल, पर्युटान तथा थायोफेन के बनाने की विधियाँ, ऐरोमैटिकता तथा अभिक्रियाएँ।

10- पर्यावरणीय रसायन विज्ञान: वायुप्रदूषक एवं उनके विशाक्त प्रभाव, ओजोन परत का विघटन, नाइट्रोजन के आक्साइड का प्रभाव, पलोरो क्लोरो कार्बन तथा ओजोन परत पर उसका प्रभाव, पादपगृह प्रभाव, अम्ल वर्षा।

(4) भौतिक विज्ञान: प्रथम प्रश्न-पत्र

यांत्रिकी, ऊष्मणीय भौतिकी तथा तरंग एवं दोलन : (1) यांत्रिकी : संरक्षण नियम, संघट्ट, प्राचल, प्रकीर्णन प्रच्छेद, द्रव्यमान केन्द्र तथा प्रयोगशाला तंत्र भौतिक राशियों के रूपान्तरण के साथ। रदरफोर्ड प्रकीर्णन। नियत बल क्षेत्र के भीतर राकेट की गति। रोटेटींग फ्रेम ऑफ रिफरेंस। कोरियोलिस बल। दृढ़ पिण्डों की गति। घूर्णन करती वस्तुओं की गतिकी। जड़त्वाघूर्ण, जड़त्व टेंसर। गोला, रिंग, बेलन, डिस्क का जड़त्वाघूर्ण। कोणीय संवेग, बलआघूर्ण (बलाघूर्ण, टाप का प्रेसिसन, गाइरास्कोप, केन्द्रीय बल। व्युत्क्रमवर्ग नियम के अन्तर्गत गति, केपलर के नियम। कृत्रिम उपग्रह की गति (भूस्थिर उपग्रह भी), प्रत्यास्थता नियतांक एवं उनके बीच अन्तर्सम्बन्ध। गैलीलियन सापेक्षिकता। विशिष्ट सापेक्षिकता सिद्धान्त, माइकेल्सन मोरले का प्रयोग। लारेन्ज का रूपान्तरण, वेगों के योग का नियम। द्रव्यमान का वेग के साथ परिवर्तन, द्रव्यमान-ऊर्जा समतुल्यता व तरल गतिकी, धारारेखीय एवं विक्षोभ बहाव, रेनोल्ड संख्या, श्यानता, संकीर्ण नलिका से द्रवों के प्रवाह सम्बन्धी पाइलोजी का सूत्र, बर्नोली का समीकरण तथा उसके सामान्य अनुप्रयोग।

(2) ऊष्मा भौतिकी : उष्मागतिकी के नियम, एण्ट्रापी, कार्नोचक्र, समतापीय तथा रुद्रोष्म परिवर्तन। ऊष्मा गतिक विभव, हेल्महोल्ज तथा गिब के फलन। मैक्सवेल सम्बन्ध। क्लासिसियस-क्लेपेरान समीकरण। उत्क्रमणीय सेल। जूल-केल्विन प्रभाव। स्टीफान बोल्मैन नियम। गैसों का गत्यात्मक सिद्धान्त। वेग के वितरण का मैक्सवेल नियम। ऊर्जा का समविभाजन, गैसों की विशिष्ट ऊष्मा, मध्य-मुक्त पथ ब्राउनी गति। कृष्णिका विकिरण। ठोसों की विशिष्ट ऊष्मा, आइन्सटीन तथा डीवाई सिद्धान्त। वीन का नियम, प्लैंक का नियम, सौर नियतांक। साहा का ऊष्मणीय आयनीकरण का सिद्धान्त तथा नक्षत्रीय स्पेक्ट्रम। रुद्रोष्म विद्युत्चुम्बकन द्वारा निम्न ताप उत्पादन तथा तनु शीतलन। ऋणात्मक ताप की अवधारणा।

(3) तरंग एवं दोलन : दोलन सरल आवर्तगति। द्रव्यमान स्प्रिंग तथा एलसी परिपथ। अप्रगामी तथा प्रगामी तरंगें। अवमंदित सरल आवर्तगति, प्रणोदित दोलन तथा अनुनाद। अनुनाद की तीक्ष्णता। तरंग समीकरण। हार्मोनिक हल। समतल तथा गोलीय तरंगें, तरंगों का अध्यारोपण। दो अभिलम्बित सरल आवर्तगतियाँ लिसाजू आकृतियाँ। आवर्ती तरंगों का फुरियर विश्लेषण-वर्ग तथा त्रिकोणीय तरंगें। कला तथा समूह वेग, विस्पंद।

(4) प्रकाशिकी: हाइगेन का सिद्धान्त। आयाम एवं तरंगाग्र का विभाजन, फ्रनेल बाइप्रिज्म न्यूटन-रिंग माइकेल्सन इंटरफेरोमीटर, फ्रेब्रीपारा, इंटरफेरोमीटर। विवर्तन-फ्रनेल तथा फ्रानहॉफर फूरिये रूपान्तरण के रूप में विवर्तन। आयताकार एवं वृत्ताकार द्वारकों से फ्रनेल तथा फ्रानहॉफर विवर्तन। सीधेकोर, एकल तथा बहुस्लिटों से विवर्तन, ग्रैटिंग की विभेदन क्षमता। प्रकाशित उपकरण। रेले का मानक। ध्रुवण, ध्रुवित प्रकाश (रेखीय, वृत्तीय तथा दीर्घवृत्तीय) का उत्पादन तथा संसूचन। ब्लूस्टर-नियम, द्विव्यवर्तन का हाइगेन सिद्धान्त। प्रकाशीय घूर्णन, पोलारीमीटर, लेसर श्रोत (हीलियम नीयोन, रूबी तथा अर्ध चालक डायोड) स्थानीय एवं सामयिक कला सम्बद्धता की अवधारणा। होलोग्राफी सिद्धान्त तथा अनुप्रयोग। डायलर प्रभाव।

भौतिक विज्ञान: द्वितीय प्रश्न-पत्र

(वैद्युत तथा चुम्बकत्व, आधुनिक भौतिकी तथा इलेक्ट्रानिकी)

1. वैद्युत तथा चुम्बकत्व: कूलम्ब का नियम, वैद्युत क्षेत्र, गास का नियम, वैद्युत विभव, समरूप क्षेत्र में समांग परावैद्युत तथा अनावेशित गोलीय चालक हेतु पायसा एवं लाप्लास के समीकरण, बिन्दु आवेश तथा अनन्त संचालक तल। वैद्युत धारा, किरचाफ का नियम तथा इसके अनुप्रयोग: ह्वीट स्टोन सेतु, केल्विन डबल ब्रिज, फेरीफास्टर ब्रिज। बायो-सेवर्ट नियम तथा उसके अनुप्रयोग। एम्पीयर का परिपथीय नियम तथा अनुप्रयोग। चुम्बकीय प्रेरण तथा क्षेत्र तीव्रता, चुम्बकीय शैल वृत्ताकार कुंडली के अक्ष पर चुम्बकीय क्षेत्र, हेल्म होल्ज कुंडली, वैद्युत चुम्बकीय प्रेरण, फेराडे एवं लैन्ज का नियम। स्व एवं अन्योन्य प्रेरकत्व, प्रत्यावर्ती धारा, एल सी आर परिपथ, श्रेणी एवं समान्तर अनुनाद परिपथ, गुणता गुणांक। मैक्सवेल के समीकरण तथा वैद्युत चुम्बकीय तरंगों की अनुप्रस्थ प्रकृति। पार्इण्टिंग वेक्टर। द्रव्यों में चुम्बकीय क्षेत्र प्रति अनु फेरों प्रतिफेरो तथा फेरी चुम्बकत्व (गुणात्मक उपागम मात्र), शैथिल्यता।

2. आधुनिक भौतिकी: हाइड्रोजन परमाणु का बोर सिद्धान्त, इलेक्ट्रान स्पिन। स्टर्न-गरलैक प्रयोग तथा स्थानिक क्वाण्टीकरण। परमाणु का वेक्टर माडल, स्पेक्ट्रमी पद, प्रकाशित एवं एकस-रे स्पेक्ट्रा। स्पेक्ट्रमी रेखाओं की सूक्ष्म संरचना j-j तथा l-s युग्मन। जीमान प्रभाव। पाउली का अपवर्जन सिद्धान्त। दो समतुल्य तथा भिन्न इलेक्ट्रानों की स्जेक्ट्रमी पद। इलेक्ट्रानिक बैण्ड स्पेक्ट्रा की स्थूल तथा सूक्ष्म संरचना। रमन प्रभाव। प्रकाश वैद्युत प्रभाव, क्राम्पटन प्रभाव, डी ब्रागली तरंगें। तरंगकण द्वैतता। अनिश्चितता का सिद्धान्त। क्वाण्टम यांत्रिकी की अभिधाराएं। श्रौडिंगर समीकरण का अनुप्रयोग (1) बाक्स में स्थित कण तथा (2) पद विभव के आरपार गति में। एक विभीय हार्मोनिक दोलक, आइगन मूल्य तथा आइगन फलन। रेडियोधर्मिता, अल्फा, बीटा तथा गामा विकिरण। अल्फा क्षय का प्रारम्भिक सिद्धान्त, नाभिकीय बन्धन ऊर्जा, मास स्पेक्ट्रोस्कोपी, सेमी एम्पीरिकल मास फार्मूला, नाभिकीय विखण्डन तथा संलयन। प्रारम्भिक रिएक्टर भौतिकी। मूल कण तथा उनके वर्गीकरण। तीव्र तथा दुर्बल अन्तर्क्रिया। कणत्वरित्र, साइक्लोट्रान, रेखीय त्वरित्र, अतिचालकता का प्रारम्भिक ज्ञान।

3. इलेक्ट्रानिकी : उर्जा बैण्ड के आधार पर ठोसों का चालक, कुचालक एवं अर्धचालक में वर्गीकरण। नैज तथा वाह्य अर्द्धचालक। पी एन संधि, पश्व एवं अग्न अभिनत पी एन संधि। थर्मिस्टर, जेनर डायोड, सौर सेल। डिप्टीकरण, प्रवर्धन दोलन, रेडियो आवृत्ति तरंगों के माडुलेशन तथा संसूचन में डायोड तथा ट्रांजिस्टर का उपयोग, ट्रांजिस्टर अभिग्रहण। बुलियन बीज गणित, लाजिक गेट तथा उनके सत्य तालिका उनके कुछ उपयोग। एडर तथा सवट्रैम्टर।

(5) गणित - प्रथम प्रश्नपत्र

1- रैखिक बीजगणित एवं आव्यूह- सदिश समष्टियाँ, उप समष्टियाँ, आधार एवं विमा, विभाग समष्टि, निर्देशांक। रैखिक रूपान्तरण, रैखिक रूपान्तरण की जाति एवं शून्यता, रैखिक रूपान्तरण का आव्यूह निरूपण। रैखिक फलनक, द्वैत समष्टि, रैखिक रूपान्तरण का परिवर्त, अभिलाक्षणिक मान, शून्यकारी बहुपद, कैले-हैमिल्टन प्रमेय। आंतर गुणन समष्टि, काशी-शवाज असमिका, लांबिक सदिश, लांबिक पूरक, प्रसामान्य लांबिक समुच्चय एवं आधार, परिमित विभीय समष्टि के लिये ग्राम-शिष्ट लांबिकीकरण प्रक्रम। आव्यूह की जाति, सोपानक रूप, तुल्यता, संवागसमता तथा उपरूपता, विहित रूपों में समानयन, लांबिक, सममित, विषम सममित हर्मिटी एवं विषम हर्मिटी आव्यूह, उनके अभिलाक्षणिक मान, द्विघाती तथा हर्मिटी रूपों के लांबिक तथा एकिक समानयन, धनात्मक निश्चित द्विघाती रूप, सहकालिक समानयन।

2- कलन- सीमाएं, सान्त्त्य, अवकलनीयता, माध्यमान प्रमेय, टेलर प्रमेय, अनिर्धार्य रूप, उच्चिष्ट एवं निम्निष्ठ, स्पर्शी एवं अभिलम्ब, अनन्तस्पर्शी, वक्रता, अन्वालोप एवं केन्द्रज, आंशिक अवकलन, वक्र अनुरेखण, बहुचरों के फलनों की सान्त्त्यता एवं अवकलनीयता, आंशिक अवकलज के क्रम की आंतरिक परिवर्तनशीलता, अंतनिर्हित फलन प्रमेय, जैकोबियन, द्विक एवं त्रिक समाकल (केवल प्राविधियों), वीटा एवं गामा फलनों का अनुप्रयोग, क्षेत्रफल, वक्रपृष्ठ एवं आयतन, गुरुत्व केन्द्र।

3- दो एवं तीन विमाओं की वैश्लेषिक ज्यामिति- द्विघात का व्यापक समीकरण, शांकव निकाय, संनाभि शांकव का ध्रुवीय समीकरण तथा उसके गुण। त्रिविमीय निर्देशांक, समतल, सरल रेखा, गोला शंकु, और

बेलन। केन्द्रीय शांकवज, परवलयज, शांकवज का समतलीय काट, जनक रेखाएँ, संनाभि शांकवज।

4- साधारण अवकल समीकरण- अवकल समीकरण की कोटि तथा घात, प्रथम कोटि तथा प्रथम घात की रैखिक एवं यथावत अवकल समीकरण, प्रथम कोटि के समीकरण जो प्रथम घात के न हों, विचित्र हल, लम्बकोणीय संक्षेदी। अचर गुणांको वाले उच्च कोटि के रैखिक समीकरण, पूरक फलन तथा विशेष समाकल। चर गुणांको वाले द्विकोटी के रैखिक अवकल समीकरण : एक ज्ञात हल से दूसरा ज्ञात करना, प्रसामान्य रूप, अनिर्धारित गुणांक विधि, प्राचल विचरण विधि।

5- सदिश एवं प्रदिश विश्लेषण- सदिश बीजगणित, अदिश चर के सदिश फलनों के अवकलन एवं समाकलन, ग्रेडियंट, डाइवर्जेंस एवं कर्ल के कार्तीय, बेलनी एवं गोलीय निर्देशांको में निरूपण तथा उनके भौतिक निर्वचन, उच्चतर कोटि के अवकलज, सदिश समिकाएं एवं सदिश समीकरण, गाऊस तथा स्टोक्स प्रमेय। समष्टि वक्र, वक्रता तथा ऐटन, सेरेट-फेनेट सूत्र।

6-स्थैतिकी एवं गतिकी- कल्पित कार्य, सन्तुलन का स्थायित्व, कैटनरी, एक समान सामर्थ्य की कैटनरी, तीन विमा में बलों का संतुलन। सरल रेखीय गति, सरल आवर्त गति, त्रिज्य एवं अनुप्रस्थ दिशाओं तथा स्पर्शीय एवं अभिलम्ब दिशाओं में वेग एवं त्वरण, प्रतिरोधी माध्यम में गति, व्यवरुद्ध गति, आवेगी बलों के अधीन गति केपलर के नियम, केन्द्रीय बलों के अधीन कक्षाएँ, परिवर्ती द्रव्यमान की गति।

गणित- द्वितीय प्रश्नपत्र

1- बीजगणित: समूह, चक्रीय समूह, उपसमूह, उपसमूह का सहसमुच्चय, लाग्रांज प्रमेय, प्रसामान्य उपसमूह, समूहों की समाकारिता, खण्ड समूह, आधारी तुल्यकारिता प्रमेय, क्रमचय समूह, केली प्रमेय। वलय, उपवलय, गुणजावली, पूर्णांकीय प्रांत, पूर्णांकीय प्रांत का विभाजन क्षेत्र, यूक्लिडीय प्रांत, मुख्य गुणजावली प्रांत, क्षेत्र पर बहुपदीय वलय, अद्वितीय गुणनखंडन प्रांत।

2- वास्तविक विश्लेषण: दूरीक समष्टि एवं अनुक्रमों के विशेष संदर्भ में उनकी सांस्थितिकी, अभिसारी अनुक्रम, कौशी अनुक्रम, अभिसरण के लिये कौशी निकश, अनन्त श्रेणी एवं उनका अभिसरण, nवाँ पद परीक्षण, धनात्मक पदों की श्रेणी, अनुपात एवं मूल परीक्षण, सीमा तुलनात्मक परीक्षण, लघुगणकीय अनुपात परीक्षण, संघनन परीक्षण, सामान्य अनुक्रम R में निरपेक्ष एवं संप्रतिबंधी परीक्षण, आबेल एवं डिरेख्ले प्रमेय, किसी अन्तराल पर फलनों के अनुक्रम एवं श्रेणी का एक समान अभिसरण, वियरस्ट्रास M- परीक्षण, आबेल एवं डिरेख्ले परीक्षण, सीमा-फलन के लिये सांतत्य, पदषः समाकलनीयता एवं अवकलनीयता, परिवद्ध फलनों के लिये समाकलन का सीमान सिद्धान्त, सतत फलन की समाकलनीयता, कलन की मौलिक प्रमेय, अनुचित समाकलन एवं उनके अस्तित्व के लिये दर्शाएँ, म्यू परीक्षण।

3- सम्मिश्र विश्लेषण: वैश्लेषिक फलन, कौशी-रीमान समीकरण, कौशी प्रमेय, कौशी का समाकलन सूत्र, वैश्लेषिक फलन का घात श्रेणी निरूपण, टेलर श्रेणी, लॉरेन्ट श्रेणी, विचित्रताओं का वर्गीकरण, कौशी अवशेष प्रमेय, कन्दूर समाकलन।

4- आंशिक अवकलन समीकरण: आंशिक अवकल समीकरणों को बनाना, प्रथम कोटि के आंशिक अवकल समीकरण, प्रथम कोटि के रैखिक कल्प आंशिक अवकल समीकरणों के हल, प्रथम कोटि के अरैखिक आंशिक अवकल समीकरण के लिये शार्पिट विधि, अचर गुणांको वाले द्वितीय कोटि के रैखिक आंशिक अवकल समीकरण तथा उनके विहित रूप, कंपित तंतु का समीकरण, ताप समीकरण, लाप्लास समीकरण एवं उनके हल।

5- यांत्रिकी: व्यापीकृत निर्देशांक, व्यापीकृत गति, होलोनोमी और गैर-होलोनोमी निकाय, संरक्षी क्षेत्र में होलोनोमी निकाय के लिये डीएलबर्ट सिद्धान्त एवं लाग्रांज समीकरण, व्यापीकृत आवेग, हैमिल्टन समीकरण, जड़त्व एवं गुणन आघूर्ण, मुख्य अक्ष, दिक् कोज्या (l,m,n) वाली रेखा के परितः जड़त्व आघूर्ण, आवेगीय दीर्घवृत्तज, दृढ़ पिंडों की द्विविमीय गति।

6- तरल गतिकी: सांतत्य समीकरण, गति विभव, धारा गति, पथ रेखा, संवेग एवं उर्जा। अध्यान प्रवाह: आयलर और बरनौली का गति समीकरण, द्विविमीय द्रवीय गति, सम्मिश्र विभव, संवेग एवं उर्जा, उदगम एवं अभिगम, द्विक एवं उनके प्रतिबिम्ब (रेखा एवं वृत्त के सापेक्ष)।

7- संख्यात्मक विश्लेषण : एक चर के बीजगणतीय तथा अबीजीय समीकरणों का द्विविभाजन, रेगुला-फाल्स तथा न्यूटन-राफसन विधियों द्वारा हल तथा उनके अभिसरण, अंतर्वेशन (न्यूटन और लाग्रांज) एवं ट्रुटि पदों सहित संख्यात्मक अवकलन सूत्र।

संख्यात्मक समाकलन: समलंबी नियम, सिंपसन नियम

साधारण अवकल समीकरणों का संख्यात्मक हल: आयलर विधि, रूंगे-कुट्टा विधि।

(6) भूगोल : प्रथम प्रश्न -पत्र

खण्ड- अ : भौतिक भूगोल

1. भू- आकरिकी : पृथ्वी की उत्पत्ति एवं संरचना, भूसंचलन, प्लेट विवर्तन तथा पर्वत निर्माण, भूसंतुलन, ज्वालामुखी क्रिया, अपक्षय एवं अपरदन, अपरदन चक्र, स्थलाकृतियों का क्रम- विकास-नदीय, हिमानी, पवन, सागरी तथा कार्ट, पुनरूत्थान एवं बहुचक्रीय भू- आकृतियाँ।

2. जलवायु विज्ञान : वायुमण्डल का संघटन एवं संरचना, सूर्याभिताप एवं उष्मा बजट, वायुमण्डलीय दाब एवं पवन, आद्रता एवं वृष्टि, वायु राशियों एवं वाताग्र, चक्रवात- उत्पत्ति, परिसंचरण एवं सम्बन्धित मौसम, विश्व जलवायु का वर्गीकरण- कोपेन तथा थार्थवेट।

3. समुद्र विज्ञान : समुद्रतल का उच्चावच स्वरूप, लवणता, समुद्री धाराएं एवं ज्वार-भाटा, समुद्री निक्षेप एवं प्रवाल भित्तियाँ।

4. मिट्टी एवं वनस्पति: उत्पत्ति, वर्गीकरण एवं विश्व- वितरण, मिट्टी एवं वनस्पति की सह-जीविता, जैव समुदाय एवं अनुक्रम।

5. पारिस्थितिकी तन्त्र : पारिस्थितिकी की संकल्पना, पारिस्थितिकी तन्त्र की संरचना एवं कार्यप्रणाली, पारिस्थितिकी तन्त्र के प्रकार, प्रमुख जीवोम, पारिस्थितिक तन्त्रों पर मानव का प्रभाव तथा वैश्विक पारिस्थितिकीय मुद्दे।

खण्ड - ब : मानव भूगोल

6. भौगोलिक चिन्तन का क्रम- विकास : भारतीय, जर्मन, फ्रांसीसी, ब्रिटिश तथा रूसी भूगोल वेत्ताओं के योगदान, मानव- भूगोल के परंपरागत चिंतन फलक- निश्चयवाद, सम्भववाद, प्रदेशवाद; सम- सामायिक चिंतन फलक: प्रत्यक्षवाद, सांख्यिकीय क्रान्ति; भूगोल में मॉडल एवं तंत्र; भौगोलिक चिन्तन में अभिनव प्रवृत्तियाँ (आचारपरक, क्रान्तिकारी, मानवतावाद, उत्तरआधुनिकवाद एवं पारिस्थितिकी चिन्तन फलक के विशेष सन्दर्भ में)।

7. मानव भूगोल: प्रमुख प्राकृतिक प्रदेशों में मानव निवास्य, मानव का अभ्युदय एवं मानव प्रजातियाँ, सांस्कृतिक विकास एवं अवस्थाएं: प्रमुख सांस्कृतिक परिमण्डल, जनसंख्या की वृद्धि एवं वितरण, अन्तर्राष्ट्रीय प्रवजन, जनांकिकीय संक्रमण तथा सम- सामयिक जनसंख्या समस्याएँ।

8. अधिवास भूगोल : अधिवास भूगोल की संकल्पना; ग्रामीण अधिवास-प्रकृति, उत्पत्ति, प्रकार एवं प्रतिरूप; नगरीय अधिवास; उत्पत्ति, प्रतिरूप, प्रक्रियाएँ एवं परिणाम; केन्द्र स्थल सिद्धान्त, नगरों का वर्गीकरण, नगरों का पदानुक्रम, नगरों की आकारिकी, ग्राम-नगर सम्बन्ध- नगरीय प्रभाव क्षेत्र एवं नगर उपान्त, भावी प्रवृत्तियाँ।

9. आर्थिक भूगोल : आधारभूत संकल्पनायें : संसाधन की संकल्पना, वर्गीकरण, संरक्षण एवं प्रबन्धन; कृषि की प्रकृति एवं प्रकार, कृषि भूमि- उपयोग के अवस्थितिपरक सिद्धान्त, विश्व के कृषि प्रदेश; प्रमुख फसलें; खनिज एवं ऊर्जा संसाधन- स्थानिक उपलब्धता, भण्डार तथा उपयोग एवं उत्पादन प्रतिरूप; विश्व ऊर्जा संकट एवं विकल्प की खोज; उद्योग : औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धान्त, प्रमुख औद्योगिक प्रदेश, प्रमुख उद्योग-लोहा तथा इस्पात, कागज, वस्त्र, पेट्रो-रसायन, स्वचालित वाहन तथा पोत निर्माण- उनके अवस्थितिक प्रतिरूप; अंतरराष्ट्रीय व्यापार, व्यापारिक प्रखण्ड, व्यापारिक मार्ग, पत्तन एवं भूमण्डलीय व्यापारिक केन्द्र, वैश्वीकरण एवं विश्व में आर्थिक विकास के सिद्धान्त एवं प्रतिरूप, संवहिनौय विकास की संकल्पना एवं उपागम।

10. राजनीतिक भूगोल : राष्ट्र एवं राज्य की संकल्पना, सीमान्त, सीमायें एवं बफर क्षेत्र, हृदयस्थल एवं

Cont..

रिमलैण्ड सिद्धान्त, संघवाद, विश्व के सम- सामयिक भू-राजनीतिक मुद्दे।

भूगोल : द्वितीय प्रश्न पत्र - भारत का भूगोल

खण्ड - (अ) भौतिक एवं मानव भूगोल

1. प्राकृतिक स्वरूप : भौमिकीय क्रम एवं संरचना, उच्चावच एवं अपवाह, मिट्टी एवं प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी अवक्रमण तथा निर्वाहीकरण, भारतीय मानसून की उत्पत्ति एवं प्रक्रिया, जलवायु प्रदेश, भौतिक प्रदेश।
2. वन्य जीव, राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य, जैव मंडल आरक्षित क्षेत्र, जैव विविधता हाट-स्पाट।
3. वेटलैंड, पर्यटन- संसाधन एवं आर्थिकी, प्राकृतिक संकट एवं आपदा तथा प्रबन्धन, पर्यावरणीय मुद्दे।
4. जनसंख्या एवं अधिवास- वितरण एवं वृद्धि, जनसंख्या की संरचनात्मक विशेषताएँ, ग्रामीण अधिवास-प्रकार, प्रतिरूप तथा आकारिकी, नगरीय अधिवास- नगरों की पहचान एवं वर्गीकरण, पदानुक्रम एवं प्रभाव क्षेत्र, नगरीकरण, नगरीय नीति, नगर नियोजन, छोटे नगरों की भूमिका, स्मार्ट सिटी तथा स्मार्ट विलेज।
5. राजनीतिक व्यवस्था- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एकता एवं विविधता, राज्य पुनर्गठन, प्रादेशिक चेतना एवं राष्ट्रीय समन्वयन, केन्द्र राज्य सम्बन्ध के भौगोलिक आधार, भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएं तथा भू-राजनीतिक समस्याएँ, भारत एवं हिन्द महासागर की भू-राजनीति, भारत एवं दक्षिण।

खण्ड- (ब) आर्थिक एवं प्रादेशिक भूगोल

6. भारतीय कृषि की विशेषताएं, बंजर भूमि की समस्याएँ एवं सुधार, फसल प्रतिरूप एवं गहनता, कृषिगत दक्षता एवं उत्पादकता, हरित क्रान्ति के प्रभाव, कृषि प्रदेश, कृषि- परिस्थितिकी प्रदेश, जोत- आकार प्रतिरूप, भूमि सुधार, सस्य संयोजन प्रदेश, कृषि का आधुनिकीकरण एवं कृषि नियोजन।
7. संसाधन- वितरण प्रतिरूप, संचित भण्डार एवं उत्पादन, खनिजों की परिपूरकता, ऊर्जा संसाधन, कोयला, पेट्रोलियम, जल विद्युत, बहुदेशीय नदी घाटी परियोजनाएँ, ऊर्जा संकट तथा विकल्प की खोज, समुद्री संसाधन, जैविक संसाधन।
8. उद्योग- औद्योगिक विकास, प्रमुख उद्योग- लोहा एवं इस्पात, वस्त्र, कागज, सीमेन्ट, उर्वरक, चीनी तथा पेट्रो- रसायन, औद्योगिक संश्लेष एवं प्रदेश, औद्योगिक नीति।
9. परिवहन एवं व्यापार - रेलमार्ग एवं सड़क तंत्र, नागरिक उड्डयन एवं जल परिवहन की समस्याएँ एवं सम्भवानाएं, अन्तरप्रादेशिक व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, प्रमुख बन्दरगाह एवं व्यापार केन्द्र, उदासीकरण।
10. प्रादेशिक विकास एवं नियोजन-प्रादेशिक विकास की समस्याएँ एवं क्षेत्रीय विकास रणनीति, बहुस्तरीय नियोजन, नियोजन प्रदेश, महानगरीय, जनजातीय, पर्वतीय, सूखा पीड़ित प्रदेशों हेतु नियोजन तथा जलागम क्षेत्र प्रबन्धन, प्रादेशिक विकास में विषमताएँ, पंचवर्षीय योजनाएँ तथा संबन्धीय विकास हेतु नियोजन।

(7) अर्थशास्त्र-प्रथम प्रश्नपत्र

खण्ड क: आर्थिक सिद्धान्त

1. अर्थशास्त्र में संतुलन, उपभोक्ता व्यवहार- गणनावचक तथा क्रमवचक प्रत्यागम, कीमत प्रभाव, माँग का नियम, माँग की लोच तथा इसके प्रकार, उपभोक्ता अतिरेक।
2. उत्पादन का सिद्धान्त : उत्पादन फलन, प्रतिफल के नियम, उत्पादन का संतुलन, लागत वक्र तथा आय वक्र।
3. बाजार की संरचना : पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकारिक प्रतियोगिता, द्वयाधिकार तथा अल्पाधिकार में कीमत निर्धारण।
4. उत्पादन के कारकों की कीमतें : मजदूरी, लगान, ब्याज तथा लाभ, सम्पत्तिभावी वितरण सिद्धान्त- रिकार्डो, मार्क्स तथा काल्डर के सिद्धान्त।
5. कल्याण अर्थशास्त्र : परेडो अनुकूलतमता, क्षतिपूरक सिद्धान्त - काल्डर, हिक्स तथा सकितोव्स्की उपागम, सामाजिक कल्याण फलन।
6. राष्ट्रीय आय : संकल्पना, अवयव तथा आकलन विधियाँ, रोजगार, आय तथा ब्याज दर निर्धारण के सिद्धान्त - क्लासिकीय, केन्सीय तथा केन्सोपरान्त (IS-LM) विचार, व्यापार चक्रों के सिद्धान्त।
7. मुद्रा : मुद्रा परिमाण सिद्धान्त - विभिन्न उपागम (डान पेटिनकिन तथा मिल्टन फ्रीडमेन सहित), मुद्रा आपूर्ति सिद्धान्त, मुद्रा गुणक, मुद्रा-स्फीति के सिद्धान्त - प्रकार तथा नियंत्रण।
8. मौद्रिक तथा बैंकिंग व्यवस्था : केन्द्रीय बैंक, वाणिज्यिक बैंक, मुद्रा तथा पूंजी बाजार के कार्य, साख निर्माण तथा साख नियंत्रण, मौद्रिक प्रबन्धन की विधियाँ।

खण्ड : ख

1. आर्थिक विकास के मापक, विकासशील राष्ट्रों में आर्थिक विकास की प्रक्रिया, गुन्नार मिर्डल तथा कुजनेट्स के आर्थिक विकास सम्बन्धी विचार।
2. नियोजन तथा आर्थिक विकास, नियोजन तथा बाजार की बदलती भूमिका, निजी तथा सार्वजनिक साझेदारी।
3. आर्थिक संवृद्धि के सिद्धान्त- हेराड डोमर माडल, लेविस का आर्थिक विकास माडल, आर्थिक संवृद्धि की दशाएँ- रोस्टोव, संतुलित तथा असंतुलित संवृद्धि सिद्धान्त।
4. मानव पूंजी तथा आर्थिक संवृद्धि, शोध व विकास एवं आर्थिक संवृद्धि, निम्न स्तरीय संतुलन जाल, क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास प्रत्यागम।
5. सार्वजनिक वित्त: सार्वजनिक वस्तुएँ एवं बाह्यताएँ : सार्वजनिक व्यय के सिद्धान्त तथा प्रभाव, करारोपण के सिद्धान्त, कराघात, करापात तथा कर विवर्तन, करों के प्रभाव।
6. राजकोषीय नीति तथा आर्थिक विकास, बजट-घाटों के प्रकार तथा उनके अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव, सार्वजनिक ऋण तथा उसका प्रबन्धन।
7. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त - तुलनात्मक लाभ, व्यापार की शर्तें तथा प्रस्ताव वक्र, व्यापार से लाभ, व्यापार संवृद्धि के इंजन के रूप में।
8. विनिमय दर निर्धारण के सिद्धान्त, भुगतान संतुलन समायोजन : वैकल्पिक विधियाँ, स्वतंत्र व्यापार बनाम संरक्षण, टटकर तथा अभ्यंश, विदेशी ऋण तथा विदेशी ऋण प्रबन्धन, अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक तथा व्यापार संस्थाएँ।

अर्थशास्त्र - द्वितीय प्रश्नपत्र

भारतीय अर्थव्यवस्था

खण्ड- क

1. अल्प विकास की मूलभूत विशेषताएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय : प्रारूप, प्रवृत्तियाँ, समग्र तथा क्षेत्रीय समिश्रण आदि, भारत में आय की विषमताएँ तथा क्षेत्रीय असन्तुलन।
2. जनसंख्या वृद्धि तथा आर्थिक विकास, भारत की जनगणनाएँ, भारत की जनसंख्या की विशेषताएँ, जनांकिकीय लाभांश तथा जनसंख्या नीति, भारत में मानव संसाधन विकास, भारत में शहरीकरण तथा आर्थिक विकास, महिला एवं आर्थिक विकास।
3. आधारिक संरचना तथा भारत में आर्थिक विकास- हाल की रणनीति तथा निष्पादन, शहरी आधारिक संरचना विकास तथा सार्वजनिक- निजी भागीदारी, ऊर्जा क्षेत्र-ऊर्जा के स्रोत: पारम्परिक तथा गैर-पारम्परिक ऊर्जा, ऊर्जा संकट।
4. भारत में प्राकृतिक संसाधन तथा आर्थिक विकास, पारिस्थितिकी असन्तुलन तथा पर्यावरणीय प्रदूषण, पर्यावरणीय अपक्षरण तथा नियंत्रण के उपाय।
5. भारतीय कृषि : उत्पादन तथा उत्पादकता, फसल प्रारूप में परिवर्तन, कृषि में संस्थागत सुधार, नवीन कृषि रणनीति, कृषि सांख तथा उपदान, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि कीमत नीति, खाद्य सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा भारतीय कृषि।
6. भारत में औद्योगिक विकास तथा संरचना : औद्योगिकीकरण की रणनीति, निजीकरण, विनिवेश, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम, औद्योगिक नीति प्रस्ताव तथा उनमें परिवर्तन, भारतीय उद्योगों में विदेशी पूंजी, प्रविधि तथा

विकास, भारत में श्रम सुधार।

7. सेवा क्षेत्र तथा भारत में विकास : महत्व तथा निष्पादन, अन्तर्राष्ट्रीय तुलना।

खण्ड - ख

1. भारत में मौद्रिक संस्थाएँ- भारतीय रिजर्व बैंक, वाणिज्यिक बैंक, बैंकिंग तथा गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएँ, भारत में मौद्रिक नीति के उद्देश्य तथा उपकरण, नयी व्यवस्था के अन्तर्गत भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका, भारत में ई-बैंकिंग।
2. भारतीय बजटीय प्रवृत्तियाँ तथा राजकोषीय नीति, संघ सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार की सार्वजनिक आय तथा सार्वजनिक व्यय के मुख्य स्रोत व प्रवृत्तियाँ, संघीय बजट में विभिन्न घाटे तथा राजकोषीय सुदृढीकरण, भारतीय कर संरचना, भारत में वस्तु तथा सेवा कर, FRBM एक्ट राजकोषीय संघवाद तथा भारत में केन्द्र- राज्य वित्तीय सम्बन्ध।
3. भारत में विदेशी व्यापार- मात्रा, संघटक तथा दिशा, भुगतान सन्तुलन की स्थिति, विदेशी व्यापार नीति तथा उपाय, रूपये की परिवर्तनीयता, कृषि निर्यात क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र आदि।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था पर TRIPS, TRIMS, GATS के निहितार्थ, भारतीय अर्थव्यवस्था तथा विश्व व्यापार संगठन : मुद्दे तथा प्रगति, भारत में विदेशी पूंजी- विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एकल ब्राण्ड तथा बहु ब्राण्ड), विदेशी संस्थागत निवेश आदि, Make in India तथा Start ups कार्यक्रम।
5. भारत में आर्थिक नियोजन- औचित्य, निष्पादन तथा मूल्यांकन, विकेन्द्रीकृत नियोजन, नीति आयोग: इसके कार्य एवं कार्यप्रणाली, संवृद्धि तथा विकास में नियोजन तथा बाजार के मध्य सम्बन्ध, स्वदेशी अवधारणा।
6. भारत में ग्रामीण विकास तथा रूपान्तरण - विभिन्न कार्यक्रम, मनरेगा, कौशल विकास कार्यक्रम- ध्येय तथा उपलब्धियाँ।
7. नयी आर्थिक नीति- द्वितीय पीढ़ी सुधार, भारत में निर्धनता तथा बेरोजगारी के मध्य सम्बन्ध, निर्धनता निवारण कार्यक्रम, ग्रामीण मजदूरी तथा ग्रामीण रोजगार, भारत में आर्थिक सुधारों की प्रगति, संघ सरकार द्वारा हाल में लिये गये कदम।

(8) समाजशास्त्र : प्रथम प्रश्नपत्र

सामान्य समाजशास्त्र (खण्ड-अ)

1. सामाजिक घटनाओं का अध्ययन एवं समाजशास्त्र के मूलभूत आधार, समाजशास्त्र का उद्भव इसकी प्रकृति तथा अध्ययन क्षेत्र। अध्ययन विधि: वस्तुनिष्ठता की समस्या एवं सामाजिक विज्ञानों में मापन सम्बन्धी विचार, निदर्शन एवं प्रकार शोध प्रारूप- वर्णनात्मक, अन्वेषणात्मक (गवेषणात्मक) तथा प्रयोगात्मक, तथ्यों के संकलन की प्रविधियाँ- अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली।
2. सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य : प्रकायवाद: रेडविलफ ब्राउन, मैलिन्स्की और मर्टन। संघर्ष सिद्धान्त: कार्ल मार्क्स, राल्फ डेहेरेनडाफ और लेविस कोजर। प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद: सी0 एच. कूले, जी0 एच0 मीड, और हर्बर्ट ब्लूमर। संरचनावाद: लेवीस्ट्रास, एस0एफ0 नेडेल, पार्सन्स एवं मर्टन।
3. समाजशास्त्र के अग्रणी विचारक : अगस्त कौत- प्रत्यक्षवाद एवं विज्ञानों का संस्तरण, हर्बर्ट स्पेंसर- सावयवी सादृश्यता एवं उद्विकास का सिद्धान्त। कार्ल मार्क्स- दृन्दात्मक भौतिकवाद एवं विरसन (वैराग्य), इमार्डल दुरखीम- श्रमविभाजन, धर्म का समाजशास्त्र, मैक्सवेबर- सामाजिक क्रिया एवं आदर्श प्रारूप।
4. सामाजिक स्तरीकरण एवं विभेदीकरण : अवधारणा, स्तरीकरण के सिद्धान्त- मार्क्स, वेबर, डेविस एवं मूर: स्वरूप, जाति एवं वर्ग, प्रस्थिति एवं भूमिका, सामाजिक गतिशीलता-प्रकार, व्यावसायिक गतिशीलता-अन्तः पीढ़ीगत तथा अन्तरापीढ़ीगत गतिशीलता।

खण्ड-ब

5. विवाह, परिवार तथा नातेदारी : विवाह के प्रकार एवं स्वरूप, सामाजिक विधानों का प्रभाव, परिवार-संरचना एवं प्रकार्य, परिवार के बदलते प्रतिमान, परिवार सत्ता एवं नातेदारी, समकालीन समाज में विवाह एवं लिंगभेद की भूमिका।
6. सामाजिक परिवर्तन एवं विकास : अवधारणा, सामाजिक परिवर्तन के कारक एवं सिद्धान्त, सामाजिक आन्दोलन एवं परिवर्तन, सामाजिक नीति एवं विकास में राज्य का हस्तक्षेप, ग्रामीण रूपान्तरण की रणनीतियाँ सामुदायिक विकास कार्यक्रम, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, ग्रामीण युवाओं हेतु स्वयं रोजगार तथा जवाहर रोजगार योजना, समावेशी विकास एवं सतत विकास।
7. आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था : संपत्ति की अवधारणा, श्रमविभाजन के सामाजिक आयाम, विनियम के प्रकार, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण एवं सामाजिक विकास, शक्ति की प्रकृति- वैयक्तिक, सामुदायिक, अभिजनोन्मुख, वर्गगत, राजनैतिक सहभागिता के स्वरूप- जनतांत्रिक एवं निरंकुश।
8. धर्म, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी : अवधारणा, परंपरागत एवं आधुनिक समाजों में धार्मिक विश्वास एवं धार्मिक भूमिकाएँ, विज्ञान का आधार, विज्ञान का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नियंत्रण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के सामाजिक परिणाम।
9. जनसंख्या एवं समाज : जनसंख्या का आकार, प्रवृत्तियाँ, गठन एवं प्रवास वृद्धि, भारत में जनसंख्या की समस्याएँ, जनसंख्या शिक्षा।

समाजशास्त्र : द्वितीय प्रश्न-पत्र

भारतीय सामाजिक व्यवस्था

1. भारतीय समाज के आधार: परंपरागत भारतीय सामाजिक संगठन-धर्म, कर्म का सिद्धान्त, आश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ एवं संस्कार। सामाजिक सांस्कृतिक गत्यात्मकता- बौद्ध, इस्लाम तथा पश्चिम का प्रभाव, निरंतरता तथा परिवर्तन के उत्तरदायी कारक।
2. सामाजिक स्तरीकरण : जाति व्यवस्था- उत्पत्ति, सांस्कृतिक संरचनात्मक दृष्टि, जाति के बदलते प्रतिमान, जाति एवं वर्ग, समानता तथा सामाजिक न्याय संबंधी विचार, भारत में कृषक एवं औद्योगिक वर्ग संरचना, मध्यम वर्ग का उदय, जनजातियों में वर्ग, दलित चेतना का उदभव एवं विकास।
3. विवाह, परिवार एवं नातेदारी : विभिन्न नृजातीय समूहों में विवाह, इसकी बदलती प्रवृत्तियाँ एवं भविष्य, परिवार- संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक पहलू, बदलते प्रतिमान, विवाह एवं परिवार पर सामाजिक विधानों का प्रभाव, नातेदारी व्यवस्था में क्षेत्रीय अन्तर एवं उसका परिवर्तित स्वरूप।
4. आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था: जजमानी व्यवस्था, भूस्वामित्व व्यवस्था, भूमिसुधार, उदासीकरण एवं वैश्वीकरण के सामाजिक आर्थिक परिणाम, आर्थिक विकास के सामाजिक निर्धारक, समावेशी विकास एवं सतत विकास, हरित क्रान्ति, जनतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था की कार्य प्रणाली एवं स्वरूप, राजनैतिक दल एवं उनकी रचना, राजनैतिक अभिजनों की संरचना, परिवर्तन एवं उन्मुखता, शक्ति का विकेन्द्रीकरण एवं राजनैतिक सहभागिता, विकास में राजनैतिक प्रभाव।
5. शिक्षा और समाज: परंपरावादी एवं आधुनिक समाज में शिक्षा के आयाम, शैक्षणिक असमानता एवं परिवर्तन, शिक्षा एवं सामाजिक गतिशीलता, समाज के कमजोर वर्गों की शिक्षा की समस्याएँ।
6. जनजातीय, ग्रामीण एवं नगरीय सामाजिक संगठन : जनजातीय समुदायों की विशिष्ट विशेषताएँ और उनका वितरण, जनजाति एवं जाति, परसंस्कृतिग्रहण, सात्मीकरण एवं एकीकरण की प्रक्रियाएँ, जनजातियों की सामाजिक समस्याएँ और अस्मिता। ग्रामीण समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम, परम्परावादी शक्ति संरचना, जनतंत्रीकरण एवं नेतृत्व, सामुदायिक विकास कार्यक्रम एवं पंचायतीराज, ग्रामीण रूपान्तरण की नवीन रणनीतियाँ। नगरीय समुदायों में परम्परागत संस्थाओं की निरंतरता एवं परिवर्तन (नातेदारी, जाति, व्यवसाय आदि) नगरीय समुदाय में वर्ग संरचना एवं गतिशीलता, नृजातीय विविधता एवं सामुदायिक एकीकरण, नगरीय पड़ोस, ग्रामीण नगरीय-भिन्नता, जनांकिकीय एवं सामाजिक सांस्कृतिक प्रचलन।
7. धर्म और समाज: विभिन्न धार्मिक समूहों का आकार, वृद्धि और क्षेत्रीय वितरण, अन्तर धार्मिक अन्तः क्रियाएँ और उसकी अभिव्यक्ति। धर्म परिवर्तन, साम्प्रदायिक तनाव, धर्म निरपेक्षता, अल्पसंख्यक पद तथा धार्मिक रूढ़िवादिता की समस्याएँ।
8. जनसंख्या की गत्यात्मकता : लिंग, आयु वैवाहिक स्थिति, प्रजननता एवं मृत्यु के सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष, जनसंख्या विस्फोट की समस्या, सामाजिक मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक। जनांकिकीय नीति एवं

Cont...

परिवार कल्याण कार्यक्रम, जनसंख्या वृद्धि के निर्धारक तत्व एवं परिणाम।

9. नारी और समाज: नारी का जनसंख्यात्मक विवरण, उनकी प्रस्थिति में परिवर्तन, विशिष्ट समस्याएँ— दहेज अत्याचार, भेदभाव, नारी एवं बच्चों के कल्याण संबंधी कार्यक्रम, घरेलू हिंसा अधिनियम-2005, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न-2013.

10. परिवर्तन एवं विकास के आयाम: सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण, सूचक प्रवृत्ति, सामाजिक परिवर्तन के स्रोत—आन्तरिक एवं बाह्य। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ—संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण। परिवर्तन के प्रेरक—जनसंचार, शिक्षा एवं सम्प्रेषण। आधुनिकीकरण एवं नियोजित परिवर्तन की समस्याएँ। नियोजन की वैचारिकी एवं रणनीति, पंचवर्षीय योजनाएँ, गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रम, पर्यावरण, बेकारी और नगरीय विकास के कार्यक्रम, सामाजिक सुधार आन्दोलन: कृषक, पिछड़ा वर्ग, महिला तथा दलित के विशेष संदर्भ में।

(9) दर्शनशास्त्र : प्रथम प्रश्न—पत्र

**दर्शनशास्त्र का इतिहास एवं समस्याएँ
(खण्ड—अ)**

1. प्लेटो : प्रत्यय—सिद्धान्त, **2. अरस्तू :** आकार, द्रव्य, कारणता, **3. डेकार्ट :** पद्धति, आत्मा, ईश्वर, मन—शरीर द्वैतवाद, **4. स्पिनोजा :** द्रव्य, गुण और पर्याय, सर्वेश्वरवाद, **5. लाइबनिज :** चिदगुण, ईश्वर, 6. लॉक : ज्ञान—सिद्धान्त, जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, द्रव्य एवं गुण, **7. बर्कले :** अमूर्त प्रत्यय का खण्डन, जड़द्रव्य का खण्डन, मूलगुण तथा गौणगुण के भेद का खण्डन, प्रत्ययवाद **8. ह्यूम :** ज्ञान— सिद्धान्त, संशयवाद, आत्मा, कारणता **9. कांट :** प्रागनुभविक एवं अनुभवजन्य ज्ञान, विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक निर्णय, संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय की सम्भावना, देश, काल एवं कोटियाँ, प्रज्ञा (रीजन) के प्रत्यय, ईश्वर—अस्तित्व—साधक युक्तियों की आलोचना **10. हेगेल :** द्वन्द्वात्मक पद्धति, निरपेक्ष प्रत्ययवाद, **11 (अ) मूर :** सामान्यगत मत का समर्थन, प्रत्ययवाद का खण्डन **11 (ब) रसेल :** वर्णन—सिद्धान्त, अपूर्ण प्रतीक, तार्किक परमाणुवाद, आणविक तथ्य। **12. विट्गेन्स्टाइन :** सरल तर्कवाक्य, अर्थ का चित्र—सिद्धान्त, कथन एवं निदर्शन का भेद **13. तार्किक भाववाद :** सत्यापन सिद्धान्त, तत्वमीमांसा का निरसन, अनिवार्य तर्कवाक्यों का भाषायी सिद्धान्त **14. संवृत्तिशास्त्र :** हुसल—संतुत्तिशास्त्रीय प्रणाली, चेतना की विषयापेक्षा। **15. अस्तित्ववाद :** (किर्कगार्ड एवं सात्र)— अस्तित्व एवं सार, स्वतन्त्रता एवं चयन, उत्तरदायित्व एवं प्रामाणिक अस्तित्व, **16. वॉर्डन :** आमूल अनुवाद, **17. स्ट्रासन :** व्यक्ति— सिद्धान्त।

खण्ड—ब

1. चार्वाक : ज्ञान— सिद्धान्त, भौतिकवाद, **2. जैनदर्शन :** सत् का सिद्धान्त, स्याद्वाद तथा सप्तभंगीनय, बन्धन एवं मोक्ष, **3. बौद्धदर्शन :** प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणिकवाद, नैरात्म्यवाद, बौद्धदर्शन के सम्प्रदाय, **4. सांख्य— योग :** प्रकृति, पुरुष, कारणता—सिद्धान्त, मोक्ष, अष्टांगयोग, चित्तभूमि, ईश्वर, **5. न्याय—वैशेषिक :** प्रमाण, आत्मा, मोक्ष, ईश्वर तथा ईश्वर के अस्तित्व के लिये युक्तियाँ, पदार्थ, कारणता—सिद्धान्त, परमाणुवाद, **6. मीमांसा :** ज्ञान— सिद्धान्त, प्रमा, प्रमाण, स्वतःप्रामाण्यवाद, **7. वेदान्त :** शंकर, रामानुज एवं मध्व—ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा, जीव, जगत्, माया, अविद्या, अध्यास, मोक्ष।

दर्शनशास्त्र: द्वितीय प्रश्न पत्र (सामाजिक— राजनैतिक दर्शन एवं धर्म—दर्शन)

(खण्ड—अ)

1. सामाजिक और राजनैतिक आदर्श: समानता, न्याय, स्वतंत्रता 2. संप्रभुता, 3. व्यक्ति तथा राज्य, 4. लोकतंत्र: अवधारणा तथा प्रकार, 5. समाजवाद तथा मार्क्सवाद, 6. मानववाद, 7. धर्मनिरपेक्षतावाद, 8. बहुसंस्कृतिवाद, 9. दण्ड के सिद्धान्त, 10. हिंसा, अहिंसा, सर्वोदय, 11. लिंग—समानता, 12. वैज्ञानिक दृष्टि एवं प्रगति, 13. पारिस्थितिकी—दर्शन।

(खण्ड—ब)

1. धर्म, धर्मशास्त्र तथा धर्म दर्शन, 2. धर्म तथा नैतिकता, 3. ईश्वर विषयक अवधारणाएँ : वैयक्तिक, अवैयक्तिक, प्रकृतिवादी, 4. ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण, 5. आत्मा की अमरता, 6. मोक्ष, 7. धार्मिक ज्ञान : बुद्धि, देवी प्रकाशना तथा रहस्यवाद, 8. ईश्वर विहीन धर्म, 9. अशुभ की समस्या, 10. धार्मिक सहिष्णुता।

(10) भू— विज्ञान : प्रश्नपत्र— प्रथम

सामान्य भू— विज्ञान, भू आकृति, संरचना भू— विज्ञान, जीवाश्म विज्ञान और स्तरिकी

1. सामान्य भू— विज्ञान — ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति। सौर मण्डल के ग्रह। पृथ्वी की आंतरिक संरचना। शैलों की आयु निर्धारण की विभिन्न विधियाँ एवं पृथ्वी की आयु। ज्वालामुखी: प्रकार, कारण, एवं उत्पाद, ज्वालामुखी पिट्टियाँ। भूकम्प : कारण, प्रभाव एवं वितरण। द्वीप चाप, समुद्री खाइयों एवं मध्य महासागरीय कटक, महाद्वीपीय विस्थापन, समुद्र तल विस्तारण तथा प्लेट विवर्तनी। महाद्वीपों एवं महासागरों की उत्पत्ति। **2. भू— आकृति विज्ञान—**अपक्षय एवं अपरदन। भूआकृतिक प्रक्रियाएँ एवं भूआकृति चक्र। उच्चावच लक्षण एवं इनका संरचनाओं एवं आभिकी से सम्बन्ध। भारत के भूआकृतिक लक्षण। प्रवाह प्रणाली एवं उनका महत्व। वायु, नदी, हिमनद, समुद्रतटीय एवं कार्स्ट प्रक्रियाएँ एवं स्थलरूप।

3. संरचनात्मक भूविज्ञान— प्रतिबल तथा विकृति की अवधारणा। विकृति सूचक। 2— एवं 3— विमाओं में विकृति एवं उनका भूवैज्ञानिक महत्व। बलन, भ्रंश, एवं संघियों की ज्यामिति एवं वर्गीकरण। विषम विन्धास प्रकार एवं महत्व। रेखीय एवं तलीय संरचनाएँ और उनका महत्व। भारत के प्रमुख विवर्तनिक लक्षण।

4. जीवाश्म विज्ञान— सूक्ष्म— एवं स्थूल— जीवाश्म, सूचक जीवाश्म, विस्थापिक जीवाश्म एवं उनका महत्व। जीवाश्मों के परिवरण की परिस्थितियाँ। बाईवाल्ड, गैस्ट्रोपाड, ऐमोनाइड, ब्रैकियोपाड, ट्राइलोबाइट, एकिनोइड तथा प्रवाल की आकृति, विकासीय प्रवृत्ति एवं भूवैज्ञानिक वितरण। कालानुक्रम में कशेरुकी जीवन। घोड़े एवं हाथी का विकास। गोंडवाना वनस्पति एवं उनका जीवाभिकीय महत्व।

5. स्तरिकी— स्तरिकी के सिद्धान्त, स्तरिकीय वर्गीकरण, नामकरण, भू— वैज्ञानिक कालानुक्रम। भारत के विभिन्न भूवैज्ञानिक शैलसमूहों की आभिकी, वितरण, जीवाभिकारिता तथा आर्थिक महत्व (धारवाड़ सुपरग्रुप, कडप्पा सुपरग्रुप, विन्ध्यन सुपरग्रुप, डेक्कन ट्रैप एवं शिवालिक सुपरग्रुप)।

भू—विज्ञान : प्रश्नपत्र—द्वितीय

क्रिस्टलविज्ञान, प्रकाशीय खनिज विज्ञान, खनिज विज्ञान, शैल विज्ञान, आर्थिक भू— विज्ञान एवं अनुप्रयुक्त भूविज्ञान।

1. क्रिस्टल विज्ञान— क्रिस्टलीय एवं अक्रिस्टलीय ठोस, त्रिविम समूह, जालक। क्रिस्टलों का 32 सममिति वर्गों में वर्गीकरण। मिलर, वाइस, हरमन— मोगेन प्रतीक। अक्षीय, अभिलक्षण। घनीय, टेट्रागोनल, हेक्सागोनल, आर्थोरोम्बिक, एकनाताक्ष, एकत्रिनताक्ष समूहों के सामान्य वर्ग के सममिति अवयव एवं आकृतियाँ। यमलन एवं यमलन नियम। क्रिस्टल विसंगतियाँ। क्रिस्टल विज्ञान में एक्सरे विवर्तन का अनुप्रयोग।

2. प्रकाशीय खनिज विज्ञान— प्रकाशिकी के सामान्य सिद्धान्त। समदैशिकता तथा असमदैशिकता। सामान्य पोलेराइज्ड प्रकाश एवं क्रॉस पोलर्स में खनिजों के प्रकाशीय गुण। प्रकाशीय इण्डीकेट्रिक्स।

3. खनिज विज्ञान— क्रिस्टल रसायन के अवयव। खनिजों में प्रकीर्णन। बंधों के प्रकार, आयोनिक त्रिज्या, समन्वय संख्या, समरूपिता, बहुरूपिता तथा कूटरूपिता। सिलिकेटों का संरचनात्मक वर्गीकरण। शैल निर्माणकारी खनिजों के भौतिक, रासायन एवं प्रकाशीय गुणों का अध्ययन (ओलीविन, एम्फीबोल, फेल्डस्पार, फेल्डस्पैथायड, क्वार्ट्ज गार्नेट, माइका तथा एल्यूमिनों— सिलिकेट)।

4. शैल विज्ञान— मैग्मा— उत्पत्ति तथा भौतिक गुण। एक—दो—एवं तीन— कम्पोनेन्ट फेज, डायग्राम। अल्बाइट— एनोर्थाइट, पेरिक्लेज—सिलिका, डायप्साइड— अल्बाइट— एनोर्थाइट प्रक्रम एवं उनकी उपयोगिता। बावेन का अभिक्रिया सिद्धान्त। मैग्मीय विभेदन तथा स्वांगीकरण। आग्नेय शैलों का गठन, संरचना तथा वर्गीकरण। भारतीय उदाहरणों के साथ ग्रेनाइट, बेसाल्ट, अल्कलाइन, अल्ट्रामैफिक, एनार्थासाइट एवं चार्नोकाइट आग्नेय शैलों का अध्ययन। अवसादी शैलों के निर्माण की प्रक्रियाएँ। डायजेनेसिस तथा लिथिफिकेशन। अवसादी शैलों का गठन एवं संरचना तथा उनका महत्व। अवसादी शैलों का वर्गीकरण। क्लास्टीक एवं नान क्लास्टीक। भारी खनिज तथा उनका महत्व। निक्षेप पर्यावरण, अवसादी संलक्षणी तथा उदगम क्षेत्र की प्रारम्भिक अवधारणाएँ। अवसादी शैलों की शैल वर्णना (कांग्लोमेरेट, ब्रेक्चिया, सैंडस्टोन, आर्कोज, ग्रेवेक, शेल, लाइमस्टोन एवं बी0एच0क्यू0। वेन्टर्थ पैमाना। कार्यान्तरी प्रक्रियायें तथा कार्यांतरण के प्रकार, कार्यान्तरण की कोटियाँ, जोन तथा संलक्षणी, ACF, AKF तथा AFM आरेख। कार्यांतरित शैलों का

गठन, संरचना तथा नामकरण। प्रमुख कायन्तरित शैलों की शैल वर्णना तथा शैल जनन। जियोलाइट, ग्रीनशिस्ट, एम्फीबोलाइट, ग्रैनुलाइट एवं इक्लोगाइट संलक्षणियों का विवरण।

5. आर्थिक भूविज्ञान —अयस्क खनिज, गैंग तथा टेनर। खनिज निक्षेपों के निर्माण की प्रक्रियाएँ। अयस्क संहतियों की आकृति एवं संरचना। अयस्क निक्षेपों का वर्गीकरण। अयस्क स्थानीकरण के नियंत्रण। मैटैलोजेनी। धात्विक एवं अधात्विक खनिज निक्षेपों का अध्ययन। भारत के तेल, प्राकृतिक गैस एवं कोयला क्षेत्रों का अध्ययन। उत्तर प्रदेश की खनिज सम्पदा। खनिज अर्थशास्त्र, राष्ट्रीय खनिज नीति, खनिजों का संरक्षण तथा उपयोगिता।

6. अनुप्रयुक्त भूविज्ञान— पूर्वक्षेप एवं अन्वेषण तकनीकी की मूल आवश्यकताएँ। खनन के प्रमुख सिद्धान्त। सैंपलिंग, खनिज सज्जीकरण। अभियन्त्रण कार्य, बांध, सुरंग, सेतु तथा सड़कों हेतु भूवैज्ञानिक कसौटियाँ। मृदा विज्ञान एवं भूजल विज्ञान के मूल तत्व। एरियल फोटो तथा उपग्रह चित्रों का भूवैज्ञानिक अन्वेषणों में उपयोग।

(11) मनोविज्ञान प्रथम प्रश्न—पत्र

मूलभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रम

1. मनोविज्ञान : परिचय, विषय वस्तु, विज्ञान में मनोविज्ञान का स्थान, सैद्धान्तिक उपागम, उद्दीपन—अनुक्रिया, मानवतावादी, संज्ञानात्मक एवं सूचना प्रक्रमण।

2. विधियाँ : प्रवृत्त संकलन की विधियाँ, प्रकृतिवादी निरीक्षण तथा साक्षात्कार, व्यक्तिवृत्त, परीक्षण, मापनियं तथा प्रश्नावली।

3. व्यवहार के जैविक आधार : केन्द्रीय, परिधीय तथा स्वायत्त तन्त्रिका—तंत्र की रूप रेखा, मस्तिष्क के प्रकारों का स्थानीकरण, प्रमस्तिष्कीय गोलार्धों की विशिष्टताएँ, तन्त्रिका आवेग एवं उनका संवहन, सग्राहकों की व्यवस्था, अन्तःस्त्रावी तन्त्र एवं शारीरिक वृद्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण में उसकी भूमिका।

4. व्यवहार की उत्पत्ति तथा विकास : प्रजननात्मक आधार, पर्यावरणीय कारक, बालपोषण, वंचन, सांस्कृतिक कारक, पेशीय तथा कौशल विकास, भाषा विकास।

5. अवधान एवं प्रत्यक्षपरक प्रक्रियाएँ : क्लासिकी मनोभौतिकी तथा संकेत संज्ञापन सिद्धान्त, अवधानात्मक प्रक्रियाएँ, चयनात्मक अवधान तथा संघृत अवधान, प्रात्यक्षिक संगठन, आकृति, वर्ण तथा गहराई के प्रत्यक्षण, प्रत्यक्षपरक स्थैर्य, स्थिरता— अस्थिरता विरोधाभास, प्रत्यक्षपरक संवेदनशीलता तथा प्रत्यक्षात्मक सुरक्षा: केन्द्रीय निर्धारक।

6. अधिगम प्रक्रियाएँ: अनुबन्धन: क्लासिकी, नैमित्तिक एवं प्रेक्षणात्मक, वाचिक अधिगम, विधियाँ एवं प्रक्रम, विलोपन, विभेदन तथा सामान्यीकरण।

7. स्मृति : कूटसंकेतन— संरचनात्मक, ध्वन्यात्मक तथा शब्दार्थ विषयक द्वैत कूट संकेतन, संवेदी, स्मृति, अल्पकालिक, दीर्घकालिक स्मृति, वृत्तात्मक, शब्दार्थ विषयक तथा प्रक्रियात्मक, रचनात्मकता स्मृति, विस्मरण: के सिद्धान्त।

8. समस्या समाधान, तर्कना तथा चिन्तन : समस्या समाधान के प्रक्रम तथा निर्धारक आगमनात्मक तथा नियमनात्मक, तर्कना, परिकल्पना परीक्षण, भाषा तथा विचारण, ह्वोर्फियन विचार तथा उनकी समालोचना, चिन्तन में सूचना प्रक्रमण।

9. संवेग : स्वरूप तथा विकास, संवेग के सिद्धान्त—देहिक, संज्ञात्मक तथा विरोधी प्रक्रम, संवेग के संकेतक, संवेगों की पहचान।

10. अभिप्रेरण : अभिप्रेरित व्यवहारों के मानदंड, अभिप्रेरणा, प्रक्रम एवं प्रकार, अभिप्रेरणा का मापन, बहिरस्थ बनाव आन्तस्थ अभिप्रेरणा।

11. मनोवैज्ञानिक प्रकाश्यों में वैयक्तिक विभिन्नार्थ : सामान्य मानसिक योग्यता : सैद्धान्तिक उपागम: स्मरण, थर्सटन, गिलफर्ड, जेन्सन वर्नन, स्टर्नवर्ग और जे0पी0 दास तथा पियाजे, सृजनशीलता तथा सृजनात्मक चिन्तन।

मनोविज्ञान द्वितीय प्रश्न—पत्र

अनुप्रयुक्त परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान

1. अनुप्रयुक्त विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान : अनुप्रयुक्त बनाव मूलभूत विज्ञान, मनोविज्ञान का स्वरूप एवं क्षेत्र—सामाजिक, सामुदायिक, औद्योगिक, विद्यालयी, स्वास्थ्य तथा पर्यावरणीय।

2. वैयक्तिक भिन्नताएँ एवं मापन : व्यक्तिगत भिन्नताओं का स्वरूप एवं स्रोत, मनोविज्ञानिक मापनीकरण परीक्षण निर्माण एवं मानकीकरण, विश्वसनीयता एवं वैधता, मानक क्रॉस वैधीकरण।

3. व्यक्तित्व मूल्यांकन : व्यक्तित्व मूल्यांकन के मुद्दे, आत्म अभिलेख माप, प्रेक्षक तकनीक, अनुक्रिया शैलियाँ, टी ए टी, रोशार्क तथा एम0एम0पी0आई0, जैसे महत्वपूर्ण मापकों से परिचय।

4. मनोवैज्ञानिक विकृतियों एवं मानसिक स्वास्थ्य : मानसिक विकृतियों का वर्गीकरण (डी एस एम चतुर्थ) मनोस्नायुविक, मनोविदलन एवं मनोदैहिक विकृतियों के लक्षण एवं उनकी उत्पत्ति, प्रतिबल का प्रवारण एवं मानसिक स्वास्थ्य।

5. सामाजिक समस्या एवं मनोविज्ञान: अभिवृत्ति एवं पूर्वाग्रह: संज्ञानात्मक एवं अभिप्रेणात्मक स्रोत, सामाजिक पूर्वाग्रह का निवारण, सामाजिक अन्तर्द्वन्द्व: कारण एवं समाधान।

6. सामाजिक प्रभाव: प्रभाव, नियंत्रण तथा शक्ति, प्रभाव के आधार, सामाजिक सुगमीकरण समूहों के नेतृत्व निष्पादन में समूह सम्बन्धी कारक।

7. उद्योगों एवं संगठनों में मनोविज्ञान : कर्मचारी चयन, प्रशिक्षण एवं निष्पादन आकलन, संकृत्य सम्बन्धी अभिवृत्तियों एवं व्यवहार, संगठनों में अभिप्रेणात्मक संरूप, संगठनात्मक संप्रेषण, संगठनात्मक प्रभावोत्पादकता।

8. शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान : विद्यालय सामाजीकरण के अभिकर्ता के रूप में, विद्यालयी बच्चों का अधिगम, अभिप्रेरणा तथा संवेगिक समस्याएँ, शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक, शैक्षणिक निष्पादन में सुधार हेतु हस्तक्षेप, विशिष्ट श्रेणी के बच्चों की शिक्षा।

9. नैदानिक परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान: मनोचिकित्सा का स्वरूप एवं लक्ष्य, मनोविश्लेषणात्मक व्यक्ति केन्द्रित चिकित्सा, समूह तथा व्यवहार मनोचिकित्साएँ, सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य, बीमारी रोक—थाम एवं स्वास्थ्य प्रवर्तन।

10. पर्यावरणीय मनोविज्ञान : व्यवहार में पर्यावरण की भूमिका, वैयक्तिक स्थान, ध्वनि प्रदूषण, भीड़ तथा वायुमण्डलीय प्रदूषण का प्रभाव, निषेधात्मक प्रभावों को कम करने हेतु हस्तक्षेप।

(12) वनस्पति विज्ञान : प्रथम प्रश्न—पत्र

सूक्ष्म जीव विज्ञान, रोग विज्ञान, पादप विविधता तथा आकृति जनन

1. सूक्ष्मजीवी विज्ञान— सूक्ष्मजीव विविधता, वायु जल तथा मृदा सूक्ष्म विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान, सूक्ष्मजीव संक्रमण तथा रोध क्षमता विज्ञान का सामान्य विवरण, कृषि, उद्योग, औषधि तथा पर्यावरण के विशेष संदर्भ में सूक्ष्मजीव विज्ञान के अनुप्रयोग।

2. पादप रोग विज्ञान— संक्रमण की विधि, बचाव प्रक्रिया, पादप बीमारियों का रोक—थाम विषाणु, जीवाणु कवक तथा गोलकृमि द्वारा उत्पन्न महत्वपूर्ण पादप रोग: तम्बाकू का मोजैक, पपीते की पत्तियों का कर्ल, सिट्रल वैहकर, गेहूँ का रस्ट, जौ का स्मट, आलू का पिछैती अंगमारी, गन्ने का लाल विगलन, गेहूँ की इयर काकल, बाजरा का इरगट, धनिया का स्टेम गाल अरहर की म्लानि के विशेष संदर्भ में।

3. पादप विविधता— विषाणु जीवाणु, शैवाल कवक, ब्रायोफाइटा, टेरिडोफाइटा तथा अनावृतबीजी जीवाश्म सहित का वर्गीकरण, संरचना, प्रजनन, जीवन चक्र तथा आर्थिक महत्व।

4. आकारिकी:— जड़, तना, पत्ती, फूल, फूल की आकारिकी, द्वितीयक वृद्धि।

5. श्रूण विज्ञान— लघु बीजाणुधानी, लघुबीजाणुजनन, नरयुग्मकोदिभद, गुरु बीजाणु धानी, गुरु बीजाणु जनन

Cont..

<p>तथा मादा— युग्मकोदिभद निषेचन, भ्रूण तथा भ्रूणपोश का विकास।</p> <p>6. वर्गीकरण— वर्गीकरण के सिद्धान्त, आवृतबीजी के वर्गीकरण की पद्धतियाँ (बेन्थम एवं हुकर, तख्ताजान) वनस्पतिक नामकरण के नियम, कीमोटैक्सानामी, रैननकुलेसी, मैग्नोलियेसी, ब्रैसिकेसी, मालवेसी, फेबेसी, रोजेसी, एपियेसी, कुकरबिटेसी, एस्टेरेसी, रूबीऐसी, एपोसाइनेसी सोलनेसी, ऐकैनेथेसी, वर्बीनेसी, लैमिनेसी, यूफोबॉयेसी, एरीकेसी, ऑर्किडेसी, पोएसी।</p> <p>7. आकृति जनन— सहसम्बन्ध, ध्रुविता, सममितित, पूर्णशक्तिता, ऊतको एवम् अंगो का विभेदन तथा पुनरुत्पादन कोशिका, ऊतक, अंग तथा जीवद्रव्यक संबर्द्धन की विधियाँ और अनुप्रयोग। सोमाक्लोनल विभिन्नता कायिक संकर तथा कोशिका द्रव्य संकर।</p> <p style="text-align: center;">वनस्पति विज्ञान : द्वितीय— प्रश्न पत्र</p> <p>कोशिका जीव विज्ञान, अनुवंशिकी कार्यिकी, जैव रसायन, परिस्थितिकी तथा आर्थिक वनस्पति विज्ञान</p> <p>1. कोशिका जीव विज्ञान— कोशिका जीवन की संरचना एवं कार्य की इकाई के रूप में असीम केन्द्रिकी तथा संसीम केन्द्रिकी कोशिकाओं की अतिसूक्ष्म संरचना, प्लाज्मा, झिल्ली, एण्डोप्लाज्मिक रेटिकुलम, हरित लवक, माइटोकॉण्ड्रिया राइबोसोम, गाल्जीकाय तथा केन्द्रक की संरचना एवं कार्य, कोशिका चक्र का विस्तृत अध्ययन, सुत्री एवम् अद्विसूत्री विभाजन गुणसुत्रों में संख्यात्मक एवम् रचनात्मक परिवर्तन तथा उनके कोशिका विज्ञानिक तथा आनुवंशिक प्रभाव।</p> <p>2. आनुवंशिकी— मेण्डल के वंशागति के नियम, जीनों की अन्योन्य अधामन क्रिया, सहलग्नता तथा जीन विनियम, कवकों, जीवाणुओं और विशाणुओं में आनुवंशिक पुनर्योजन, जीन प्रतिचित्रण, लिंग सहलग्नता लिंग निर्धारण कोशिका द्रव्यीय वंशागत, पाल्जमीडस अनुवंशिकी तथा जीन की संकल्पना आनुवंशिकी कोड।</p> <p>3. आणविक आनुवंशिकी — डी एन ए आनुवंशिक पदार्थ के रूप में डी एन ए की संरचना तथा प्रतिकृति, प्रोटीन संश्लेषण में न्यूक्लीयिक अम्लों का कार्यभार (ट्रान्सक्रिप्शन तथा ट्रान्सलेशन) और जीन अभिव्यक्ति का विनियमन, उत्पत्तिवर्तन और विकास, डी एन ए विकृत एवम् सुधार जीन प्रवर्धन, जीन पुनर्विन्यास और ऑन्कोजीन। आनुवंशिक अभियांत्रिकी: रेस्ट्रिक्शन एन्जाइम, क्लोनिंग जीन वाहक (PBR-322, PT1 लेम्बडा-फाज) पुनर्संयोजित डी एन ए जीन स्थानान्तरण, आनुवंशिक अभियांत्रिकी का मानव कल्याण में अनुप्रयोग।</p> <p>4. कार्यिकी और जैव रसायन— पादपों का जलसंबंध, अवशोषण, जल संवहन और वाष्पोत्सर्जन, खनिज पोषण और आयन अभिगमन, प्रकाश, संश्लेषित पदार्थों का स्थानान्तरण, आवश्यक माइक्रो तथा मैक्रो तत्व और उनके कार्य। कार्बोहाइड्रेट्स की रसायनिकी और वर्गीकरण, प्रकाश संश्लेषण: क्रिया विधि, प्रकाश संश्लेषण को प्रभावित करने वाले कारक, C3 तथा C4 चक्र प्रकाश श्वसन, प्रकिण्व तथा सहप्रकिण्व, प्रकिण्व की क्रिया विधि, गौड़ उपपत्ती (एल्केलॉयड, स्टीरॉयड, टर्पीन्स, लिपिड) पादप श्वसन तथा किण्वन, नाइट्रोजन योगिकीकरण तथा नाइट्रोजन उपपचय, प्रोटीन की संरचना और संश्लेषण, पादप वृद्धि गतियाँ तथा जीर्णता, वृद्धि हॉर्मोन, वृद्धि विनियमन और उनकी रासायनिक प्रकृति कृषि एवम् उद्योग कृषि में उनका कार्यभार और महत्त्व, पुष्पन की कार्यिकी, लैंगिक अनिशोच्यता, बीज का अंकुरण और प्रसुप्ति।</p> <p>5. पारिस्थितिकी — पारिस्थितिकी का विस्तार, पारिस्थितिकी कारक, पादप समुदाय और पादप अनुक्रमण, जीवमण्डल की संकल्पना, अजैविक और जैविक घटक, पारिस्थिति तंत्र संरचना और कार्य, पारिस्थितितंत्र में ऊर्जा का प्रवाह। पारिस्थितिकी की अनुप्रयोगिक अभिमुखतायें— प्राकृतिक संपदा और उसका संरक्षण संकटापन्न और विशेष क्षेत्री टैक्सा, प्रदुषण और उसका नियंत्रण।</p> <p>6. आर्थिक वनस्पति विज्ञान — पादपों का भोजन, तन्तु टिम्बर, औषध, रबर, पेय पदार्थ, मसाले, रेजिन और गोंद रंजक, वाष्पशील तेल, कीटनाशी जैव उर्वरक, अलकारक पादप, ऊर्जारोपण तथा पेट्रोलियम के स्रोत के रूप में।</p>	<p>12. राजनयिक तथा कासुंलीय प्रतिनिधि।</p> <p>13. संधियों : निर्माण उपयोजन तथा पर्यवसान।</p> <p>14. राज्य उत्तरदायित्व।</p> <p>15. संयुक्त राष्ट्र उद्देश्य और सिद्धान्त, प्रमुख अंग, उनकी शक्तियाँ और कार्य।</p> <p>16. अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के शान्तिपूर्ण निपटारे की रीतियाँ।</p> <p>17. बल का विधिपूर्ण अवलम्ब: आक्रमण, आत्मरक्षा और हस्तक्षेप।</p> <p>18. परमाणु अस्त्रों के प्रयोग की वैधता, परमाणु और रासायनिक अस्त्रों के परीक्षण पर रोक, परमाणवीय अप्रसार सन्धि, सी0टी0एस0टी0।</p> <p>19. अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, राज्य प्रवर्तित आतंकवाद, अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय</p> <p>20. नव अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था और मौद्रिक विधि: विश्व व्यापार संगठन, टी0आर0आई0पी0एस0, गैट, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक</p> <p style="text-align: center;">विधि: द्वितीय—प्रश्न—पत्र</p> <p>(क) अपराध विधि — (अ) अपराध की संकल्पना, आवश्यक तत्व, अपराध की तैयारी एवं प्रयत्न (ब) भारतीय दण्ड संहिता।</p> <ol style="list-style-type: none"> साधारण अपवाद,। संयुक्त एवं आन्वयिक दायित्व। दुष्प्रेरण। आपराधिक षडयन्त्र। राज्य के विरुद्ध अपराध। लोक शांति के विरुद्ध अपराध। मानव शरीर के विरुद्ध अपराध। संपत्ति के विरुद्ध अपराध। महिलाओं के विरुद्ध अपराध। मानहानि। सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955। भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम 1988। <p>(ख) अपकृत्य विधि—</p> <ol style="list-style-type: none"> अपकृत्य—दायित्व की प्रकृति। दोष पर आधारित दायित्व एवं कठोर दायित्व। सांविधिक दायित्व। राज्य दायित्व सहित प्रतिनिहित दायित्व। सामान्य प्रतिरक्षा। संयुक्त अपकृत्य कर्ता। उपेक्षा। उपचार। मानहानि। उपताप (न्यूसेंस)। षडयन्त्र। मिथ्या कारावास तथा विद्वेषपूर्ण अभियोजन। <p>(ग) संविदा विधि एवं वाणिज्यिक विधि—</p> <ol style="list-style-type: none"> संविदा का स्वरूप और निर्माण/ई—संविदा। मानक रूपसंविदा। सम्मति दूषित करने वाले कारक। शून्य, शून्यकरणीय, अवैध और अप्रवर्तनीय संविदायें। संविदाओं का अनुपालन। संविदात्मक दायित्व का उन्मोचन। संविदा नैराध्य। संविदा कल्प। संविदा भंग के विरुद्ध उपचार। क्षतिपूर्ति (इन्डेमिन्टी), गारंटी एवं बीमा संविदा। अभिकरण की संविदा। माल विक्रय तथा अवक्रय (हायर परचेज)। भागीदार का निर्माण, दायित्व तथा विघटन। परक्राम्य लिखित अधिनियम, 1881। <p>(घ) समकालीन विधिक विकास—</p> <ol style="list-style-type: none"> जनहित याचिका की अवधारणा तथा पर्यावरण विधि। सूचना का अधिकार अधिनियम — 2005। वैकल्पिक विवाद समाधान—संकल्पना, प्रकार/संभावनाएं। प्रतियोगिता विधि के लक्ष्य, उद्देश्य तथा मुख्य विशेषताएं। अभिवचन सौदा। सूचना प्रौद्योगिक अधिनियम—2000 के अन्तर्गत दीवानी दायित्व (धारायें 43 से 64) तथा आपराधिक दायित्व (धारायें 65 से 75)।
<p style="text-align: center;">(13) विधि प्रथम प्रश्न—पत्र</p> <p style="text-align: center;">(खण्ड—अ) संवैधानिक विधि एवं प्रशासनिक विधि</p> <ol style="list-style-type: none"> संविधान सांविधानिक विधि, सांविधानिक परिपाटियाँ, संविधानवाद भारतीय संविधान के मुख्य तत्व तथा प्रकृति संघवाद, अध्यक्षीय बनाम संसदीय प्रकार की सरकार, शक्ति पृथक्करण का सिद्धान्त, विधि का शासन मौलिक अधिकार: प्रकृति तथा राज्य के नीति निदेशक तत्व एवं मौलिक दायित्वों से सम्बन्ध। मौलिक अधिकार तथा मानवाधिकार विशिष्टतः, समता का अधिकार, भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार, प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार, धर्म, संस्कृति एवं शिक्षा संबंधी अधिकार, सांविधानिक उपचार का अधिकार, सूचना का अधिकार, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, महिलाओं तथा बच्चों के अधिकार राष्ट्रपति की सांविधानिक स्थिति तथा मंत्रिपरिषद से उसके सम्बन्ध, राज्यपाल की सांविधानिक स्थिति तथा उसकी शक्तियाँ उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालय: उनकी शक्तियाँ तथा अधिकारिता, जनहितवाद संघ तथा राज्यों के मध्य विधायी शक्तियों का वितरण, संघ, राज्यों तथा स्वायत्त संस्थाओं के प्रशासनिक एवं वित्तीय सम्बन्ध। नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त: उभरते आयाम तथा न्यायिक प्रवृत्तियाँ। प्रत्यायोजित विधान, इसकी सांविधानिकता तथा इस पर न्यायिक एवं विधायी नियंत्रण। संघ तथा राज्यों के अधीन सेवार्ये: नियुक्तियाँ, सेवा शर्तें तथा सांविधानिक सुरक्षा। संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग: कार्य तथा शक्तियाँ आपात उपबन्ध निर्वाचन आयोग कार्य तथा शक्तियाँ संसदीय विशेषाधिकार एवं उन्मुक्तियाँ संविधान का संशोधन अम्बुड्समैन: लोकपाल, लोक आयुक्त इत्यादि <p style="text-align: center;">(खण्ड—ब) अन्तर्राष्ट्रीय विधि</p> <ol style="list-style-type: none"> अन्तर्राष्ट्रीय विधि की प्रकृति। स्रोत: संधि, रुढ़ि सम्य राष्ट्रों द्वारा मान्यता प्राप्त विधि के साधारण सिद्धान्त, विधि निर्धारण के लिये समनुशंगी साधन। अन्तर्राष्ट्रीय विधि और राष्ट्रीय विधि के बीच सम्बन्ध, भारतीय संविधान में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा का परिवर्धन और अन्तर्राष्ट्रीय करारों को प्रभावी करने सम्बन्धी विधायन के उपबन्ध। राज्य मान्यता और राज्य उत्तराधिकार। राज्यों के राज्य क्षेत्र: अर्जन और खोने की रीतियाँ। समुद्र: अन्तर्देशीय जल मार्ग, क्षेत्रीय समीपस्त क्षेत्र, महाद्वीपीय उपतट, अनन्य आर्थिक परिक्षेत्र तथा राष्ट्रीय अधिकारिता से परे समुद्र। आकाशीय क्षेत्र तथा विमान संचालन। वाह्य अन्तरिक्ष: वाह्य अन्तरिक्ष की खोज तथा उपयोग। व्यक्ति, राष्ट्रीयता, राज्यहीनता, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकारवादी विधि के मौलिक सिद्धान्त—अन्तर्राष्ट्रीय प्रसंविदायें और समसामयिक विकास, मानवाधिकार और राष्ट्रीय विधि में इसका प्रवर्तन—राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग राज्यों की अधिकारिता, अधिकारिता का आधार, अधिकारिता से उन्मुक्ति। प्रत्यर्पण तथा आश्रय। 	<p style="text-align: center;">(14) पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान:</p> <p style="text-align: center;">प्रथम प्रश्न—पत्र</p> <p style="text-align: center;">(भाग—अ)</p> <p>(अ) पशु पोषण : रोमन्थी एवं अरोमन्थी पशुओं में पाचन क्रिया, पोषक तत्वों की दुग्ध उत्पादन के लिये आवश्यकतायें, पोषक तत्व एवं उनके पशु शरीर में कार्य, खाद्य पदार्थों का वर्गीकरण, खाद्य मानक, आहार के सिद्धान्त और संतुलित आहार की गणना, साईंलेज एवं 'हे' के रूप में चारों का संरक्षण, निम्न गुणवत्ता वाले चारों का उपचार, पाचन क्रिया में विकरों का कार्य, महत्त्व, खनिज पोषण: पशुओं के लिये खनिज का स्रोत, कार्य, कमी के लक्षण व आवश्यकताएं, विटामिन: पशुओं के लिये इनका स्रोत, कार्य, कमी के लक्षण, आवश्यकताएं, न्यासर्गी (हारमोन्स): न्यासर्गी का उत्पादन एवं प्रजनन में कार्य, काब्रोहाइड्रेट्स, प्रोटीन एवं लियेडस (वसा) का उपापचयन, खाद्य योगिक एवं योगज क्षेत्र एवं कमी के लक्षण, आवश्यकताएं, प्रोबायोटिक एवं प्रोबायोटिक का डेरी पशुओं के कुकुकुट के पोषण में उपयोग। प्राकृतिक आपदा में पशुओं का खिलाना, पाचकता विशेषांक, गोवंश बच्चों, ओसर, सांड, गायें, भैंस का खानपा, प्रसव के पहले एवं पश्चात गायों को खिलाना, विटामिन्स एवं खनिजों का आपसी सम्बन्ध, ऊर्जा एवं प्रोटीन के लिए खाद्य पदार्थों का मूल्यांकन। अंडा देने वाली मुर्गी एवं ब्रायलर की आवश्यकताएं एवं आहार की गणना।</p> <p>(ब) पशु दैहिकी वातावरण सम्बन्धी : अनुकूलन एवं दशानुकूलन व इसका, वृद्धि कारक, वृद्धि के मापक,</p>

तापक्रम फलस्वरूप तनाव का नियंत्रण के ढंग (सर्दी, गर्मी), पशु शरीर सम्बन्धी: रोमन्धी व अरोमन्धी पशुओं में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन एवं वसा का पाचन, शोषण। नर एवं मादा के प्रजनन अंगों का कार्य, दुग्ध क्षरण वैहिकी, दुग्ध का निस्कारन एवं अवरोध (रूकावट), शुक्राणु जनन, अंड जनन, वीर्य संग्रहण, मूल्यांकन, तनवीकरण, एवं संरक्षण, वीर्य का हिमीकरण, वीर्य तनुकरण, कृत्रिम गर्भाधान विधियाँ, स्तनग्राथियों के नियंत्रण, में न्यासर्गीक कार्य, मासगुणवत्ता, उत्पादन एवं प्रजनन पर इनका प्रभाव, व्याना (प्रसव), जेर का रूकना, डिस्टोकिया (असामान्य प्रसव)

(भाग-ब)

(स) पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्ध: भारत में डेरी उद्योग का विकसित देशों से तुलना, मिश्रित एवं विशिष्ट फार्मिंग, डेरी फार्मिंग का आरम्भ एवं संगठन, डेरी फार्मिंग में सामान्य का एकत्रितकरण, डेरी पशुओं की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक, जूट(झुण्ड) का अभिलेखन, आय व्यय बजटीकरण, कीमत निर्धारण योजनाएं, कार्मिक प्रबन्धन, डेरी पशुओं एवं कुककुटों का आवासीय प्रबन्धन, डेरी पशुओं के बच्चों, ओसर, गाये का प्रबन्धन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, कुककुटों एवं डेरी पशुओं का आर्थिक विश्लेषण, गोवंश, भैंस, भेड़, बकरी, सूकर, एवं कुककुटों के प्रबन्ध सम्बन्धी सामान्य समस्यायें, गोकुल मिशन, राष्ट्रीय डेरी परियोजना, अभिलेखन प्रबन्धन, दुग्ध प्रणाली-ढंग, सिद्धान्त, सामान्य डेरी प्रक्रियाओं का प्रबन्धन, दुग्ध उत्पादन का परिव्यय, चारागाह प्रबन्धन,

(द) दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद प्रौद्योगिकी : दूध का संकलन एवं परिवहन। दूध का संग्रहण एवं गुणवत्ता परीक्षण। दूध की परिभाषा, संगठन एवं पोषार्ध। दूध के भौतिक एवं रासायनिक गुण। दूध का अवशीतन, निस्स्यन्दन, निर्मलीकरण, प्रथकीकरण तथा मानकीकरण। दूध का संमागीकरण, पास्तुरीकरण, निर्जनीकरण, पैकेजिंग एवं वितरण। दूध के दोष, उसके कारण व निस्तारण। दूध के प्रकार: मानकीकृत दूध, टोन्ड दूध, डबलटोन्ड दूध, पुननिर्मित दूध, पुनमिश्रित दूध, सुगन्धित एवं फिल्टर मिल्क। दूध संयंत्र की सफाई व निर्जीवीकरण। जामन व उसका उपजापन करना। खोआ, छेना, पनीर, दही, लस्सी, श्रीखण्ड, व कुल्की का उत्पादन, पैकेजिंग, उपज एवं संगठन। घी का उत्पादन एवं श्रेणीकरण। आइसक्रीम, मक्खन, चीज, संघनित, वाष्पीकृत एवं शुष्क दुग्ध का उत्पादन एवं गुणवत्ता परीक्षण। बी0आई0एस0 एवं एफ0एस0एस0आई0ए0 के अनुरूप दूध एवं दूध पदार्थों के मानक। दूध के उपोत्पादों का उपयोग-दूध, छाछ एवं सप्रेटा दूध।

पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान:

द्वितीय प्रश्न पत्र:

(भाग-अ)

(अ) सामान्य आनुवंशिकी एवं पशु प्रजनन : पशुओं का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान, पौधों एवं पशुओं का आपसी सम्बन्ध, पशुओं एवं दूध उत्पादन सांख्यिकी, वंशागति एवं विभिन्नता, वंशागत मेंडल नियम, प्यूटेशन (उत्परिवर्तन), साइटोप्लाजमिक वंशानाता, जननद्रव्य, संरक्षण, गोवंश, भैंसा, बकरी, भेड़, सूकर, एवं कुककुटों की जातियाँ, प्रजनन की विधियाँ एवं प्रणाली, चयन विधियाँ, चयन गुणांक एवं अन्तः प्रजनन गुणांक, वीर्य का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, कृत्रिम गर्भाधान की विधियाँ, हार्डी वीनवर्ग नियम, जनसंख्या एवं वीर्यमत जोनि एक अन्तः प्रजनन गुणांक जीनोटाइप बारम्बारता।

(ब) स्वास्थ्य एवं स्वच्छता : गोवंश एवं कुककुट का शारीरिक संरचना उत्तक विज्ञान तकनीकी, हिमीकरण, पैराफिनिकरण, अन्तः स्थपित करना, रक्त की फिल्म (परत) बनाना एवं प्रयांक में आने वाले अभिरंजन, सामान्य उत्तकी अभिरंजन, रक्त गाय की भ्रूण विज्ञान, रक्त की टाईकी, पशु स्वास्थ्य व पाचन, शोषण, उत्सर्जन, श्वसन क्रिया, न्यास्या ग्रन्थियाँ, जल, वायु तथा आक्सीय वेटनरी स्वच्छता।

(भाग-ब)

(स) पशु बीमारियाँ : प्रतिरक्षा एवं टीकाकरण: प्रतिरक्षा की विधियाँ एवं सिद्धान्त, रोगों का वर्गीकरण, गौवशं, भैंस, भेड़, बकरी, सूकर, कुककुट की बीमारियों की लोकाचार प्रकृति, लक्षण, निदान, नियंत्रण एवं उपचार विशेषताएं- एथ्रेक्ट, गलाघोट, लगड़ी बुखार, थनैला, टीवी, जोन्स बीमारी, खुरपका, मुँहपक्का, सिडरपेस्ट, रेबीज, ट्रांस्पेन्सोमियासिस, पायरोप्लाजमोसिस, ट्राइकोमोनिएसिस, एक्टोनोवैरिलोसिस, ऐक्टोमाइकोसिस, पैरो फेसिलोलिस, दुग्धज्वर, अफारा, नवजाला बन्ध की बीमारियाँ: कुककुट बीमारियाँ: ले आचार प्रकृति, निदान लक्षण, नियंत्रण, उपचार विशेषता: रानीखेत, फागुन पानस, रावियन ल्यूकोसिस, मेरेक्स, गुम्बारों के लिये, सूकर की बीमारियाँ स्वाईनज्वर, हाम कालरा, खुजली, हामपलू, खुरपका, मुहपक्का, पाक्स,

(द) वेटनरी लोक स्वास्थ्य : जुनोसिस, परिभाषा, जुनेटिक बीमारियों का पशुओं व पक्षियों फैलाव व वर्गीकरण, पशु चिकित्सा धर्मशास्त्र: पशु रोग के रोकथाम तथा पशु के गुणों को सुधारने के लिए नियम एवं अधिनियम। पशु चिकित्सा विधिक परीक्षण हेतु नमूना लेने के लिए प्रक्रिया तथा विधियकं। पशु चिकित्सक के कर्तव्य एवं भूमिका। वधशाला से प्राप्त उपोत्पाद तथा उनका आर्थिक उपयोग।

(य) प्रसार : प्रसार के सिद्धान्त, धारणा, उद्देश्य तथा मूल दर्शन, ग्रामीण किसानों को शिक्षित करने की विभिन्न विधियाँ। नयी, तकनीक का निर्माण, उसका स्थानान्तरण तथा पुनः मूल्यांकन, नयी तकनीक के स्थानान्तरण में समस्याएं एवं बाधाये। ग्रामीण विकास के लिए पशुपालन परियोजनायें।

(15) सांख्यिकी: प्रश्न पत्र प्रथम: प्रायिकता सिद्धान्त तथा सांख्यिकी के प्रयोग

खण्ड (अ):- प्रायिकता सिद्धान्त

प्रतिदर्श समष्टि तथा घटनाएं, प्रायिकता की चिर प्रतिष्ठित एवं अभिगृहीतीय परिभाषायें, योग प्रायिकता के नियम, प्रतिबंधित प्रायिकता, घटनाओं की अनाश्रितता, संयुक्त प्रायिकता प्रमेय, बेयज प्रमेय तथा इसके प्रयोग। यादृच्छिक चर- असत्त तथा सत्त। इसका बंटन फलन, बंटन फलन के मूल गुणधर्म, द्विचरीय बंटन तथा संबंधित उपांत एवं प्रतिबंधित बंटन। प्रत्याशा, आर्धूण जनक तथा अभिलक्षण फलन, मार्कोव तथा शेबीशेव असमिका, प्रायिकता में अभिसरण, अनाश्रित एवं समरूपी बंटित यादृच्छित चरों हेतु वृहत संख्याओं का निर्बल नियम तथा केन्द्रीय सीमा प्रमेय। कुछ मानक असतत तथा सतत बंटन यथा द्विपद, प्वांसा, हाइपरज्यामितीय, ज्यामितीय, ऋणात्मक द्विपद, बहुपद एकसमान, प्रसामान्य, चर घातांकिय, गामा, बीटा तथा कॉशी। द्विचर प्रसामान्य बंटन।

खण्ड- (ब):- सांख्यिकी के प्रयोग

न्यूनतम वर्ग विधि, सहसंबंध तथा रैखिक समाश्रयण, आर्धूण गुणन सहसंबंध, कोटि सहसंबंध, अंतवर्ग सहसंबंध तथा सहसंबंध अनुपात, तीन चरों हेतु आंशिक एवं बहु सहसंबंध तथा समाश्रय। प्रत्येक कोष्ठ में प्रेक्षणों की समान संख्या वाला एक - दिश एवं द्वि- शि प्रसरण विश्लेषण, प्रायोगिक अभिकल्पना- प्रायोगिक अभिकल्पना के मूल सिद्धान्त, पूर्णत यादृच्छिकीकृत अभिकल्पना, यादृच्छिकीकृत खण्डक अभिकल्पना, लैटिन वर्ग अभिकल्पना, 2² तथा 2³ बहुउपादानी प्रयोग, अप्राप्त क्षेत्र की प्राविधिक। जनांककीय आंकड़ों के स्रोत, स्थित एवं स्थावर समष्टियाँ, प्रजनन तथा मर्त्यता के माप, जीवन सारणी, सामान्य समष्टि वृद्धि प्रारूप। सूचकांक तथा इसके उपयोग, लैसपियर, पार्से, मार्शल, एडवर्थ और फिशर के सूचकांक, सूचकांक हेतु परीक्षण, मूल्य सूचकांक तथा जीवन निर्वाह सूचकांक की संरचना। काल श्रेणी तथा इसके घटक, उपनति तथा मौसमी सूचकांक ज्ञात करना, आवर्तता- वक्र तथा सहसंबंध- चित्र विश्लेषण, विचरांतर विधि।

सांख्यिकी: प्रश्न पत्र द्वितीय:- सांख्यिकीय अनुमति तथा प्रबन्धन

खण्ड:- (अ) सांख्यिकीय अनुमति

आकलकों के गुणधर्म, संगतता, अनभिनतता, दक्षता, पर्याप्तता तथा पूर्णता, क्रैमर राव परिबंध न्यूनतम प्रसरण अनभिनत आकलन- राव-ब्लैकवेल प्रमेय। आकलन विधियाँ आर्धूण विधि तथा अधिकतम संभाविता विधि, अंतराल आकलन। सरल एवं संयुक्त परिकल्पना, त्रुटियों के दो प्रकार, क्रांतिक श्रेत्र, सार्थकता स्तर, परिमाण एवं शक्ति फलन- अनभिनत परीक्षण, शक्तम और एक समानतः शक्तम परीक्षण, नेमेन- पियर्सन प्रमेरिका तथा इसके प्रयोग संभावित- अनुपात परीक्षण। t, काई वर्ग, Z और F बंटनों पर आधारित परीक्षण, वृहत प्रतिदर्श परीक्षण। क्रम प्रतिदर्शज तथा परास का बंटन, अप्राचलीय परीक्षण यथा चिन्ह परीक्षण, माथ्यिका परीक्षण, रन परीक्षण, विल्काक्सन- माम हिबटनी U परीक्षण।

खण्ड- (ब) सांख्यिकीय प्रबन्धन

संचालन प्रक्रिया, शोध समस्याओं, रैखिक प्रोग्राम समस्या तथा सरल परिस्थितियों में आरेखीय हल, सिम्प्लेक्स विधि, रैखिक प्रकमन समस्या का द्वैत, नियतन एवं परिवहन समस्या। शून्य- योग द्विमानवीय क्रीडा, शुद्ध एवं मिश्रित युक्तियाँ, क्रीडा का मान, मूलभूत प्रमेय 2.2 क्रीडाओं का हल। प्रतिदर्श सर्वेक्षण की प्रकृति एवं व्याप्ति, प्रतिचयन बनाम संपूर्ण गणना, परिमित समष्टियों में प्रतिस्थापन रहित तथा प्रतिस्थापन सहित सरल यादृच्छिक प्रतिचयन। स्तरित प्रतिचयन तथा आबंटन सिद्धान्त, समान परिणाम के गुच्छ हेतु गुच्छ प्रतिचयन। आकलन की अनुपात, गुणन एवं समाश्रयण विधियाँ तथा द्विशः प्रतिचयन, समान प्रथम चरणीय इकाइयों वाली द्विचरणीय प्रति चयन, क्रमबद्ध प्रतिचयन। सांख्यिकी गुणता नियंत्रण, चरों तथा प्रगुणों हेतु नियंत्रण- चित्र, स्वीकृति, प्रतिचयन, OC, ASN तथा ATI वक्र उत्पादक तथा उपभोक्ता जोखिम, AQL, AOQL तथा LTPD की अवधारणा, एकल तथा द्विषः प्रतिचयन योजना। सोपान- प्रक्रियाएं परीक्षण- मदों का सोपानीकरण, परीक्षण समंक, परीक्षण- सिद्धान्त, समानान्तर परीक्षण, सत्य समंक, परीक्षण की विश्वसनीयता तथा वैधता।

(16) प्रबन्ध: प्रथम प्रश्न पत्र

परीक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रबन्ध के विभिन्न पहलुओं से परिचित होंगे। वे सिद्धान्त को व्यवहार में विश्व व्यवसाय के संदर्भ में, सामान्यतः और भारत में व्यवसाय के विशिष्ट सन्दर्भ में लागू कर सकेंगे। इसके लिए उनसे आशा की जाती है कि वे उस वातावरण से जिसमें भारत में व्यवसाय होता है, भली भांति परिचित होंगे। उन्हें विभिन्न क्रियात्मक क्षेत्रों में विश्लेषण और निर्णयन की प्रबन्धकीय विधियों के ज्ञान व उपयोग के साधनों की जानकारी भी होगी।

1. प्रबंध अवधारणा एवं विकास- प्रबंध की आवधारणा एवं महत्व प्रबन्ध- विज्ञान एवं कला, प्रबन्ध एवं प्रशासन में अन्तर, प्रबन्ध की भूमिका एवं उत्तरदायित्व प्रबन्ध के सिद्धान्त, प्रतिष्ठित स्कूल, नव-प्रतिष्ठित स्कूल, आधुनिक प्रबन्ध स्कूल, प्रबन्ध के विद्वानों का योगदान।

2. नियोजन एवं निर्णयन: नियोजन - प्रकृति, प्रकार, महत्ता एवं सीमायें, योजना के उद्देश्य, नीतियाँ, नियोजन आधार, पूर्वानुमान की तकनीक, निर्णयन प्रकार, प्रक्रिया, विवेकपूर्ण निर्णयन इसकी सीमायें।

3.संगठन एवं संगठनात्मक व्यवहार: संगठन- अवधारणा, प्रबन्ध का विस्तार, अधिकार एवं उत्तरदायित्व, अधिकार-अर्थ, प्रकार, स्रोत, अधिकार का प्रत्यायोजन- प्रत्यायोजन के मार्ग में अवरोध, अधिकारों का केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीकरण, संगठनात्मक व्यवहार- अवधारणा एवं महत्ता, व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार, संगठनात्मक परिवर्तन, परिवर्तन का प्रतिरोध, संघर्ष प्रबन्धन।

4. निदेशन: सिद्धान्त एवं तकनीकें, अभिप्रेरण - सिद्धान्त, मैस्रों, हर्सबर्ग मैकग्रेगर, मैक्लीलैंड तथा अन्य विद्वानों के योगदान, आकस्मिक सिद्धान्त, एम.बी.ओ. नेतृत्व-प्रकार, एक सफल नेता के गुण, नेतृत्व के विभिन्न सिद्धान्त, संप्रेषण, प्रक्रिया, स्तर, प्रकार, सम्प्रेषण सम्बंधी अवरोध, प्रभावकारी संप्रेषण के उपाय।

5. नियंत्रण एवं समन्वय- नियंत्रण प्रक्रिया, प्रभावकारी नियंत्रण की पूर्व दशायें नियंत्रण की विधियाँ-बजटरी तथा गैर -बजटरी, समन्वय -सिद्धान्त, तकनीकें तथा समन्वय सम्बन्धी अवरोध।

6. व्यवसायिक पर्यावरण- व्यवसायिक इकाई तथा पर्यावरण में अन्तर्सम्बंध, व्यावसायिक नैतिकता तथा शासन, मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति, विदेशी पूंजी तथा विदेशी सहयोग, रणनीति -अवधारणा एवं स्तर, SWOT विश्लेषण, पोर्टर का फाइव फोर्स माडल वैल्यूचेन विश्लेषण, बी.सी.जी. मैट्रिक्स, मूल दक्षताएं।

प्रबन्ध: द्वितीय प्रश्न पत्र

खण्ड-1

विपणन प्रबंध- विपणन की अवधारणा, विपणन मिश्रण; विपणन अनुसंधान; विपणन वातावरण; विपणन योजना; विपणन विभक्तिकरण; लक्षित बाजार तथा स्थितिकरण; उत्पाद रणनीतियाँ, उत्पाद जीवन चक्र; उपभोक्ता अभिप्रेरण; ब्राण्ड प्रबन्धन; विक्रय संवर्धन; विज्ञापन; विवेकपूर्ण निर्णयन इसकी सीमायें; विपणन श्रृंखला-खुदरा प्रबन्धन; इण्टरनेट विपणन; ग्राहक सम्बन्ध प्रबन्धन; भारत में ग्रामीण विपणन; अन्तर्राष्ट्रीय विपणन; विपणन अंकेंक्षण एवं नियंत्रण; विपणन नीतिशास्त्र।

खण्ड-2

उत्पादन प्रबन्ध: उत्पादन प्रबंध का अर्थ एवं प्रकृति; उत्पादन प्रणालियों के प्रकार; उत्पादन नियोजन तथा नियंत्रण , लीन तथा लचीली उत्पादन प्रणालियाँ; विभिन्न उत्पादन प्रणालियों के लिए मार्ग निर्धारण, लदान तथा अनुक्रमण; स्थल चयन तथा संयन्त्र विन्यास; सामग्री प्रबन्धन; उत्पादन संरचना, रहतिया प्रबन्धन; आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन; उद्यम श्रोत नियोजन; सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन, छः सिगमा, पीईआरटी (पर्ट) सीपीएम; अपशिष्ट प्रबन्धन।

खण्ड 3 वित्तीय प्रबन्ध: अर्थ एवं क्षेत्र, फर्म की वित्तीय आवश्यकताओं का अनुमान; पूंजी ढांचे का निर्धारण; पूंजी लागत; कार्यशील पूंजी का प्रबन्धन; पूंजी बाजार, सेबी की विनयमन भूमिका, वेन्चर पूंजी, म्यूचुअल फण्ड, लाभांस नीति, नेट बैंकिंग तथा एनपीए प्रबन्धन, उद्यमों का पुनर्गठन विलय एवं अधिग्रहण, निवेश निर्णय, जोखिम का विश्लेषण, लीज की वित्त व्यवस्था, विदेशी विनयम बाजार।

खण्ड- 4- मानव संसाधन प्रबन्ध: मानव संसाधन की प्रकृति, मानव संसाधन के प्रबन्धन का क्षेत्र, कार्य विश्लेषण तथा कार्य अभिकल्प, भर्ती तथा चयन, प्रशिक्षण तथा विकास, कैरियर योजना, 360 अंश निष्पादन आकलन, श्रमिकों की प्रबन्धन में भागीदारी, इसोप, भारत में श्रम संघ, सुरक्षा कल्याण, हड़ताल, छटनी, तालाबन्दी, समाधान, मानव संसाधन अंकेंक्षण, लचीली कार्यकारी शर्त, स्वगृह से कार्य, स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण (वी.आर' .एस.) वाहय स्रोतीकरण।

(17) राजनीति विज्ञान एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध प्रश्न पत्र-

(भाग-अ)

राजनीतिक सिद्धान्त - राजनीतिक विज्ञान की परिभाषा प्रकृति एवं विषय क्षेत्र, राजनीति विज्ञान के अध्ययन के विभिन्न उपागम-परम्परागत, व्यवहारवादी, व्यवस्था सिद्धान्त व मार्क्सवादी सिद्धान्त।

राज्य - परिभाषा, उत्पत्ति के सिद्धान्त तथा राज्य के कार्यों से सम्बन्धित सिद्धान्त-उदारवादी, व्यक्तिवादी, समाजवादी

सम्प्रभुता का अर्थ, प्रकार व सिद्धान्त

अधिकार - अर्थ, प्रकार व सिद्धान्त

स्वतंत्रता- अर्थ, प्रकार व सिद्धान्त

समानता - अर्थ, प्रकार व सिद्धान्त, समानता व स्वतंत्रता में सम्बन्ध

न्याय- अर्थ, प्रकार व सिद्धान्त

प्रजातंत्र का अर्थ, प्रकार व सिद्धान्त- उदारवाद, समाजवाद व मार्क्सवाद

सरकार के प्रकार- एकात्मक व संधात्मक, संसदात्मक एवं अध्यक्षतात्मक।

राजनीतिक संस्थायें- व्यवस्थापिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका, राजनीतिक दल व दबाव समूह, निर्वाचन प्रणाली

राजनीतिक दर्शन-

(अ) भारतीय राजनीतिक चिंतक- मनु, कौटिल्य, गाँधी, एम0एन0 रॉय, अम्बेडकर

(ब) पाश्चात्य विचारक- प्लेटो, अरस्तू, मैकियावेली, हॉब्स, लॉक, रूसो, मिल, हीगल, ग्रीन, लास्की, मार्क्स, ग्राम्शी, हन्ना आरे

(भाग-ब)

भारतीय शासन और राजनीति:-

भारतीय राष्ट्रवाद- राष्ट्रवाद के उदय के कारण, बंगभंग आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन

भारतीय संविधान का निर्माण- ब्रिटिश शासन की विरासत, संविधान की विशेषताएं, मौलिक अधिकार व

कर्तव्य, राज्य के नीति निर्देशक तत्व, संविधान संशोधन, केन्द्र-राज्य सम्बन्ध
संघ सरकार—राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद, संसद, सर्वोच्च न्यायालय
राज्य सरकार— राज्यपाल, मुख्यमंत्री व मंत्रिपरिषद, राज्य विधान मण्डल, उच्च न्यायालय
स्थानीय स्वशासन— नगरपालिका व नगर निगम, 74वाँ संविधान संशोधन, पंचायतीराज—73वाँ संविधान संशोधन
राजनीतिक प्रक्रिया— राजनीति में जाति, क्षेत्रवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, राजनीतिक दल एवं दबाव समूह और उनकी भूमिका, राष्ट्रीय एकीकरण
संघ लोक सेवा आयोग, उ0प्र0 राज्य लोक सेवा आयोग, निर्वाचन आयोग, नीति आयोग, मानवाधिकार आयोग।

राजनीति विज्ञान एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध प्रश्न पत्र— I।

(भाग—अ)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध— अर्थ, प्रकृति तथा क्षेत्र
अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त— आदर्शवादी, यथार्थवादी, व्यवस्था तथा निर्णय निर्माण सिद्धान्त।
विदेशनीति के निर्धारक तत्व— राष्ट्रहित व वैचारिकी,
राष्ट्रहित के साधन— राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद,
शक्ति संतुलन का सिद्धान्त, सामूहिक सुरक्षा,
अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय विधि एवं राजनय की भूमिका,
संयुक्त राष्ट्र का गठन तथा भूमिका
शीतयुद्धोत्तर काल में बदलती हुई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था,
शस्त्र दौड़ व शस्त्र नियंत्रण,
निर्गुट आन्दोलन की भूमिका व प्रासंगिकता,
क्षेत्रीय संगठन— ई0यू0, आसियान, एपेक, सार्क
नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था— डब्लू0टी0ओ0, उदारीकरण, निजीकरण व विश्वीकरण
अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में समकालीन मुद्दे— मानवाधिकार, पर्यावरण, आतंकवाद, परमाणु प्रसार

(भाग—ब)

- संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस व चीन की विदेश नीतियाँ
- भारत की विदेश नीति तथा अमरीका, रूस तथा चीन के साथ सम्बन्ध
- भारत का पड़ोसी देशों से सम्बन्ध
- फिलिस्तीन समस्या तथा अरब इजरायल संघर्ष
- तृतीय विश्व और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में इसकी भूमिका
- उत्तर दक्षिण संवाद, दक्षिण-दक्षिण सहयोग
- हिन्द महासागर समस्यायें और सम्भावनायें

(18) इतिहास प्रश्न पत्र— 1 (खण्ड—क)

1. भारतीय इतिहास के आरंभिक काल के अध्ययन के स्रोत एवं दृष्टिकोण। 2. आरंभिक पशुचारण एवं कृषि समुदाय, पुरातात्विक साक्ष्य (नवपाषाणिक एवं ताम्र पाषाणिक संस्कृतियों)। 3. सिन्धु सभ्यता: इसके उदगम तथा प्रकृति एवं ह्रास। 4. भारत में (2000 ई पूव से 500 ई पूव तक) बस्ती का स्वरूप, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संगठन, धर्म: पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य। 5. उत्तर भारतीय समाज तथा संस्कृति का विकास: वैदिक ग्रंथों का साक्ष्य (संहिताओं से सूत्रों तक)। 6. महावीर तथा बुद्ध की शिक्षा समकालीन समाज राज्य निर्माण तथा नगरीकरण के प्रारम्भिक चरण। 7. मगध का उदय मौर्य साम्राज्य, अशोक के शिलालेख, उसका धम्म (धर्म) मौर्य कालीन राज्य की प्रकृति। 8-9 उत्तरी तथा प्रायद्वीपीय भारत में मौर्योत्तर काल राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास, समाज, अर्थव्यवस्था, संस्कृति तथा धर्म तमिलकम एवं इसका समाज संगम ग्रंथ। 10-11 गुप्तकाल में तथा गुप्तोत्तर काल में भारत (750 ई0 तक) उत्तरी तथा प्रायद्वीपीय भारत का राजनीतिक इतिहास, सामंती व्यवस्था तथा राजनीतिक संरचना में परिवर्तन, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना, संस्कृति, धर्म। 12. आरंभिक भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की विषयवस्तु भाषाएं एवं ग्रंथ कला तथा स्थापत्य के विकास के प्रमुख चरण, प्रमुख दार्शनिक विचारक एवं विचारधाराएं विज्ञान तथा गणित संबंधित विचार।

(खण्ड—ख)

- 750ई0 से 1200 ई0 तक उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश तथा राजनीतिक संरचना, राजपूत राजवंशों का उदय तथा चोल साम्राज्य।
- अरबों की सिंध विजय और गजनवी साम्राज्य, इस्लाम का आगमन और सूफीवाद, अलबेरूनी तथा उसका भारतीय विज्ञान तथा सभ्यता का अध्ययन।
- भारत (750ई0 से 1200ई0 तक): अर्थव्यवस्था, समाज, साहित्य, प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ, स्थापत्य कला की प्रमुख शैलियाँ, धार्मिक विचार तथा संस्थाएं, भक्ति आन्दोलन का उदय।
- गोर आक्रमण: आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिणाम तथा सल्तनत की स्थापना।
- सल्तनत काल तथा राजनैतिक राजवंश: गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद तथा लोदी वंश, प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत तथा विदेशी यात्रियों के वृत्तान्त, सल्तनतकालीन समाज एवं संस्कृति।
- क्षेत्रीय राजवंशों का उदय: बहमनी तथा विजयनगर राज्य।
- मुगलकाल: बाबर, हुमायूँ, सूरकाल, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब, मुगल साम्राज्य का पतन मुगलकालीन समाज, संस्कृति प्रशासन एवं आर्थिक परिवर्तन, यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का आगमन।
- शिवाजी और पेशवाओं तथा मराठों का उत्कर्ष, सिख शक्ति का उदय, पानीपत का तीसरा युद्ध।
- मुगलकाल के इतिहास के स्रोत: फारसी तथा देशज, विदेशी यात्रियों के वृत्तान्त।

इतिहास प्रश्न पत्र— II।

(खण्ड क)

- भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना— ईस्ट इण्डिया कम्पनी और क्षेत्रीय शक्तियों के साथ सम्बन्ध।
- औपनिवेशिक अर्थ व्यवस्था— ट्रिबूट प्रणाली, सम्पत्ति का अपवाह (ड्रेन आफ वेल्थ) तथा अनौद्योगीकरण, वित्तीय एवं भू- राजस्व व्यवस्थायें (जमींदारी, रैयतबारी और महालवारी व्यवस्था), प्रशासनिक नीतियाँ एवं 1857 तक ब्रिटिश राज्य की संरचना (संवैधानिक विकास सहित)।
- औपनिवेशिक शासन का विरोध— आरम्भिक विद्रोह, कारण, स्वरूप एवं 1857 के विद्रोह का प्रभाव, 1858 एवं उसके बाद ब्रिटिश राज्य का पुनर्गठन।
- औपनिवेशिक शासन का सामाजिक— सांस्कृतिक प्रभाव: शासकीय सामाजिक सुधार के उपाय, प्राच्य आंग्लिक विवाद, अंग्रेजी शिक्षा एवं प्रेस का आगमन, ईसाई मिशनरियों के क्रियाकलाप, बंगाल एवं देश के अन्य भागों में हुए सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन।
- आर्थिक नीतियाँ— 1858 से 1914 तक: रेलवे, भारतीय कृषि का व्यवसायीकरण, भूमिहीन श्रमिकों एवं ग्रामीण ऋणग्रस्तता में बढ़ोत्तरी, अकाल, ब्रिटिश उद्योग के लिए भारत एक बाजार, ड्रेन सिद्धान्त।
- भारतीय राष्ट्रवाद का आरम्भिक चरण— सामाजिक पृष्ठभूमि, राजनीतिक संगठनों का गठन, प्रारम्भिक राष्ट्रवादी युग के दौरान कृषक एवं जनजातीय विद्रोह, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, कांग्रेस का नरमपंथी चरण, मुस्लिम लीग का जन्म, 1909 का भारतीय परिषद् अधिनियम, 1919 का भारत सरकार अधिनियम।

7. दो महायुद्धों के बीच भारत की अर्थव्यवस्था: उद्योग तथा संरक्षण की समस्या, कृषि सम्बन्धी संकट, ग्रेट डिप्रेशन, ओटावाकारर तथा पक्षपातपूर्ण संरक्षण, श्रम संगठनों का विकास, किसान आन्दोलन।

8. होम रूल आंदोलन, गाँधी के नेतृत्व में राष्ट्रवाद— गाँधी के विचार और जन जागरूकता की विधियाँ एवं अन्य आन्दोलन, राज्यों में हुए जन आंदोलन तथा राष्ट्रीय आंदोलन के अन्य तत्व: (ए) भारत एवं विदेश में हुए क्रान्तिकारी आंदोलन (बी) स्वराजिस्ट, उदारवादी, प्रतिस्वेदी सहयोग (सी) भारत में वामपंथ का उदय (डी) सुभाष चन्द्र बोस एवं इण्डियन नेशनल आर्मी।

9. साम्प्रदायिकता का विकास— कारण अन्य सम्बन्धित घटनायें, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा आदि, राष्ट्रीय आंदोलन एवं महिलायें।

10. साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास— टैगोर, प्रेमचन्द, सुब्रामनियम भारती, इकबाल उदाहरण के रूप में।

11. स्वतंत्रता की ओर— 1935 का अधिनियम, कांग्रेस का मंत्रिमण्डल (1937—1939), पाकिस्तान आंदोलन।

12. 1945 के बाद की लहर (RIN विद्रोह, तेलंगाना विद्रोह आदि), संवैधानिक वार्तायें तथा सत्ता हस्तान्तरण, स्वतंत्रता एवं विभाजन।

(खण्ड ख)

13. पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन एवं प्रतिधर्म सुधार आंदोलन, 'प्रबोधन'— काल, कान्ट, रूसो आदि, यूरोप के बाहर 'प्रबोधन'— का विस्तार, समाजवादी विचारों का उदय।

14. आधुनिक राजनीति का उदय— यूरोपीय राज्य—प्रणाली, अमेरिकी क्रान्ति, फ्रांसीसी क्रान्ति (1789—1815) एवं उसके परिणाम।

15. औद्योगिक क्रान्ति— कारण एवं समाज पर प्रभाव, अन्य देशों में हुए औद्योगिकीकरण।

16. राष्ट्र राज्य प्रणाली— 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद का उदय, जर्मनी एवं इटली का एकीकरण, राष्ट्रीयताओं के आविर्भाव से साम्राज्यों का विघटन।

17. साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद— एटलांटिक पार का दास व्यापार, एशियाई विजय, साम्राज्य के प्रकार: बस्तीवाले एवं बस्ती रहित : लातीनी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया आदि।

18. क्रान्तियाँ तथा प्रति क्रान्तियाँ, 19वीं शताब्दी में यूरोपीय क्रान्तियाँ— 1917 की रूसी क्रान्ति, फ्रांसीसी प्रति क्रान्ति— इटली तथा जर्मनी, 1949 की चीनी क्रान्ति, 19. प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध— कारण, परिणाम एवं अन्य घटनायें।

20. शीतयुद्ध— दो गुटों का आविर्भाव एवं अन्य संबंधित घटनायें, तृतीय दुनियाँ का उदय एवं गुट निरपेक्षता, संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं विवादों का समाधान।

21. उपनिवेश एवं उनकी स्वतंत्रता— लातीनी अमेरिका (बोलिविया), अरबी दुनिया (मिस्र), दक्षिण अफ्रीका: रंगभेद नीति एवं लोकतंत्र की ओर, दक्षिणी—पूर्व एशिया (वियतनाम)।

22. उपनिवेशवाद का अंत तथा अविभासीकरण— औपनिवेशिक साम्राज्यों का विघटन, विकास के अवरोध कारक—(लातीनी अमेरिका, अफ्रीका एवं एशिया)।

23. सोवियत संघ का विघटन एवं एक ध्रुवीय विश्व— कारक, परिणाम एवं अन्य घटनायें, वैश्वीकरण।

(19) नू विज्ञान : प्रश्न पत्र— I

- (1) मानवविज्ञान: अर्थ, क्षेत्र एवं विकास
- मानवविज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध: इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, जैव विज्ञान तथा औषधि विज्ञान।
- मानवविज्ञान की प्रमुख शाखाएं, उनके क्षेत्र एवं प्रासंगिकता।
- (1) मानव उद्विकास तथा मानव का आविर्भाव : जैविक उद्विकास, उद्विकास के सिद्धान्त— प्रागडार्विनी डार्विनी, तथा उत्तर डार्विनी। उद्विकास का आधुनिक संश्लेष सिद्धान्त।
- व्यवस्थिती विज्ञान एवं वर्गिकी, प्रमुख प्राइमेट वर्गिकी, होमिनाइडिआ एवं होमिनिडी की व्यवस्थितकी, मानव एवं वानराभ में शरीर-रचनात्मक तुलना, उर्ध्व संस्थिती के कारण कंकाल में हुए परिवर्तन एवं इसके परिणाम।
- मानव की उत्पत्ति एवं उद्विकास, निम्नलिखित पूर्व प्रतिनूतन जीवाभ प्रइमेट्स की जातिवृत्तिक स्थिति, लक्षण एवं वितरण— आरिओपिथेकस, दक्षिण एवं पूर्व अफ्रीकी होमिनिड्स—प्लीजियनथ्रोपस, ऑस्ट्रे लोपिथेकस अफ्रीकानस, पेरांथ्रापस, ऑस्ट्रे लोपिथेकस रोबस्टस तथा सम्बन्धित स्पिशीज
- (1) होमो का उदय : होमो इरेक्टस एवं समकालीन।
- नियन्डरथल मानव: होमो निन्डरथलेन्सिस एवं अन्य पुरातन होमो सेपियन्स, प्रोग्रेसिव नियन्डरथल—क्लासिक नियन्डरथल (ला—शैपाले—ऑसा) प्रोग्रेसिव नियन्डरथल (माउन्ट कारमेलाइट्स)
- रोडेशियन मानव।
- होमो सेपियन्स सेपियन्स (उच्च प्रातिनूतन) को—मैग्नन, चान्सलेड एवं ग्रीमालडी
- (1) मानव आनुवंशिकी : अर्थ, क्षेत्र एवं शाखाएं, इसका अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध
- मानव परिवार में आनुवंशिकी सिद्धान्तों के अध्ययन की पद्धति (वंशवृक्ष अध्ययन, युगम अध्ययन, पालित संतान, सह—युगम पद्धति, जैव रासायनिक पद्धतियाँ, प्रतिरक्षक पद्धतियाँ, डी एन ए तकनीक।)
- मानव — परिवार अध्ययन सम्बन्धी मेन्डेलियन आनुवंशिकता, एकल कारक, बहु कारक, मानव में बहु आनुवंशिकता। आनुवंशिक बहुरूपवाद एवं परिवर्धन, मेन्डलीय पॉपुलेशन हार्डी— वेनबर्ग नियम, अन्तः संकरता, आनुवंशिक भार, रक्त—सम्बन्धों तथा ममेरे—फुफेरे भाई—बहनोँ के वैवाहिक सम्बन्धों में आनुवंशिकता का प्रभाव।
- मानव में गुणसूत्र एवं गुणसूत्रीय विपथगमन पद्धति तथा वितरण, आनुवंशिकी परामर्श।
- प्रजाति की अवधारणा: प्रजाति तथा प्रजातिवाद, प्रजातीय वर्गीकरण, मानव में नृजातीय वर्ग— विशेषताएँ एवं वितरण।
- पारिस्थितिकीय मानवविज्ञान: अवधारणा एवं पद्धतियाँ, जैव—सांस्कृतिक अनुकूलन।
- (1) मानव वृद्धि तथा विकास : अवधारणा तथा वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक, वृद्धि के अध्ययन की पद्धतियाँ
- जननशक्ति प्रजननक्षमता, जन्मदर एवं मृत्युदर को प्रभावित करने वाले जैविक एवं सामाजिक—पारिस्थितिकीय कारक।
- शारीरिक मानवविज्ञान तथा मानव आनुवंशिकी की उपयोगिता।
- (1) प्रागैतिहासिक पुरातत्व के सिद्धान्त प्रागैतिहासिक संस्कृतियों की विस्तृत रूपरेखा : (I) पुरापाषाण (II) मध्यपाषाण (III) नव पाषाण (IV) ताम्रपाषाण(चाल्कोलिथिक) (V) ताम्र—कांस्य युग
- तिथि: निर्धारण की प्रविधियाँ— सापेक्ष तथा निरपेक्ष तिथि निर्धारण।
- (1) संस्कृति की प्रकृति: संस्कृति और सभ्यता की अवधारणा एवं विशेषताएँ, नृजातीय केन्द्रस्थता एवं सांस्कृतिक सापेक्षवाद।
- समाज की प्रकृति: समाज की अवधारणा, समाज और संस्कृति, सामाजिक संस्था, सामाजिक समूह, सामाजिक संस्तरण।
- विवाह: परिभाषा एवं सार्वभौमिकता, विवाह के नियम, अन्तर्विवाह, बहिर्विवाह, अनुलोम, विलोम,

Cont...

निकटभिगमन, विवाह के प्रकार—(एकविवाह, बहुविवाह), विवाह के प्रकार, विवाह के नियम (अधिमान्य) और विवाह अदायगी (वधूधन, दहेज)

(4) परिवार, गृहस्थी एवं गृहसमूह: परिभाषा और सार्वभौमिकता, प्रकार्य और प्रकार (संरचना, रक्त सम्बन्ध, विवाह और उत्तराधिकार के संदर्भ में), नगरीकरण का प्रभाव।

(5) नातेदारी: रक्त सम्बन्धी एवं विवाह सम्बन्धी, वंश के प्रकार एवं नियम (एकीय, द्विपक्षीय, द्विरेखीय, उभयपक्षीय), वंश समूह के प्रकार (लीनियेज, गोत्र, फ़ैटरी, मॉडटी तथा किन्ड्रेड), नातेदारी शब्दावली (वर्णानात्मक और वर्गात्मक)।

11. आर्थिक संगठन: आर्थिक मानवविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र और महत्व, औपचारिक तथा तालिका चर्चा, शिकार आखेटक तथा खाद्य—संग्रहक, मछली पकड़ने वाले, चारागाह, पौध बागवानी, तथा कृषि पर निर्भर रहने वाले समुदायों में उत्पादन, वितरण तथा विनियमन को नियंत्रित रखने वाले नियम (पारिस्परिकता, पुनर्वितरण तथा बाजार)

12. राजनैतिक संगठन : प्रकार—बैण्ड, जनजाति, अधिनायकवाद, राजशाही, राज्य, सत्ता, प्राधिकार एवं वैधता की अवधारणा, सामाजिक नियन्त्रण, सरल समाजों में कानून एवं न्याय।

13. धर्म: धर्म के अध्ययन में मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण (विकासवादी, मनोवैज्ञानिक तथा प्रकार्यवादी), एकईश्वरवाद, बहुदेवत्ववाद, मिथक एवं अनुष्ठान, जनजातीय एवं कृषक समाजों में जादुई— धार्मिक विश्वासों के रूप (आत्मावाद, जीववाद, वस्तुपूजावाद, प्रकृतिवाद एवं टोटमवाद), धर्म, जादू तथा विज्ञान में अन्तर, जादुई— धार्मिक क्रियाओं के निष्पादक (पुजारी, शामन, चिकित्सक, जादूगर व ओझा)

14. मानवशास्त्रीय सिद्धान्त : i शास्त्रीय उद्विकासवाद—मॉर्गन, टाइलर, फ्रेजर, ii— प्रसारवाद— ब्रिटिश, जर्मन, तथा अमेरिकन iii प्रकार्यवाद— मैलिनोवस्की, संरचनात्मक प्रकार्यवाद— रेडक्लिफ ब्राउन iv— संरचनावाद— लेवी स्ट्रॉस v— संस्कृति व व्यक्तित्व— बेनेडिक्ट, मीड, लिन्टन, कार्डिनर, कोरा—डु—बॉयज vi— नवउद्विकासवाद—चाइल्ड, व्हाइट, स्टुवर्ट vii सांस्कृतिक भौतिकतावाद— माविन हैरिस

15. (1) सांस्कृतिक मानवविज्ञान में अनुसन्धान पद्धति:— मानवविज्ञान में क्षेत्र— कार्य परम्परा, प्रविधि, पद्धति तथा पद्धतिशास्त्र में अन्तर, तथ्य संकलन के तरीके— परिवेक्षण, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली, केसहिस्ट्री, केसस्टडी तथा वंशावली, सूचनाओं के द्वितीयक स्रोत।

(2) अन्तर्त— सांस्कृतिक अध्ययन एवं नियन्त्रित तुलना।

नू विज्ञान प्रश्न पत्र—II

1. भारतीय संस्कृति और सभ्यता का उदय एवं विकास: प्रागैतिहासिक (पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण), आद्य ऐतिहासिक (सिन्धु सभ्यता)।

2. भारत का जनसांख्यिकीय रेखा चित्र: भारतीय जनसंख्या में नृजातीय तथा भाषायी तत्व और उनका वितरण।

3. पारम्परिक भारतीय समाज की संरचना एवं प्रकार्य: वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, कर्म, ऋण और पुनर्जन्म।

4. भारत में जाति व्यवस्था: संरचना एवं विशेषताएं: वर्ण एवं जाति, प्रभुजाति, जाति—गतिशीलता, जजमानी प्रथा, जनजाति—जाति निरन्तरता।

5. पवित्र संकुल, प्रकृति: मानव और जीवात्म संकुल।

6. भारतीय समाज (जनजातियों सहित) पर धर्मों का प्रभाव: बौद्ध, जैन, इस्लाम तथा ईसाइयत।

7. भारत में मानव विज्ञान का उदय एवं विकास: आरम्भिक विद्वान—प्रशासकों का योगदान। जनजाति—जाति अध्ययनों में मानव शास्त्रियों का योगदान।

8. भारतीय ग्राम के पक्ष: सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक। बस्ती एवं अन्तर्जातीय परिवर्तन के प्रतिमान। संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, और आधुनिकीकरण। पंचायती राज एवं सामाजिक परिवर्तन।

9. 1. भारत में जनजातियों की अवस्थिति: जनजातीय जनसंख्या की भाषाई और सामाजिक—आर्थिकी विशेषताएं और उनकी जैव—आनुवंशिकी भिन्नताएं।

2. जनजातियों की समस्याएं: भूमि—हस्तांतरण, निर्धनता, निम्न साक्षरता, बेरोजगारी, स्वास्थ्य और पोषण।

3. विकास सम्बन्धी परियोजनाएं: जनजातियों का विस्थापन तथा उनके पुनर्वास सम्बन्धी समस्याएं। नवीन वननीति और जनजातियाँ। जनजातीय जनसंख्या पर नगरीकरण तथा औद्योगिकीकरण का प्रभाव।

10. 1. अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के शोषण तथा वंचन की समस्याएं। अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों हेतु संवैधानिक सुरक्षा।

2. सामाजिक परिवर्तन तथा समकालीन जनजातीय समाज: आधुनिक प्रजातांत्रिक संस्थाओं का प्रभाव तथा कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम। महिलाओं की सहभागिता।

3. नृजातीय भावना की संकल्पना: जनजातियों में असंतोष तथा जनजातीय आन्दोलन। कृत्रिम जनजातियता। उपनिवेशवाद के दौरान तथा स्वाधीनतोरान्त जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन।

11. जनजातीय क्षेत्रों, जनजातीय नीतियों, योजनाएं तथा विकास कार्यक्रम और उनके क्रियान्वयन के प्रशासन का इतिहास। संवेदनशील जनजातीय समूह।

12. जनजातीय विकास में एन0जी0ओ0 की भूमिका।

13. जनजातीय और ग्रामीण विकास में मानव शास्त्रियों की भूमिका।

20. सिविल अभियंत्रिकी (CIVIL ENGINEERING)

PAPER-I

PART-A

(a) Theory of Structures: Simple stress and strain, Elastic constants, Axially loaded compression members, Shear force and bending moment, Theory of simple bending, Shear stress distributions across sections, Beams of uniform strength.

Deflection of beams: Mecaulay's method, Mohr's moment area method, Conjugate beam method, Unit load method, Elastic stability of columns,

Castigliano's theorems I and II, unit load method of consistent deformation applied to beams and pin jointed trusses. Slope-deflection and moment distribution methods.

Rolling loads and influences lines: Influence lines for shear Force and Bending moment at a section of a beam. Criteria for maximum shear force and bending moment in beams traversed by a system of moving loads. Influences lines for simply supported plane pin jointed trusses.

Arches: Three hinged, two hinged and fixed arches, rib shortening and temperature effects.

Matrix methods of analysis: Force method and displacement method of analysis of indeterminate beams and rigid frames.

Plastic-analysis of beams and frames: Theory of plastic bending, Plastic analysis statical method, Mechanism method.

Unsymmetrical bending: Moment of inertia, position of Neutral axis and Principal axes, Calculation of bending stresses.

(b) Design of Concrete structures: Concept of mix design. Reinforced concrete: Working stress and limit state method of design. Recommendation of B.I.S. Codes. Design of one-way and two-way slabs, stair-case, slabs, simple and continuous beams of rectangular, T and L sections. Compression members under direct load with or without eccentricity.

Cantilever and Counter-fort type retaining walls.

Water Tanks: Design requirements for rectangular and circular tanks resting on ground.

Prestressed Concrete: Methods and systems of prestressing, anchorages, Analysis and design of sections for flexure based on working stress, loss of prestress. Earthquake Resistant Design of Buildings as per BIS codes.

Introduction to computer aided design of structure

(c) Steel Structural : Factors of safety and load factors. Riveted, bolted and welded joints and connections. Design of tension and compression members, beams of built up section, riveted and welded plate girders, gantry girders, stanchions with battens and lacings.

PART-B

(a) Fluid Mechanics: Fluid properties, types of fluids and their role in fluid motion.

Kinematics and dynamics of fluids flow: velocity and acceleration, stream lines, equation of continuity, irrotational and rotational flow, velocity potential and stream functions.

Continuity, momentum, energy equations Navier Stokes equation, Euler's equation of motion Bernoulli's equation. Applications to fluid flow problems e.g. pipe flow, sluice gates, weirs, etc.

Laminar Flow: Laminar and turbulent boundary layer on a flat plate, laminar sub-layer, smooth and rough boundaries, submerged flow, drag and lift forces.

Turbulent flow through pipes: Characteristics of turbulent flow, velocity distribution and variation of pipe friction factor, Hydraulic grade line and total energy line.

(b) Hydraulics: Uniform and non-uniform flows, momentum and energy correction factors, specific energy and specific force, critical depth, gradually varied flow, classification of surface profiles, control section, step method of integration of varied flow equations, rapidly varied flow, hydraulic jump. Surges.

Hydraulic Machines and Hydropower: Hydraulic turbines and their classification, choice of turbines, performance parameters, controls, Characteristics, specific speed, Principles of hydropower development.

(c) Geotechnical Engineering: Soil types and structure, gradation and particle size distribution, Atterberg's limits.

Flow through porous media: Effective stress and pore water Pressure, permeability concept, field and laboratory determination of permeability, Seepage pressure, quick sand condition.

Compaction of soil: Laboratory and field tests. Compressibility and consolidation theory, consolidation settlement analysis. Shear strength determination Mohr coulomb theory.

Stress distribution in soils Boussinesque and Westergaard's analysis, Earth pressure theory and analysis for retaining walls, application for sheet piles and Braced excavation.

Bearing capacity of soil: Approaches for analysis, fields tests, settlement analysis, stability of slopes.

Foundation: Type and selection criteria for foundation of structures, Design criteria for foundation, Analysis of distribution of stress for footings and pile, pile group action, pile load tests.

Subsurface exploration of soils, Ground improvement and soil stabilisation techniques.

सिविल अभियंत्रिकी (CIVIL ENGINEERING)

PAPER-II

PART-A

(a) Construction Technology, Planning and Management:

Building Materials: Physical Properties of construction materials with respect to their use, Stones, Bricks, Tiles, Lime, Cement, Mortars, Concrete,

Timber: Properties, defects and common preservation treatments, Ferro cement, fibre reinforced cement High strength concrete.

Use and selection of materials for various uses e.g. Low cost housing, mass housing, High rise buildings.

Building Constructions: Masonry Constructions using Brick, stone construction detailing and strength characteristics.

Paints, varnishes, plastics, water proofing and damp proofing materials, Detailing of walls, floors, roofs staircases doors and windows. Plastering, pointing, flooring, roofing and construction features. Common repairs in buildings.

Principle of planning of buildings for residents and specific use, Building code provisions and use.

Basic principles of detailed and Approximate estimating, specifications, rate analysis, principles of valuation of real property. Machinery for earthwork, concreting and their specific uses, Factors affecting selection of construction equipments, operating cost of equipments.

Construction activity, schedules, organizations, Quality assurance principles. Basic principle of network, CPM and PERT uses in construction monitoring, Cost optimization and resource allocation. Basic principles of Economic analysis and methods.

Project Profitability: Basic principles of financial planning, simple toll fixation criterions.

(b) Surveying: Common methods and instruments for distance and angle measurement for Civil Engg. works, their use in plane table, traverse survey, leveling, triangulation, contouring and topographical maps. Basic principles of photogrammetry and remote sensing. Introduction to Geographical information system.

(c) Highway Engineering: Principles of Highway alignments, classification and geometrical design, elements and standards for roads.

Pavement structure for flexible and rigid pavements, Design principles and methodology. Construction methods and materials for stabilized soil, WBM, Bituminous works and CC roads.

Surface and sub-surface drainage arrangements for roads, culvert structures.

Pavement distresses and strengthening by overlays.

Traffic surveys and their application in traffic planning, Typical design features for channelized, intersection rotary etc., signal designs, standard traffic signs and markings.

(d) Railway Engineering: Permanent way, ballast, sleeper, chair and fastenings, points crossings, different types of turn outs, cross-over, setting out of points, Maintenances of track, super elevation, creep of rails, ruling gradients, track resistance, tractive effort, curve resistance, Station yards and station, station buildings, platform sidings turn outs,

Cont...

Signals and interlocking, Level Crossings.

PART- B

(a) Water Resources Engineering:

Hydrology: Hydrologic cycle, precipitation, evaporation, transpiration, infiltration, overland flow, hydrograph, flood frequency analysis, flood routing through a reservoir, channel flow routing- Muskingam method.

Ground Water flow: Specific yield, storage coefficient, coefficient of permeability, confined and unconfined aquifers, radial flow into a well under confined and unconfined conditions. Open wells and Tubewells.

Ground and surface water resources, single and multipurpose projects, storage capacity of reservoirs, reservoir losses, reservoir sedimentation.

Water requirements of crops, consumptive use, duty and delta, irrigation methods and their efficiencies.

Canals: Distribution systems for canal irrigation, canal capacity, canal losses, alignment of main and distributory canals, most efficient section, lined canals and their design, regime theory, critical shear stress, bed load.

Water logging: causes and control, salinity.

Canal structures: Design of head regulators, canal falls, aqueducts, metering flumes and canal outlets.

Diversion head work: Principles and design of weirs on permeable and impermeable foundation, Khosla's theory.

Storage works: Types of dams, design, principle of gravity and earth dams, stability analysis.

Spillways: Spillway types, energy dissipation.

River training: Objectives of river training, methods of river training and bank protection.

(b) Environmental Engineering:

Water Supply: predicting demand for water, impurities of water and their significance, physical, chemical and bacteriological analysis, waterborne diseases, standards for potable water.

Intake of Water: Water treatments: principles of coagulation, flocculation and sedimentation, slow, rapid and pressure filters, chlorination, softening, removal of tests, odour and salinity.

Sewerage Systems: Domestic and industrial wastes, storm sewage, separate and combined systems, flow through sewers, design of sewers.

Sewage Characterisation: BOD, COD, solids, dissolved oxygen, nitrogen and TOC. Standards of disposal in normal water course and on land.

Sewage Treatment: Working principle, units, chambers, sedimentation tank, trickling filters, oxidation ponds, activated sludge process, septic tank, disposal of sludge, recycling of waste water.

Solid waste management: Collection and disposal in rural and urban contexts, management of solid waste.

Environmental pollution: Sustainable development, Radioactive wastes and disposal. Environmental impact assessment for thermal power plants, mines, river valley projects.

Air and water pollution control acts.

21. (यांत्रिक अभियांत्रिकी) MECHANICAL ENGINEERING: PAPER-I

(PART-A)

1. **Theory of Mechanisms:** Kinematic and dynamic analysis of planar mechanisms, belt and chain drives, gears and gear train, cams, flywheel and governors. Balancing of rotating and reciprocating masses, single and multi cylinder Engines.

2. **Mechanical Vibrations:** Vibrating systems, single degree freedom systems, natural frequency, damped and forced vibrations, resonance, force transmissibility, two degree of freedom systems, vibration absorbers, whirling of shafts and critical speeds.

3. **Mechanics of Solids:** Stress and strain, elastic constants, uniaxial loading, thermal stress, two dimensional stress analysis, principal stresses, generalised Hook's law, total and distortion strain energy, theories of failures, bending and shear stresses in beams, Torsion of shafts, Close coiled Helical springs, Thin and thick pressure vessels, rotating discs, Buckling of columns.

4. **Engineering Materials:** Basic concept of structure of solids, crystalline materials, crystal defects, alloys and binary phase diagrams, structures and properties of common engineering materials. Basics of polymers, ceramics and composite materials; Iron-Carbon equilibrium diagram, heat treatment of steels.

(PART-B)

5. **Manufacturing Science:** Machine tool Engineering, Merchant's force analysis, Taylor's tool life equation, conventional machining, NC and CNC machining Processes, jigs and fixtures, standard forming and welding processes.

6. **Non Conventional Machining Processes:** EDM, ECM, Ultrasonic machining, water jet machining etc, application of lasers and plasmas, energy rate calculations. Metrology: concept of fits and tolerances, tools and gauges, comparators, inspection of length, position, profile and surface finish.

7. **Manufacturing Management:** Product development, value analysis, Break-even analysis, forecasting techniques, Operation Scheduling, Capacity Planning, Assembly line balancing, CPM and PERT, Inventory control, ABC Analysis, EOQ model, material requirement planning, job design, job standards, method study and work measurements.

8. **Quality Management:** Quality analysis, control charts, acceptance, sampling, total quality management, Operations research, linear programming, graphical and simplex methods, Transportation and assignment models, single Serve queueing model, Value Engineering.

(यांत्रिक अभियांत्रिकी) MECHANICAL ENGINEERING: PAPER-II

(PART-A)

1. **Thermodynamics:** Laws of thermodynamics and their applications; T-ds equations, Maxwell and Clapeyron equation and their uses; Availability and irreversibility.

2. **Fluid Mechanics:** Properties and classification of fluids, Manometry, forces on immersed surfaces, stability of floating bodies, Kinematics and dynamics of incompressible fluids. Laminar and turbulent boundary layer flows. Bernoulli's equation, fully developed flow through pipes.

3. **Heat Transfer:** Modes of heat transfer, One dimensional steady and unsteady conduction. Heat transfer through extended surfaces. Free and forced convective heat transfer, Empirical correlations in laminar and turbulent flows, Heat Exchangers, Radiation heat transfer laws, shape factor, heat exchange between black and gray surfaces.

4. **Refrigeration and Air Conditioning:** Vapour compression, vapour absorption, steam

jet and air refrigeration systems, Desirable properties of refrigerants, eco- friendly refrigerants, Analysis of compressors, condensers, expansion valves and evaporators.

(PART- B)

5. **I.C Engines:** Classification, Thermodynamic cycles of operation, Performance Calculations, Heat balance sheet, Combustion in S.I and C.I Engines, normal and abnormal combustion, knocking and detonation. Effect of variables on knocking and detonation, Fuels used in S.I and C.I Engines, Fuel injection, carburetion and multi point fuels injection (MPFI) Supercharging, Engine cooling, Emission and Control, Turboprop and Rocket Engines.

6. **Steam Engineering:** Modern steam Generators, Rankine cycle, Modified Rankine cycle and analysis, Natural and artificial draught, flow of steam in convergent and divergent nozzles, pressure at throat for maximum discharge, super saturated flow in nozzles, Wilson line.

7. **Turbomachines:** Classification, Continuity, momentum and energy equations, Flow analysis in axial and centrifugal compressors and turbines, Dimensional analysis and modelling. Performance of Pumps, Compressors and turbines.

8. **Power Plant Engineering:** Site selection for Steam, Hydro Nuclear and Gas Power Plants, dust removal equipments, fuel handling and cooling water system. Thermodynamic analysis of steam and gas turbine power plants, governing of turbines. Solar, Wind and Nuclear Power Plants, Economic power generation.

22. (विद्युत अभियांत्रिकी) ELECTRICAL ENGINEERING:

PAPER-I

(I.E.M. Theory: Analysis of Electrostatic and magnetostatic Fields, Laplace, Poisson & Maxwell's equation. Electromagnetic wave equations. Poynting's Theorem. Waves on transmission lines. Wave-guides. Microwave resonators.

(ii) Networks & Systems: Systems and signals, Network Theorems and their applications. Transient and steady-state analysis of systems. Transform techniques and circuit analysis, Coupled circuits. Resonant circuits, Balanced three-phase circuits. Network functions. Two-port network. Network parameters. Elements of network synthesis. Elementary active networks.

(iii) Electrical & Electronic Measurement & Instrumentation: Basic methods of Measurement. Error analysis, Electrical Standards. Measurement of voltage, current, power, energy, power-factor, resistance, inductance, capacitance, frequency and loss-angles. Indicating instruments. DC and AC Bridges, Electronic measuring instruments. Multi-meter, digital voltmeter, frequency counter, Q-meter, oscilloscope, techniques, special purpose CRO's. Transducers and their classifications. Thermo-couple, thermistor, RTD, LVDT, strain-gauges. Piezo-electric transducers etc., Application of transducers in the measurement of non-electrical quantities like pressure, temperature, displacement, velocity acceleration, flow-rate etc.; Data-acquisition systems.

(iv) Analog & Digital Electronics: semiconductor diodes & zener-diode, Bi-polar junction transistor and their parameters. Transistor biasing, analysis of all types of amplifiers including feedback and D.C. amplifiers; Operational amplifiers and their application; Feedback oscillators: Colpitts and Hartley types, waveform generators; Multi-vibrators; Boolean algebra. Logic gates Combinational and sequential digital circuits. Semiconductor memories. A/D & D/A converters; Microprocessor. Number system and codes, elements of microprocessors & their important applications.

(v) Electrical Machines: D.C. Machines: commutation and armature reaction, characteristics and performance of motors and generators; Applications, starting and speed control. Synchronous generators: Armature reaction, voltage regulation, parallel operation. Single- and Three-phase Induction motors: Principle of operation, performance characteristics, starting, speed control. Synchronous Motors: Principle of operation, performance analysis, Hunting, Synchronous condenser. Transformers: Construction, phasor diagram, equivalent circuit, voltage regulation, Performance, Auto-transformers, instrument transformers. Three-phase transformers.

(vi) Material Science: Theory of Semiconductors, Conductors and insulators. Superconductivity. Various insulators used for Electrical and Electronic applications. Different magnetic materials, properties and applications. Hall Effect.

(विद्युत अभियांत्रिकी) ELECTRICAL ENGINEERING:

PAPER-II: (SECTION-A)

1. **Control Engineering:** Mathematical Modeling of physical dynamic systems. Block diagram and signal flowgraph. Transfer function. Time-response and frequency-response of linear systems. Error evaluation, Bode Plot, Polar Plot and Nichol's chart, Gain Margin and Phase Margin, Stability of linear feedback control systems. Routh-Hurwitz and Nyquist criteria. Root locus technique. Design of compensators. State variable methods in system modeling, analysis and design. Controllability and Observability and their testing methods. Pole placement, design using state variables feedback. Control system components (Potentiometers, Tachometers, Synchros & Servomotors).

2. **Industrial Electronics:** Various power semiconductor devices. Thyristor & its protection and series-parallel operation. Single-phase and poly-phase uncontrolled rectifiers. Smoothing filters, D.C. regulated power supplies. Controlled converters and inverters, choppers. Cyclo-converters, A.C. voltage regulators. Application to variable speed drives. Induction and Dielectric heating.

SECTION-B: (HEAVY CURRENT)

(3) Electrical Machines: (Fundamentals of Electro-Mechanical energy conversion. Analysis of Electro-Magnetic torque and induced voltages. The general torque equation.

(ii). Three- Phase Induction motors: Concept of revolving field. Induction motor as transformer. Phasor diagram and equivalent circuit. Performance evaluation. Correlation of induction motor operation with basic torque relations. Torque-speed characteristics. Circle diagram, starting and speed-control methods. **(iii).** Synchronous Machines: Generation of e.m.f.; Equivalent circuit, Experimental determination of leakage and synchronous reactances. Theory of salient-pole machines. Power equation. Parallel operation. Transient and sub-transient reactances and time constants. Synchronous motor. Phasor diagram and equivalent circuit. Performance, V-curves. Power factor control, hunting. **(iv).** Special Machines: Two-phase A.C. servomotors.-Equivalent circuit and performance; Stepper motors. Methods of operation, Drive amplifiers. Half stepping. Reluctance type stepper motor, Principles and working of universal motor. Single-phase A.C. compensated series motor.

(4) Electric Drives: Fundamentals of electric drive, Rating estimation. Electric braking.

Cont..

Electro-mechanical transients during starting and braking, time and energy calculations. Load equalization. Solid-State control of D.C., Three-phase Induction and Synchronous motors. Applications of electric motors.

(5) **Electric Traction:** Various Systems of track electrification and their comparison. Mechanics of train movement. Estimation of tractive effort and energy requirement. Electrification and their comparison, Traction motors and their characteristics.

(6) **Power System and Protection:** (a). Types of Power Station. Selection of site. General layout of Thermal, Hydro and Nuclear Stations. Economics of different types. Base load and peak load of stations. Pumped-storage Plants. (b). Transmission and Distribution: A.C. and D.C. Transmission systems. Transmission line parameters and calculations. Performance of Short, Medium and Long transmission lines, A-, B-, C-, D-parameters. Insulators. Mechanical design of overhead transmission lines and Sag calculation, Corona and its effects, Radio interference. EHVAC and HVDC transmission lines, underground cables. Per unit representation of power system. Symmetrical and unsymmetrical fault analysis. Symmetrical components and their application to fault analysis. Load flow analysis using Gauss-Seidel and Newton-Raphson methods. Fast de-coupled load flow. Steady-state and transient stability. Equal area criterion, Economic operation of power system, incremental fuel costs and fuel rate. Penalty factors. ALFC and AVR control for real-time operation of inter-connected power system. (c). Protection: Principle of arc extinction, Classification of circuit breakers. Restriking phenomenon. Calculation of restriking and recovery voltages. Interruption of small inductive and capacitive currents Testing of Circuit Breakers. (d). Relaying Principles: Primary and back-Up relaying, over-current, differential, impedance, and direction relaying principles. Constructional details. Protection schemes for transmission line, transformer, generator, and bus protection. Current and potential transformer and their applications in relaying. Traveling waves. Protection against surges, Surge impedance.

(OR)

SECTION-C (Light Current)

(7) **Communication System:** Amplitude, Frequency and Phase modulation and their comparison, Generation and detection of amplitude, frequency, phase and pulse modulated signals. Modulators and demodulators, Noise problems, Channel efficiency. Sampling theorem. Sound and vision broadcast, transmitting and receiving systems. Antennas and feeders. Transmission lines at Audio, Radio and ultra-high frequencies. Fiber-optics and optical communication systems. Digital communications, pulse code modulation. Data communication, satellite communication. Computer communication system- LAN, ISDN etc. Electronic Exchanges. (a) Microwaves: Electromagnetic waves, unguided media, wave guides. Cavity resonators and Microwave tubes, Magnetrons, Klystrons and TVVT. Solid-State microwave devices. Microwave amplifiers. Microwave receivers. Microwave filters and measurements. Microwave antennas.

(23) English Literature Paper-I

Answers must be written in English.

Section-A

Candidates will be required to show adequate knowledge of the following topics and movements:

The Renaissance: Elizabethan and Jacobean Drama; Metaphysical Poetry; The Epic and the Mock-epic; Neo-classicism; Satire; The Romantic Movement; The Rise of the Novel; The Victorian Age.

Section-B

Texts for detailed study are listed below:

- William Shakespeare: Twelfth Night, King Henry IV, Pt I, Macbeth and the Tempest.
- John Donne. The following poems: "Canonization", "Death be not proud", "The Good Morrow" and "The Relic".
- John Milton: Paradise Lost, Book-I
- John Dryden: All for Love
- Alexander Pope: The Rape of the Lock
- William Wordsworth. The following poems: "Intern Abbey", "Three Years She Grew", "Michael" and "Milton, Thou Shouldst be Living at This Hour"
- P B Shelley: "To a Skylark" and "Ode to the West Wind"
- Alfred Tennyson: "Ulysses" and "Lotos Eaters"
- Robert Browning: "My Last Duchess" and "The Lost Leader"
- Francis Bacon: "Of Studies" and "Of Truth"
- Charles Lamb: "Dream Children" and "Poor Relations"

Section-C

Text for non-detailed study are listed below:

- Jane Austen. Pride and Prejudice.
- Charles Dickens. Great Expectations.
- Thomas Hardy: Far from the Madding Crowd
- Mark Twain: The Adventures of Huckleberry Finn.

Subject: English Literature Paper-II

Answers must be written in English.

Section-A

Candidates will be required to show adequate knowledge of the following topics and movements:

Pre-Raphaelite Movement, Modernism; Poets of the Thirties; The stream-of-consciousness Novel; Absurd Drama; Colonialism and Post-Colonialism; Indian Writing in English; Feminist approaches to Literature.

Section-B

Texts for detailed study are listed below:

- William Butler Yeats. The following poems: "The Second Coming", "Sailing to Byzantium", "A Prayer for my Daughter", "Meru" and "Lapis Lazuli"
- T.S. Eliot. The following poems: "The Love Song of J. Alfred Prufrock" and "Journey of the Magi"
- W.H. Auden. The following Poems: "The Unknown Citizen" and "In Memory of W.B. Yeats"
- Philip Larkin. The Following poems: "Afternoons" and "Deceptions"
- Sylvia Plath. The following poems: "Mirror" and "Daddy"
- Derek Walcott. The Following Poems: "A Far Cry from Africa" and "Sea Grapes"
- Nissim Ezekiel. The following poems "Background, Casually", "Night of the Scorpion"

8. A.K. Ramanujan. The following poems: "Looking for a Cousin on a Swing", "On The Death of a Poem"

- John Osborne: Look Back in Anger.
- Eugene O'Neill: Desire Under the Elms
- Girish Karnad: Hayavadana
- Thomas Carlyle: "Hero as a Poet"
- John Ruskin: "The Veins of Wealth" (Essay II from Unto This Last)

Section-C

Texts for non-detailed study are listed below:

- Graham Greene: The Power and the Glory
- William Golding: Lord of the Flies
- Raja Rao: Kanthapura.
- Nathaniel Hawthorne: The Scarlet Letter

(24) उर्दू साहित्य: प्रथम प्रश्न- पत्र

(भाग-अ)

1-(अ) उर्दू भाषा का विकास : (अ) पश्चिमी हिन्दी और उसकी उप भाषायें – खड़ी बोली, ब्रजभाषा और हरियाणवी। (ब) उर्दू भाषा में फारसी –अरबी तत्व, (स) उर्दू भाषा सन् 1600 ई से 1900 ई तक (द) उर्दू भाषा का उद्भव- विभिन्न विचारधारायें।

2-(अ) दकन में उर्दू साहित्य का विकास (ब) उर्दू शायरी के दो क्लासिकी स्कूल: देहली और लखनऊ (स) उर्दू गद्य का विकास – गालिब तक।

3-(अ) अलीगढ़ तहरीक, प्रगतिशील आन्दोलन तथा इनका उर्दू साहित्य पर प्रभाव (ब) स्वतंत्रयत्न का उर्दू साहित्य।

(भाग-ब)

1. उर्दू शायरी की प्रमुख विधायें – गजल, कसीदा, मर्सिया, मसनवी, रुबाई, कता नज्म, अतुकान्त कविता एवं मुक्त छन्द कविता। 2 उर्दू गद्य की प्रमुख विधायें – दास्तान, उपन्यास, लघु कथा, नाट्य साहित्य, साहित्य समीक्षा, जीवन चरित्र, निबन्ध, खाका, इशाईया। 3 स्वतंत्रता आन्दोलन में उर्दू साहित्य का योगदान।

उर्दू साहित्य: द्वितीय प्रश्न- पत्र

इस प्रश्न –पत्र में मूल पाठ का अध्ययन अपेक्षित होगा। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायेंगे जिनसे परीक्षार्थी की आलोचनात्मक क्षमता का आंकलन किया जा सके।

(भाग-अ)

(गद्य)– 1 मीर अम्मन: बागो बहार, 2 गालिब: इंतेखाब – ए– खुतूते गालिब, सम्पादक –उ0प्र0 उर्दू अकाडमी,

3. हाली: मुकदमा–ए–शेरो शायरी 4. रूसवा: उमरावजान अदा 5. प्रेमचन्द्र: प्रेमचन्द्र के नुमाइन्दा अफसाने, सम्पादक– कमर रईस 6. अबुल कलाम अजाद: गुबार – ए– खातिर, 7. इम्तियाज अली ताज– अनारकली

8. कुर्रतुलऐन हैदर: आखिर – ए– शब के हमसफर।

(भाग-ब)

(19. मीर: इंतेखाब –ए–कलाम–ए–मीर, सम्पादक –अब्दुल हक 10 सौदा: कसाईद– ए– सौदा हज्वीयात सहित –इन्तेखाब –ए– कंसायद: उ0प्र0 उर्दू अकादमी लखनऊ, 11 गालिब: दीवान –ए– गालिब, 12.

इकबाल: कुल्लियात–ए– इकबाल (केवल बाल –ए– जिब्राइल) 13. जोश मलीहाबादी: सैफ–ओ–सुबू 14.

फिराक गोरखपुरी : गुल –ए–नगमा 15. फैज: दस्त–ए–सबा, 16 अख्तर –उल– ईमान: (केवल दो नज्में: तारीक सय्यारा, बिन्त–ए–लम्हात)।

(25) हिन्दी साहित्य प्रथम प्रश्न पत्र

भाग-1 हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि का इतिहास- 1. पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश तथा पुरानी हिन्दी का संक्षिप्त परिचय। 2. मध्यकाल में ब्रज और अवधी का काव्य भाषा के रूप में विकास। 3. खड़ी बोली साहित्यिक भाषा के रूप में विकास। 4. राजभाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा एवं मानक भाषा के रूप में हिन्दी। 5. वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी भाषा की स्थिति। 6. हिन्दी भाषा का क्षेत्र और अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, भोजपुरी, बुन्देली का क्षेत्र एवं भाषिक विशेषताएं। 7. मानक हिन्दी का व्याकरणिक स्वरूप। 8. नागरी लिपि का उद्भव और विकास, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, समस्यायें और समाधान। 9. हिन्दी शब्द – सम्पदा।

(भाग-2 हिन्दी साहित्य का इतिहास)

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा। 2. हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल- विभाजन तथा नामकरण। 3. आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल की प्रमुख प्रवृत्तियां। 4. आधुनिक काल: पुनर्जागरण और भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता एवं परवर्ती काव्यधारायें।

(क) हिन्दी उपन्यास, हिन्दी कहानी, हिन्दी नाटक एवं रंगमंच: उद्भव –विकास एवं इनकी अधुनातन प्रवृत्तियां

(ख) हिन्दी निबन्ध तथा अन्य गद्य विधायें: जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण यात्रा वृत्तान्त। (ग) हिन्दी आलोचना का प्रारम्भ और विकास। प्रमुख आलोचक : रामचंद्र शुक्ल, नन्ददुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, रामस्वरूप चतुर्वेदी।

हिन्दी साहित्य: द्वितीय प्रश्न पत्र,

(भाग- प्रथम)

इस प्रश्न-पत्र में निर्धारित रचनाओं में से व्याख्या एवं उन पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। कबीर

ग्रन्थावली, सम्पादक –श्याम सुन्दर दास, साखी संख्या 1 से 100 तक और पद संख्या 1 से 20 तक।

सूरदास (भ्रमरगीत सार) सम्पादक-रामचन्द्र शुक्ल, पद संख्या 51 से 100 (कुल 50 पद)

तुलसीदास- रामचरितमानस उत्तरकाण्ड- (दोहा संख्या- 75 से अन्त तक)। जायसी (पदमावत),

सम्पादक – रामचन्द्र शुक्ल (सिंहलदीप खण्ड और नागमती वियोग खण्ड), बिहारी संग्रह (प्रारम्भ से 100

दोहे तक) हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद।

जयशंकर प्रसाद – कामायनी – (श्रद्धा और इड़ा सर्ग) सुमित्रानन्दन पन्त- नौका बिहार, परिवर्तन, निराला –

राम की शक्ति पूजा, अज्ञेय – असाध्यवीणा, मुक्ति बोध- अन्धेरे में, नागार्जुन-बादल को धिरेते देखा है,

अकाल के बाद।

(भाग द्वितीय)

नाटक- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – अन्धेर नगरी, जयशंकर प्रसाद-स्कन्द गुप्त,

निबन्ध- रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि भाग-एक (कविता क्या है, श्रद्धा और भक्ति)। हजारी प्रसाद द्विवेदी –कुटुज (निबन्ध)

उपन्यास- प्रेमचन्द्र-गोदान, फणीश्वरनाथ रेणु- मैला आंचल।

हिन्दी की कहानियां- 1- प्रेमचन्द्र- मों, 2- जयशंकर प्रसाद- आकाशदीप, 3-अज्ञेय-रोज,

4- राजेन्द्र यादव- जहां लक्ष्मी कैद है, 5- उषा प्रियम्बदा-वापसी।

(26) संस्कृत-साहित्य: प्रथम प्रश्नपत्र

खण्ड-क- भाषा विज्ञान- भाषा का उद्भव और विकास, भाषाओं का वर्गीकरण, भारोपीय एवं मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ, अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण, ध्वनित्थियम, ध्वनिपरिवर्तन के कारण, संस्कृत –ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में मानवीय वाग्यन्त्र, संस्कृत-ध्वनियों के उच्चारण – स्थान एवं प्रयत्न, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत की तुलना।

खण्ड-ख- संस्कृत व्याकरण- सन्धि, समास, कृदन्त, तद्धित, स्त्रीप्रत्यय एवं कारक (लघुसिद्धान्तकौमुदी से)।

खण्ड-ग- भारतीय दर्शन- निम्नलिखित पाठ्यग्रन्थों के आधार पर भारतीय दर्शन का सामान्य अध्ययन- तर्कभाषा –केशव मिश्र (अनुमानपर्यन्त), सांख्यकारिका –ईश्वरकृष्ण, वेदान्तसार-सदानन्द, कठोपनिषद्-प्रथम अध्याय- द्वितीया वल्ली, श्रीमद्भगवद्गीता-द्वितीय अध्याय।

खण्ड-घ- संस्कृत-काव्यशास्त्र- (क) आनन्दवर्धनकृत ध्वन्यालोक, प्रथम उद्योत के आधार पर ध्वनि और उसके भेदों का सामान्य अध्ययन (ख) मम्मटकृत काव्यप्रकाश से निम्नलिखित विषय: काव्यप्रयोजन,

काव्यलक्षण, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्तियां, रससिद्धान्त, गुण तथा अनुप्रास, श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, अतिशयोक्ति व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, समासोक्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा, दृष्टान्त, दीपक एवं परिसंख्या अलंकार।

खण्ड-ड- संस्कृत में निबन्ध- संस्कृत में निबन्ध 250 शब्दों से कम का नहीं होना चाहिए।

संस्कृत-साहित्य : द्वितीय प्रश्नपत्र

खण्ड क- गद्य एवं पद्य- निम्नलिखित ग्रन्थों का अध्ययन: 1 कादम्बरी (शुकनासोपदेश), 2. शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास) 3 नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास) 4 मेघदूतम् (पूर्वमेघ), 5 किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) 6. नीतिशतकम्। (25 अंको के एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत में लिखना होगा)।

खण्ड-ख-नाट्यसाहित्य-नाट्य-साहित्य की निम्नलिखित रचनाओं की पाठ्यसामग्री का अध्ययन: 1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक) 2. उत्तररामचरितम् (तृतीय अंक), 3. प्रतिमानाटकम् (प्रथम एवं द्वितीय अंक), 4. मृच्छकटिकम् (प्रथम अंक)।

खण्ड-ग- पारिभाषिक शब्द- संस्कृत के निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान: महाकाव्य, खण्डकाव्य, कथा, आख्यायिका, चम्पू, प्रस्तावना, विष्कम्भक, प्रवेशक, सूत्रधार, वस्तुभेद, नायकभेद, विदूषक, पताकास्थानक, अर्थप्रकृतियों, कार्यावस्थाएं, पंचसन्धियां, नियतश्राव्य, स्वगत, जनान्तिक, आकाशभाषित, नेपथ्य, नाटक, प्रकरण एवं नाटिका।

खण्ड-घ- संस्कृत साहित्य का इतिहास- वेद एवं वेदांगों का सामान्य परिचय, निम्नलिखित साहित्यिक विधाओं का उद्भव, विकास और उनकी विशेषताएं: आर्षमहाकाव्य, महाकाव्य, गद्य काव्य, गीतिकाव्य, नाटक एवं कथा- साहित्य।

टिप्पणी: (इस खण्ड में 25 अंको का एक प्रश्न विशिष्ट रचना/ रचनाकार के विषय में टिप्पणी के रूप में प्रष्टव्य होगा)।

खण्ड ड- हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद।

(27) वाणिज्य एवं लेखांकन

प्रथम प्रश्नपत्र

(लेखांकन एवं वित्तीय प्रबन्ध)

भाग-1: लेखांकन

- लेखांकन की प्रकृति, अवधारणाएं एवं शाखाएं, वित्तीय लागत एवं प्रबन्धकीय लेखांकन से सम्बन्ध, लेखांकन के लाभ एवं परिसीमाएं, लेखांकन व्यवहार प्रकटीकरण (ए0एस0-1)
- अधिकार शुल्क-** प्रकार, विविध अधिकार शुल्क हेतु लेखांकन व्यवहार
- किराया क्रय प्रणाली-** अवधारणा एवं लक्षण, विक्रेता एवं क्रेता के पुस्तकों में लेखांकन प्रक्रिया, किराया क्रय बनाम किस्त भुगतान पद्धति
- शाखा लेखांकन-** आश्रित, अनाश्रित (स्वतंत्र) एवं विदेशी शाखाएं, लेखांकन व्यवहार- शाखा खाता, अन्तिम खाता, स्कन्ध एवं देनदार, थोक बिक्री शाखा विधियां
- एकीकरण एवं पुनः निर्माण की समस्याएं (ए0एस0-14), सूत्रधारी कम्पनी के लेखे, रोकड़ प्रवाह विवरण (ए0एस0-3)
- लागत लेखांकन की प्रकृति एवं कार्य, स्कन्ध मूल्यांकन विधियां, लागत पत्र का निर्माण, सीमान्त लागतांकन-अवधारणा, महत्व, सीमान्त बनाम अवशोषण लागतांकन, अंशदान, लाभ मात्रा अनुपात एवं सुरक्षा सीमा- उपात्त

भाग-2: वित्तीय प्रबन्ध:

- वित्तीय प्रबन्ध की प्रकृति, क्षेत्र एवं उद्देश्य, पूंजी बजटन निर्णय- महत्व, प्रक्रिया एवं परिसीमाएं, पद्धतियां-प्रत्यावर्तन अवधि, शुद्ध वर्तमान मूल्य, आन्तरिक प्रत्याय दर, औसत प्रत्याय दर
- अल्प, मध्यम एवं दीर्घकालीन वित्त के स्रोत, पूर्वाधिकार एवं समता अंश, ऋणपत्र एवं बाण्ड वित्तीयन
- कार्यशील पूंजी प्रबन्धन- वर्गीकरण, अपर्याप्त कार्यशील पूंजी के खतरे, कार्यशील पूंजी आवश्यकता अनुमान के उपागम, रोकड़, स्कन्ध और प्राप्य प्रबन्धन के उपकरण
- पूंजी की लागत- वर्गीकरण एवं निर्धारण, भारित औसत पूंजी लागत की गणना, उतोलक एवं इसके प्रकार
- लाभांश नीति- निर्धारक, वाल्टर, गार्डन, मोदीग्लानी और मिलर उपागम, स्थिर लाभांश नीति के गुण एवं दोष
- भारतीय पूंजी बाजार- प्रमुख विशेषताएं, पूंजी एवं मुद्रा बाजारों में भेद, पूंजी बाजार की खामियां, भारतीय स्कन्ध विनिमयों की कार्यप्रणाली, सेबी एक नियामक रूप में।

वाणिज्य एवं लेखांकन

द्वितीय प्रश्नपत्र

(संगठनात्मक व्यवहार तथा मानव संसाधन प्रबन्ध)

भाग-1: संगठनात्मक व्यवहार

- संगठन की प्रकृति एवं अवधारणा, संगठनात्मक सिद्धान्त- परम्परावादी, नवपरम्परावादी, अफसरशाही एवं प्रणाली उपागम, केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीयकरण के गुण एवं अवगुण
- शक्ति का आधार एवं स्रोत, शक्ति संरचना, बाधाएं एवं राजनीति
- संगठनात्मक लक्ष्य- प्राथमिक, गौण, एकल एवं बहु लक्ष्य, लक्ष्यों का विस्थापन, उत्तराधिकार, विस्तार एवं गुणन
- संगठन- प्रकार, संरचना, रेखा एवं स्टाफ, कार्यात्मक, समिति, आव्यूह एवं परियोजना, औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन, संगठनात्मक द्वन्द्व-कारण एवं समाधान
- संगठनात्मक परिवर्तन- प्रकृति, महत्व, कारण, निवारण, परिवर्तन का प्रतिरोध एवं अनुकूलन

भाग-2: मानव संसाधन प्रबन्ध

- मानव संसाधन प्रबन्ध-** अवधारणा, उद्देश्य, महत्व, कार्य एवं मानव संसाधन प्रबन्धक की चुनौतियां
- भर्ती एवं चयन, प्रशिक्षण की विधियां, अधिशासी विकास कार्यक्रम
- अभिप्रेरणा- अवधारणा, सिद्धान्त-**मास्लो की आवश्यकता क्रमबद्धता, हर्जवर्ग का स्वास्थ्य एवं आरोग्य तथा एल्डरमैन का जेड सिद्धान्त, मनोबल के निर्धारक, मनोबल और उत्पादकता
- नेतृत्व- प्रकार एवं शैली, मजदूरी-**मजदूरी भुगतान की पद्धतियां, विभेदात्मक मजदूरी तथा भारत में मजदूरी नीति
- औद्योगिक सम्बन्ध-** प्रकृति, उद्देश्य, क्षेत्र एवं महत्व
- सामूहिक सौदेबाजी-** अवधारणा, विशेषताएं, सफल सौदेबाजी की आवश्यकताएं, प्रबन्ध में श्रमिकों की भागेदारी- भागेदारी के स्तर एवं स्वरूप, भारत में श्रमिकों की भागेदारी
- औद्योगिक विवाद-** विवाद के कारण, हड़ताल, तालाबन्दी, औद्योगिक विवादों की रोक- थाम एवं निपटारा, श्रम संघ- अवधारणा, प्रकार, भारत में श्रमसंघ आन्दोलन

(28) लोक प्रशासन प्रश्न पत्र-1 (प्रशासनिक सिद्धान्त)

- मूल अवधारणा-** लोक प्रशासन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व, लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में क्रम-विकास (नवीन लोक प्रशासन, नवीन लोक प्रबन्धन, नवीन लोक सेवायें) लोक और निजी प्रशासन, विकसित एवं विकासशील समाजों में इसकी भूमिका, प्रशासन की पारिस्थितिकी- सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक।
- प्रशासन के सिद्धान्त-** शास्त्रीय सिद्धान्त (हेनरी फयोल, लूथर गुलिक तथा अन्य) वैज्ञानिक प्रबन्धन, (टेलर

एवं उनके सहयोगी), अधिकारी तंत्र का सिद्धान्त (मैक्स वेबर और उसके आलोचक) मानव सम्बंध सिद्धान्त (एल्टन मेयो और उनके साथी) व्यवस्था दृष्टिकोण (चेस्टर बरनार्ड)।

3. संगठन के सिद्धान्त- पद सोपान, आदेश की एकता, नियन्त्रण का क्षेत्र, सत्ता, प्राधिकार एवं उत्तरदायित्व, समन्वय, सम्प्रेषण, पर्यवेक्षण, केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीकरण, प्रत्यायोजन।

4. प्रशासनिक व्यवहार- हरबर्ट साइमन के योगदान के विशेष सन्दर्भ में निर्णयन, सम्प्रेषण, मनोबल, अभिप्रेरण और नेतृत्व के सिद्धान्त।

5. संगठन की संरचना- मुख्य कार्यकारी एवं उनके कार्य, सूत्र, मंत्रणा एवं सहायक अभिकरण विभाग, निगम, कम्पनी बोर्ड एवं आयोग, मुख्यालय - क्षेत्र सम्बन्ध।

6. कार्मिक प्रशासन- नौकरशाही तथा लोक सेवा, वर्गीकरण, भर्ती, प्रशिक्षण, वृत्ति विकास, निष्पादन मूल्यांकन, पदोन्नति, वेतन संरचना, सेवा शर्तें, सत्यनिष्ठा एवं अनुशासन, नियोक्ता-कर्मचारी सम्बन्ध, सेवानिवृत्ति लाभ, सामान्यज्ञ एवं विशेषज्ञ तटस्थता एवं अनामता।

7. वित्तीय प्रशासन- बजट की संकल्पना, बजट निर्माण, विधायन तथा कार्यान्वयन, निष्पादन बजट, शून्य आधारित बजट, लेखा एवं लेखा परीक्षण।

8. उत्तरदायित्व तथा नियंत्रण- उत्तरदायित्व एवं नियंत्रण की अवधारणा, प्रशासन पर विधायी, कार्यकारी, न्यायिक तथा नागरिक नियंत्रण।

9. प्रशासनिक सुधार- संकल्पनाएं एवं प्रक्रियायें, ओ तथा एम, कार्य अध्ययन और उसकी तकनीक, समस्यायें एवं सम्भावनायें।

10. प्रशासनिक विधि- अवधारणा एवं महत्व, प्रत्यायोजित विधायन, अर्थ, प्रकार, लाभ, सीमायें एवं सुरक्षा, प्रशासनिक अधिकरण।

11. तुलनात्मक एवं विकास प्रशासन- अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र, प्रिजमैटिक-साला, प्रतिरूप के विशेष सन्दर्भ में फ्रेड रिग्स का योगदान, विकास प्रशासन की अवधारणा: क्षेत्र, महत्व, विकास प्रशासन का राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक - सांस्कृतिक सन्दर्भ, प्रशासनिक विकास की संकल्पना।

12. लोक नीति- संकल्पनाएं एवं महत्व, लोक नीति के सिद्धान्त, लोक नीति- निर्धारण, कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन।

लोक प्रशासन प्रश्न पत्र-2 भारतीय प्रशासन

- भारतीय प्रशासन का क्रमिक विकास-** मौर्य, मुगल एवं ब्रिटिश कालीन प्रशासन की प्रमुख विशेषताएं।
- संवैधानिक परिवेश-** संसदीय लोकतंत्र, संघवाद, पंथनिरपेक्ष, समाजवाद।
- संघ स्तर पर राजनीतिक कार्यपालिका-** राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रिपरिषद, मंत्रिमण्डल समितियां।
- केन्द्रीय प्रशासन की संरचना-** केन्द्रीय सचिवालय, मंत्रिमण्डल सचिवालय, मंत्रालय एवं विभाग बोर्ड तथा आयोग, क्षेत्रीय संगठन।
- केन्द्र-** राज्य सम्बन्ध: विधायी, प्रशासनिक एवं वित्तीय।
- लोक सेवायें-** अखिल भारतीय, केन्द्रीय तथा राज्य सेवायें, संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग, लोक सेवकों का प्रशिक्षण।
- योजना तंत्र-** राष्ट्रीय स्तर पर योजना निर्धारण, नीति आयोग, राष्ट्रीय विकास परिषद, राज्य, जिला स्तर पर योजना तंत्र।
- लोक क्षेत्र उपक्रम-** प्रकार, उच्च स्तरीय प्रबन्धन, नियंत्रण एवं समस्यायें।
- लोक व्यय पर नियन्त्रण-** संसदीय नियंत्रण, वित्त मंत्रालय की भूमिका, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक।
- कानून एवं व्यवस्था सम्बन्धी प्रशासन-** कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने में केन्द्रीय तथा राज्य अभिकरणों की भूमिका।
- राज्य प्रशासन-** राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद, मुख्य सचिव, सचिवालय, निदेशालय।
- जिला प्रशासन-** भूमिका एवं महत्व, जिलाधिकारी, भूराजस्व, कानून एवं व्यवस्था तथा विकास सम्बन्धी कार्य, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिये विशेष कार्यक्रम।
- स्थानीय प्रशासन-** पंचायती राज एवं नगरीय स्थानीय शासन, लक्षण, प्रकार एवं समस्यायें, स्थानीय निकायों की स्वायत्तता।
- कल्याण हेतु प्रशासन-** अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के विशेष सन्दर्भ में कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए प्रशासन, महिला कल्याण हेतु कार्यक्रम।
- भारतीय प्रशासन के प्रासंगिक मुद्दे-** राजनीतिक एवं स्थायी कार्यपालकों के मध्य सम्बन्ध, प्रशासन में सामान्यज्ञ एवं विशेषज्ञ, प्रशासन में सत्यनिष्ठा, प्रशासन में जनसहभागिता, जनता की शिकायतों का निवारण लोकपाल एवं लोक आयुक्त, भारत में प्रशासनिक सुधार।

(29) चिकित्सा विज्ञान प्रश्न पत्र-प्रथम

- मानव शरीर :** सकलशरीर, अनुप्रयुक्त शरीर, सक्तसंभरण एवं जिह्वा का लिफ्फोय अपवाह, थायरॉइड, स्तन ग्रंथि, जठर, यकृत, प्रॉस्टेट, जननग्रंथि गर्भाशय, हृदय एवं फेफड़े। उपरि एवं अधोशाखाओं, स्कंधसंधियों, कूल्हे एवं कलाई में रक्त एवं तंत्रिका संभरण समेत अनुप्रयुक्त शरीर। डायफ्राम, पेरीनियम एवं वंक्षणप्रदेश का अनुप्रयुक्त शरीर। वृक्क, मूत्राशय, गर्भाशय नलिकाओं, शुक्रवाहिकाओं का अनुप्रयुक्त शरीर।
- भ्रूणविज्ञान :** अपरा एवं अपरा रोध। हृदय, आंत्र, वृक्क, गर्भाशय, डिंबग्रंथि, वृषण का विकास एवं उनकी सामान्य जन्मजात असामान्यताएं। केन्द्रीय एवं परिसरीय स्वसंचालित तंत्रिका तंत्र: मस्तिष्क के निलयों, प्रमस्तिष्कमेरु द्रव के परिभ्रमण का सकल एवं रोगलक्षण शरीर, तंत्रिका मार्ग एवं त्वचीय संवेदन, श्रवण एवं दृष्टि शिक्षित, कपाल तंत्रिकाएं, वितरण एवं रोगलाक्षणिक महत्व, स्वसंचालित तंत्रिका तंत्र के अवयव, इंटरनल कैप्सूल एवं सेरिब्रल कार्टेक्स।
- हृदयमन फिजीयोलोजी**
- ब्लड- इन्सुमिनिटी, टीसेल, बीसेल।
- सी0वी0एस0- कार्डियक साइकिल,
- रैस्पिरेशन- आब्सट्रैक्टिव डीजीज, एसिडबेस बैलेन्स।
- किडनी-** मिकटयूरेशन रीफलेक्स, रीनल स्टोन,
- जीआईटी-** लीवर फेलियर, जौनडिस, (आब्सट्रैक्टिव, हिपैटिक, हीमोलाइटिक) एक्यूट पेनक्रिटाइटिस
- एण्डोक्राइन-** ग्वाइटर माइलाइटिस, आसटियोमलेशिया, मास्टरगलैण्ड
- नर्वस-सिस्टम -** सैरिब्रल स्ट्रोक, पार्किन्सन डीजीज, हैमीपिलीजिया, पैरापीलिलिजिया
- स्पेशल सेन्सेस-** नाइट ब्लाइण्डनेस, कैटेरेक्ट, मायोपिया। हाइपर मेट्रोपिया, एम्बलायोपिया
- रिप्रोडक्शन-** प्रेगनेन्सी टेस्ट, लैक्टेशन, एमीनोरिया, स्टरलिटी इन मेल एवं फिमेल, ओव्यूलेशन, स्पर्म काउण्ट।
- जैव रसायन :-**

- अंगकार्य परीक्षण- यकृत, वृक्क, थायरॉइड।
- प्रोटीन संश्लेषण
- विटामिन एवं खनिज
- पालीमेरेज श्रृंखला प्रतिक्रिया (पीसीआर)
- किण्वक एवं जैव चिन्ह
- मधुमेह एवं रक्त शर्करा स्तर

Cont...

7. डी एन ए प्रतिरूप
8. आर एन ए प्रतिलिपि
9. डी एन ए मरम्मत तंत्र
10. लिपिड प्रोफाइल
11. पोषण
12. रूधिर वर्णिका
13. मुक्त कण एवं आक्सी करण रोधी
4. विकृति विज्ञान : थोथ एवं विरोहण, वृद्धि विक्षोभ एवं कैंसर रहयूमैटिक एवं इस्कीमिक हृदय रोग एवं डायबिटीज मेलिटस का विकृतिजनन एवं ऊतकविकृति विज्ञान। सुदम्य, दुर्दम, प्राथमिक एवं विक्षेपी दुर्दमता में विभेदन, श्वसनीजन्य कार्सिनोमा का विकृतिजनन एवं ऊतकविकृति विज्ञान, स्तन कार्सिनोमा, मुख कैंसर, ग्रीवा कैंसर, ल्यूकीमिया, यकृत सिरोसिस, स्तकवृक्कशोथ, यक्ष्मा तीव्र अस्थिमज्जाशोथ का हेतु, विकृतिजनन एवं ऊतक विकृति विज्ञान, रक्तअल्पता, थैलेसीमिया, फ़ैटी लीवर, अपेन्डिक्स शोथ, पित्त की थैली की पथरी, स्वप्रतिरक्षित रोग, स्टेम कोशिका।
5. सूक्ष्म जैविकी:- देहद्रवी एवं कोशिका माध्यमित रोगक्षमता, काक्स पाश्चुलेट निम्नलिखित रोगकारक एवं उनका प्रयोगशाला निदान:
– मेर्निगोकाक्कस, सालमोनेला
– ट्यूबरकूलोसिस, शिंगेला, हर्पीज, डेंगू, पोलियो, बैक्टीरियोफेजेस, इन्फ़ेलुएन्जा वायरस, जैपानीज एन्सेफ़लाइटिस
– एच0आई0वी0/एडस, मलेरिया, एन्टामीबा हिस्टोलिटिका, गियार्डिया
– कैंडिडा, क्रिप्टोकोक्कस, ऐस्पेर्जिलस
6. भेषजगुण विज्ञान:
• औषधि नामकरण
• प्रतिकूल औषधि प्रतिक्रिया
• औषधि अधिनियम एवं औषधि अनुसूची
• औषधि का नैदानिक परीक्षण
• औषधि की आयु
• औषधि का प्रचार
• मादक पदार्थों की लत (ड्रग एडिक्शन)
• फार्माकोविजिलेन्स कार्यक्रम
• औषधि हेतु पर्चा लिखना
• निम्नलिखित औषधियों का पार्श्वप्रभाव:
– ऐन्टिपायरेटिक्स एवं, एनाल्जेसिक्स, ऐन्टिबायोटिक्स, ऐन्टिमलेरिया, ऐन्टिकालाजार, ऐन्टिडायबेटिक्स
– ऐन्टिहायपरटेंसिव, ऐन्टिवाइरल, ऐन्टिपैरासिटिक, ऐन्टिफंगल, इन्सूलीनसुप्लैन्ट, ऐन्टिकैंसर, ऐन्टीडायरियल, ऐन्टीटुबरकुलर, डाययूरेटिक।
7. न्याय संबंधी औषध एवं विषविज्ञान: चिकित्सकीय आचार संहिता और कानून, गर्भावस्था, प्रसव एवं गर्भपात—चिकित्सा विधिक संदर्भ में, यौन अपराध, क्षति एवं घावों की न्याय संबंधी परीक्षा, रक्त एवं शुक्र धब्बों की परीक्षा, विषाक्तता, शामक अतिमात्रा, फांसी, डूबना, जलना, डी0एन0ए0 एवं फिंगरप्रिंट अध्ययन।

– चिकित्सा विज्ञान प्रश्नपत्र– द्वितीय

1. सामान्य काय चिकित्सा:-
(अ) कारण, रोग के लक्षण, निदान एवं प्रबन्धन (निवारण एवं रोकथाम सहित) व सिद्धान्त : टिटनेस, रैबीज, एचआईवी/एडस, डेन्गू, जापानी इन्सेफ़लाइटिस, टायफाइड, कुष्ठरोग, तपेदिक, मलेरिया, भारतीय कालाजार, रूह्युमेटिक हृदय रोग।
(ब) कारण, रोग के लक्षण, निदान एवं प्रबन्धन के सिद्धान्त : हृदय धमनियों के अवरोध (IHD) रक्तचाप, मधुमेह, हाईपर थायोरॉइडसिम, हाईपो थायोरॉइडसिम, मिर्गी, अस्थमा, क्रानिक आब्सेटिव लंग रोग (COPD), पिल्युरल इन्फ़ेक्शन वाइरलहेपेटाइटिस यकृत सिरोसिस पेप्टिक रोग, न्युमोनिया, अक्यूपेशनल, फेफड़ा रोग।
(स) कारण रोग के लक्षण, निदान एवं प्रबन्धन के सिद्धान्त : ग्लोमरूलोनेफराइटिस, नेफ्रोटिक/नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम, वृक्कपात, हाइपोनेट्रिमिया, थैलेसिमिया, एनिमिया, हिमोफिलिया, रक्त कैंसर, लिम्फोमा, गठिया रोग, आस्टियोपोरोसिस, मूत्र नलिका संक्रमण, मेनेनजाइटिस, इन्सेफ़ेलाइटिस,
(द) मेडिकल आकस्मिक रोग : लू, डूबना, आरगेनो फासफोरस विषाक्तता, अलमूनिया फासफाइड विषाक्तता।
(य) एंगजाइटिस, साइकोसिस, डिमेंसिया
(र) मेडिको लीगल विषयक: गले की फांसी, अल्कोहलिस्म
(व) काय चिकित्सा में परीक्षण : अल्ट्रासाउन्ड, सी टी स्कैन, एम आर आई, इकोकार्डियोग्राफी, इन्डोस्कोपी, बोन मैरो एस्पिरेशन, सीएसएफ फ्लूड परीक्षण, पूर्ण रक्त परीक्षण (CBC).
2. बालरोग विज्ञान : रोगप्रतिरोधीकरण, बेबी-फ्रेडली अस्पताल, स्तनपान, जन्मजात प्याव हृदय रोग, श्वसन विक्षोभ संलक्षण, श्वसनी-फुफुसशोथ, (ब्रोन्कोन्युमोनिया), नवजात शिशु कामला, प्रमस्तिष्कीय नवजात कामला, IMNCI वर्गीकरण एवं प्रबंधन, PEM कोटिकरण एवं प्रबंध, ARI एवं दस्त (अतिसार) पाँच वर्ष से छोटे बच्चों में एवं प्रबंध।
3. त्वचा विज्ञान: स्त्रोरिएसिस, स्केबीज, एकजीमा, विटिलिगो, स्टीवन जानसन सिन्ड्रोम एवं टी0ई0एन0, लाइकेन प्लेनस। कुष्ठ रोग, त्वचा के बैक्टेरियल, वायरल एवं फंगल संक्रमण।
4- सामान्य शल्य चिकित्सा: खंडतालु खंडोष्ठ की रोगलक्षण विशेषता, कारण एवं प्रबंध के सिद्धान्त। स्वरयंत्रीय अर्बुद, मुख एवं ईसोफैगस अर्बुद। परिधीय धमनी रोग, वेरिकोज वेन्स, थायराइड, अधिवृक्क ग्रंथि के अर्बुद। फोड़ा, कैंसर, स्तन का तंतुग्रंथि अर्बुद एवं ग्रंथिलता पेप्टिक अल्सर रक्तस्राव, आंत्र यक्ष्मा, अल्सरेटिव कोलाइटिस, जठर कैंसर, वृक्क मास, प्रोस्टेट कैंसर, सुसाध्य प्रास्टेट हाइपरप्लेसिया (बी0पी0एच0)। हीमोथोरेक्स, पित्ताशय, वृक्क, यूरेटर एवं मूत्राशय की पथरी। रेक्टम, एनस, एनल कैंनाल, पित्ताशय एवं पित्तवाहिनी की शल्य दशाओं का प्रबंध।
पोर्टल अतिरक्तदाब, यकृत फोड़ा, पेरीटोनाइटिस, पेरीएम्पुलरी कार्सिनोमा।
रीढ़ विभंग, कोली विभंग एवं अस्थि ट्यूमर
एंडोस्कोपी, लैप्रोस्कोपिक सर्जरी।
उन्नत आघात जीवन समर्थन प्रणाली (ए0टी0एल0एस0)।
सर्जिकल एथेक्सिस।
5- प्रसूति विज्ञान एवं परिवार नियोजन समेत स्त्री रोग विज्ञान:- फर्टिलाइजेशन व इम्प्लान्टेशन, प्लेसेन्टा का विकास, कार्य, विकृतियों व उनका निदान। गर्भावस्था में देखभाल सगर्भता का निदान प्रसव प्रबंध, तृतीय चरण उपद्रव, प्रसवपूर्ण एवं प्रसवेत्तर रक्त स्राव, नवजात का पुनरुज्जीवन, असामान्य स्थिति एवं कठिन प्रसव का प्रबंध, कालपूर्व प्रसव, कम बढ़त वाले नवजात का प्रबंध। बर्थ इन्जीयूरीस। अरक्तता

का निदान एवं प्रबंध। सगर्भता का प्रीएक्लैप्सिया एवं एक्लैप्सिया आर0एच0 निगेटिव, मधुमेह व अधिसंख्य गर्भधारण। इंट्रा- यूटैरीन युक्तियों गोलियों, ट्यूबेक्टॉमी एवं वैसेक्टॉमी। सगर्भता का चिकित्सकीय समापन जिसमें विधिक पहलू शामिल है। गर्भाशय का विकास, विकृतियों एवं उनका निदान, गर्भपात एवं एकटापिक प्रेगनेन्सी का कारण एवं निवारण, यूनी से श्राप, पेल्विक पेन, वंध्यता, एबनार्मल यूटैरीन रक्तस्राव (AUB), अमीनोरिया, यूटरस का तंतुपेशी (फायब्रायड)अर्बुद एवं भ्रंश। रजोनिवृत्त्युत्तर संलक्षण का प्रबंध, ग्रीवा कैंसर, गर्भाशय एवं अण्डाशय का कैंसर
6. समुदाय कायचिकित्सा (निवारक एवं सामाजिक कार्य चिकित्सा)
1. स्वास्थ्य एवं रोगों सम्बन्धी अवधारणायें।
2. सिद्धान्त, प्रणाली, उपागम एवं जनपदिक रोग विज्ञान का मापन।
3. खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, पोषण सम्बन्धी रोग/विकास एवं राष्ट्रीय पोषण कार्यक्रम।
4. पर्यावरण के घटक, प्रदूषण सम्बन्धी रोग एवं सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान, अस्पताल एवं उद्योग अपशिष्ट प्रबन्धन।
5. स्वास्थ्य सूचना प्रणाली, स्वास्थ्य सांख्यिकी, जनसांख्यिकी, सूचना प्रसार एवं सम्प्रेरण से संबंधित मूलभूत बातें।
6. स्वास्थ्य प्रबन्धन एवं प्रशासन- तकनीक, साधन, कार्यक्रम, कार्यन्वयन एवं मूल्यांकन।
7. स्वास्थ्य देखभाल प्रदाय प्रणाली का क्रान्तिक मूल्यांकन।
8. जनन एवं शिशु स्वास्थ्य के उद्देश्य, घटक, लक्ष्य एवं स्थिति, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, सहाश्राप्दी एवं सतत विकास लक्ष्य।
9. राष्ट्रीय स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के उद्देश्य, घटक एवं क्रान्तिक विश्लेषण (क) संचारी रोग (कीटजनित रोग नियंत्रण राष्ट्रीय कार्यक्रम, ने0वे0 बार्न डीजीज कन्ट्रोल कार्यक्रम), (ख) गैर संक्रामक रोग (गैर संक्रामक रोग के नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम)
10. व्यवसाय सम्बन्धित स्वास्थ्य।
11. आपदा प्रबंधन एवं मेले एवं त्योहारों में स्वास्थ्य प्रबन्धन।
12. स्वास्थ्य से सम्बन्धित नीतियाँ, अधिनियम एवं कानून।
13. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन।

परिशिष्ट-7

सहायक वन संरक्षक/क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा से सम्बन्धित मुख्य (लिखित) परीक्षा की परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम

मुख्य(लिखित) परीक्षा की परीक्षा योजना			
क्र0	प्रश्न-पत्र	समयावधि	पूर्णांक
01	पेपर- I सामान्य हिन्दी एवं निबन्ध (परम्परागत)	3.00 घण्टे	200 अंक
02	पेपर- II सामान्य अध्ययन प्रथम (वस्तुनिष्ठ)	2.00 घण्टे	200 अंक
03	पेपर- III सामान्य अध्ययन द्वितीय (वस्तुनिष्ठ)	2.00 घण्टे	200 अंक
04	पेपर- (iv) वैकल्पिक विषय प्रथम (परम्परागत)	3.00 घण्टे	200 अंक
	(प्रथम प्रश्नपत्र)		
	पेपर- (v) वैकल्पिक विषय प्रथम (परम्परागत)	3.00 घण्टे	200 अंक
	(द्वितीय प्रश्नपत्र)		
05	पेपर- (vi) वैकल्पिक विषय द्वितीय (परम्परागत)	3.00 घण्टे	200 अंक
	(प्रथम प्रश्नपत्र)		
	पेपर- (vii) वैकल्पिक विषय द्वितीय (परम्परागत)	3.00 घण्टे	200 अंक
	(द्वितीय प्रश्नपत्र)		

सभी प्रश्नपत्रों के कुल अंकों का योग 1400 अंक

व्यक्तित्व परीक्षण (साक्षात्कार):- 150 अंक।

सम्पूर्ण योग 1400+150 = 1550

वैकल्पिक विषयों में निम्नलिखित कुल 16 विषय सम्मिलित हैं, जिनमें से अभ्यर्थियों को कोई 02 वैकल्पिक विषय लेने होंगे:-

1. कृषि विज्ञान
2. कृषि इंजीनियरिंग
3. वनस्पति विज्ञान
4. रसायन विज्ञान
5. रसायन इंजीनियरिंग
6. सिविल इंजीनियरिंग
7. वानिकी
8. भू-विज्ञान
9. गणित
10. यांत्रिकी इंजीनियरिंग
11. भौतिकी
12. सांख्यिकी
13. प्राणि विज्ञान
14. पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान
15. उद्यान विज्ञान
16. पर्यावरण विज्ञान

किन्तु शर्त यह है कि उम्मीदवारों को निम्नलिखित विषयों को एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जायेगी:-

- (क) कृषि विज्ञान, कृषि इंजीनियरिंग एवं उद्यान विज्ञान
- (ख) गणित एवं सांख्यिकी
- (ग) रसायन विज्ञान और रसायन इंजीनियरिंग
- (घ) इंजीनियरिंग विषयों जैसे कृषि इंजीनियरिंग, रसायन इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग तथा यांत्रिक इंजीनियरिंग में से एक से अधिक विषय नहीं।

नोट:- ऊपर लिखे विषयों का स्तर और पाठ्य विवरण इस विज्ञापन के परिशिष्ट-8 की अनुसूची में दिया गया है।

परिशिष्ट-8

सहायक वन संरक्षक / क्षेत्रीय वन अधिकारी सेवा परीक्षा की

मुख्य (लिखित) परीक्षा हेतु सामान्य अनुदेश एवं पाठयक्रम

- मुख्य (लिखित) परीक्षा के सभी विषयों के प्रश्न-पत्र परम्परागत (निबन्ध शैली) प्रकार के होंगे किन्तु सामान्य अध्ययन विषय के प्रश्न-पत्र वस्तुनिष्ठ प्रकार के होंगे।
- सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर हिन्दी या अंग्रेजी में ही लिखने होंगे। प्रश्न-पत्र हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
- ऊपर उल्लिखित प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए तीन घण्टे का समय दिया जायेगा किन्तु सामान्य अध्ययन हेतु दो घण्टे का समय दिया जायेगा।

व्यक्तित्व परीक्षण

उम्मीदवारों का साक्षात्कार सुयोग्य और निष्पक्ष विद्वानों के बोर्ड द्वारा किया जायेगा। व्यक्तित्व परीक्षण-150 अंकों का होगा।

अनुसूची

सामान्य हिन्दी और सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्रों का स्तर ऐसा होगा जिसकी भारतीय विश्वविद्यालय के विज्ञान या इंजीनियरिंग ग्रेजुएट से आशा की जाती है।

इस परीक्षा के वैकल्पिक विषयों के प्रश्न-पत्र लगभग आनर्स डिग्री स्तर के होंगे अर्थात् बैचलर डिग्री से कुछ अधिक और मास्टर डिग्री से कुछ कम। इंजीनियरिंग विषयों के मामले में यह स्तर बैचलर डिग्री का होगा। किसी भी विषय में प्रायोगिक परीक्षा नहीं ली जायेगी।

वैकल्पिक विषय

वैकल्पिक विषयों के प्रश्न-पत्रों में प्रश्नों की कुल संख्या आठ होगी। सभी प्रश्नों के अंक बराबर होंगे। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के दो भाग होंगे अर्थात् भाग (क) और भाग (ख)। प्रत्येक भाग में चार प्रश्न होंगे। आठ प्रश्नों में से पाँच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक भाग में एक प्रश्न अनिवार्य होगा। प्रत्येक भाग से कम से कम एक-एक प्रश्न लेते हुए उम्मीदवारों को शेष छः प्रश्नों में से तीन और प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। इस प्रकार प्रत्येक भाग में से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे अर्थात् एक अनिवार्य प्रश्न तथा एक अन्य प्रश्न।

सामान्य हिन्दी एवं निबन्ध

प्रथम खण्ड सामान्य हिन्दी निर्धारित अंक 100

- अपठित गद्यांश का संक्षेपण, उससे सम्बन्धित प्रश्न, रेखांकित अंशों की व्याख्या एवं उसका उपयुक्त शीर्षक।
- शासकीय, अर्द्धशासकीय, वैयक्तिक तथा व्यवसायिक समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बन्धित को सम्बोधित पत्र, कार्यालय आदेश, अधिसूचना और परिपत्र सम्बन्धी पत्रलेखन/आलेखन।
- अनेकार्थी शब्द, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, तत्सम एवं तद्भव, क्षेत्रीय, विदेशी (शब्द भण्डार), वर्तनी, अर्थबोध, शब्द-रूप, संधि, समास, क्रियायें, हिन्दी वर्णमाला, विराम चिन्ह, शब्द रचना, वाक्य रचना, अर्थ, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, उ.प्र. की मुख्य बोलियाँ तथा हिन्दी भाषा के प्रयोग में होने वाली अशुद्धियाँ।

द्वितीय खण्ड हिन्दी निबन्ध निर्धारित अंक 100

इसके अन्तर्गत दो उपखण्ड होंगे। प्रत्येक उपखण्ड से एक-एक निबन्ध (कुल मिलाकर दो निबन्ध) लिखने होंगे। प्रत्येक निबन्ध की विस्तार सीमा 700 शब्द होगी। निबन्ध हेतु निम्नवत् क्षेत्र होंगे:-

- (अ) (i) साहित्य, संस्कृति (ii) राष्ट्रीय विकास योजनायें/क्रियान्वयन (iii) कृषि, उद्योग एवं व्यापार।
(ब) (i) विज्ञान, पर्यावरण (ii) प्राकृतिक आपदायें एवं उनके निवारण (iii) राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय,
सामयिक सामाजिक
समस्यायें/निदान।

सामान्य अध्ययन- प्रश्न-पत्र - I

- भारत का इतिहास (प्राचीन, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन)।
- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं भारतीय संस्कृति।
- जनसंख्या, पर्यावरण एवं नगरीकरण (भारतीय परिप्रेक्ष्य में)।
- विश्व का भूगोल, भारत का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण घटनाक्रम।
- भारतीय कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य।
- उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में शिक्षा, संस्कृति, कृषि, व्यापार, वाणिज्य एवं रहन-सहन तथा सामाजिक प्रथाओं की विशिष्ट जानकारी भारत के इतिहास और भारतीय संस्कृति में लगभग उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग से लेकर देश का व्यापक इतिहास रहेगा और साथ में गांधी, टैगोर और नेहरू से सम्बन्धित प्रश्न भी सम्मिलित होंगे। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं में खेल-कूद से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी रहेंगे।

सामान्य अध्ययन-प्रश्न-पत्र - II

- भारतीय राज व्यवस्था।
- भारतीय अर्थव्यवस्था।
- सामान्य विज्ञान, भारत के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका और प्रभाव एवं दैनिक जीवन में विज्ञान की महत्ता।
- सामान्य बौद्धिक योग्यता।
- सांख्यिकी विश्लेषण, लेखाचित्र (ग्राफ) तथा आरेख (डायग्राम) भारतीय राज व्यवस्था से सम्बन्धित खण्ड में भारत की राजनीतिक व्यवस्था से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। भारतीय अर्थव्यवस्था में देश की आर्थिक नीति के सामान्य लक्षणों का समावेश होगा। भारत के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका और उसके प्रभाव से सम्बन्धित खण्ड में ऐसे प्रश्न पूछे जायेंगे, जो अभ्यर्थी की इस क्षेत्र में जानकारी की परीक्षा करें। इसमें प्रायोगिक पक्ष पर बल दिया जायेगा। सांख्यिकीय विश्लेषणों में आरेख व चित्र रूप में प्रस्तुति तथा सामग्री के आधार पर सहज बुद्धि का प्रयोग करते हुये कुछ निष्कर्ष निकालने और उसमें पायी गयी कमियाँ, सीमाओं और विसंगतियों का निरूपण करने की क्षमता की परीक्षा होगी।

कृषि विज्ञान

प्रश्न पत्र-1

परिस्थिति विज्ञान और मानव के लिए उसकी प्रासंगिकता, प्राकृतिक संसाधन, उन्हें कायम रखने का प्रबन्ध तथा संरक्षण, फसलों के उत्पादन तथा वितरण के कारक के रूप में भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण फसलों की वृद्धि में जलवायवीय मूल तत्त्वों का प्रभाव, पर्यावरण के संकेतक के रूप में सस्य क्रम पर परिवर्तनशील पर्यावरण का प्रभाव फसलों, प्राणियों व मानवों के पर्यावरणी प्रदूषण से सम्बद्ध संकट।

देश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में सस्य क्रम में विस्थापन पर अधिक पैदावार वाली तथा अल्पाधि किस्मों का प्रभाव बहु-सस्यन, बहुस्तरीय, अनुपद तथा अंतरा सस्यन की संकल्पना तथा खाद्य उत्पादन में इनका महत्व देश के विभिन्न क्षेत्रों में खरीफ तथा रबी मौसमों में उत्पादित मुख्य अनाज, दलहन, तिलहन, रेशा, शर्करा, व्यावसायिक तथा चारा फसलों के उत्पादन हेतु पैकेज रीतियाँ।

विविध प्रकार के वन रोपन जैसे वन विस्तार, सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा प्राकृतिक वनों की मुख्य विशेषताएँ, क्षेत्र तथा विस्तार।

खरपतवार, उनकी विशेषताएँ, प्रकीर्णन तथा विभिन्न फसलों के साथ उनकी सम्बद्धता, उनका गुणन, खर-पतवारों का कर्षण, जैविक तथा रासायनिक नियंत्रण।

मृदा- भौतिक, रसायनिक तथा जैविक गुण मृदा रचना के प्रक्रम तथा कारक भारतीय मृदाओं का आधुनिक वर्गीकरण मृदा के खनिज तथा कार्बनिक संघटक और मृदा की उत्पादकता बनाये रखने में उनकी भूमिका पौधों के लिए आवश्यक पोषक पदार्थ तथा मृदा और पौधों के अन्य लाभकारी तत्व मृदा उर्वरता के सिद्धान्त तथा विवेकपूर्ण उर्वरक प्रयोग और समाकलित पोषक प्रबन्ध का मूल्यांकन, मृदा में नाइट्रोजन की हानि, जल मग्न धान-मृदा में नाइट्रोजन उपयोग क्षमता, मृदा में नाइट्रोजन यौगिकीकरण, मृदाओं में फास्फोरस तथा पोटेशियम का यौगिकीकरण तथा उनका दक्ष उपयोग समस्याजनक मृदायें तथा उनके सुधार के तरीके।

जल विभाजन के आधार पर मृदा संरक्षण योजना पर्वतीय, गिरिपादों तथा घाटियों में अपरदन तथा अपवाह प्रबन्धन; इनको प्रभावित करने वाले प्रक्रम तथा कारक, बारानी कृषि तथा उससे सम्बन्धित समस्याएं, वर्षा पोषित कृषि क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में स्थिरता लाने की प्रौद्योगिकी। सस्य उत्पादन से सम्बन्धित जल उपयोग क्षमता, सिंचाई कार्यक्रम के मानदण्ड, सिंचाई जल की अपवाह हानि को कम करने की विधियाँ तथा साधन (उपाय) ड्रिप (टपकाकर) तथा छिड़काव द्वारा सिंचाई जलाक्रांत भूमि से जल का निकास, सिंचाई जल की गुणवत्ता, मृदा तथा जल प्रदूषण पर औद्योगिक बहिष्कारों का प्रभाव।

फार्म प्रबन्ध, विषम क्षेत्र, महत्व तथा विशेषताएं, फार्म आयोजना, संसाधनों का इष्टतम उपयोग तथा बजट बनाना विभिन्न प्रकार की कृषि प्रणालियों की अर्थ व्यवस्था।

कृषि निवेशों और उत्पादों का विपणन और मूल्य निर्धारण, मूल्य उतार-चढ़ाव तथा उनकी लागत; कृषि अर्थ व्यवस्था में सहकारी संस्थाओं की भूमिका; कृषि के प्रकार तथा प्रणालियों और उसको प्रभावित करने वाले कारक।

कृषि विस्तार, इसका महत्व तथा भूमिका, कृषि विस्तार कार्यक्रमों के मूल्यांकन की विधियाँ, सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण तथा छोटे-बड़े और सीमान्त कृषकों व भूमिहीन कृषि श्रमिकों की स्थिति, फार्म यंत्रिकीकरण तथा कृषि उत्पादन और ग्रामीण रोजगार में उनकी भूमिका विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम; प्रयोगशाला से खेतों तक का कार्यक्रम।

कृषि विज्ञान

प्रश्न पत्र-2

कोशिका सिद्धान्त, कोशिका संरचना, कोशिका अंगक तथा उनके कार्य, कोशिका विभाजन, न्यूक्लीक अम्ल- संरचना तथा कार्य, जीन संरचना तथा उनका कार्य, आनुवंशिकता के नियम तथा पादप प्रजनन में उनकी सार्थकता गुण सूत्र (क्रोमोसोम) संरचना, गुण सूत्र विपथन, सहलग्नता एवं जीन विनियम तथा पुनर्योजन प्रजनन में उनकी सार्थकता बहुगुणिता, सुगुणित तथा असुगुणित सूक्ष्म एवं गुरु उत्परिवर्तन तथा फसल सुधार में उनकी भूमिका विविधता, विविधता के घटक वंशागतित्व, बन्धयता तथा असंयोज्यता, वर्गीकरण तथा फसल सुधार में उनका अनुप्रयोग कोशिकाद्रव्यी वंशागति, लिंग सहलग्न, लिंग प्रभावित तथा लिंग सीमित लक्षण।

पादप प्रजनन का इतिहास जनन की विधियाँ, स्वनिसेचन तथा संकरण तकनीकें फसली पौधों का उद्भव एवं विकास, उद्भव का केन्द्र, समजात श्रेणी के नियम, सस्य आनुवंशिक संसाधन-संरक्षण तथा उपयोग प्रमुख फसलों के सुधार में पादप प्रजनन के सिद्धान्तों का अनुप्रयोग शुद्ध वंशाक्रम वरण, वंशावली, समूह तथा पुनरावर्ती वरण, संयोजी क्षमता, पादप प्रजनन में उसका महत्व, संकर ओज एवं उसका उपयोग, प्रजनन की प्रतीप संकरण विधि, रोग एवं पीडक प्रतिरोध के लिए प्रजनन अन्तराजातीय तथा अन्तरावंशीय संकरण की भूमिका पादप प्रजनन में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका विभिन्न फसली पौधों की उन्नत किस्में, संकर, मिश्र। बीज प्रौद्योगिकी एवं उसका महत्व, विभिन्न प्रकार के बीज तथा बीज उत्पादन और संसाधन की तकनीकें भारत में बीज उत्पादन, संसाधन तथा विपणन में सरकारी एवं निजी क्षेत्र की भूमिका।

शरीर क्रिया विज्ञान और कृषि विज्ञान में इसका महत्व अंतः शोषण, पृष्ठ तनाव, विषरण और पराषरण, जल का अवशोषण और स्थानान्तरण, वाष्पोत्सर्जन और जल की मितव्ययिता।

प्रकिण्व (एन्जाइम) और पादक वर्णक; प्रकाश संश्लेषण आधुनिक संकल्पनायें और इसके प्रक्रम को प्रभावित करने वाले कारक, अक्सी व अनाक्सी श्वसन; सी3, सी4 तथा सीएएम क्रिया विधि कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन तथा वसा उपापचय।

वृद्धि व परिवर्धन, दिप्तिकालिता और बसन्तीकरण आक्सिन, हार्मोन और अन्य पादप नियामक-इनकी क्रिया की क्रिया विधि तथा कृषि में महत्व, बीज परिवर्धन तथा अंकुरण की कार्यिकी; प्रसूति जलवायवीय आवश्यकतायें तथा प्रमुख फलों, सब्जियों और पुष्पी पौधों का कर्षण; पैकेज रीतियाँ और उनका वैज्ञानिक आधार फलों व सब्जियों के संभलाव तथा विपणन की समस्यायें महत्वपूर्ण फलों तथा सब्जियों के उत्पादों के परीक्षण की मुख्य विधियाँ, संसाधन तकनीकें तथा उपस्कर, मानव पोषण में फलों और सब्जियों की भूमिका, शोभाकारी पौधों को उगाना, लॉन और बाग-बगीचों का अभिकल्पन तथा अभिविन्यास।

भारत में सब्जियों, फलोद्यानों और रोपण फसलों की बीमारियाँ और पीडक (नाशक जीन) पादप पीडकों तथा बीमारियों के कारण तथा वर्गीकरण पादप पीडकों तथा बीमारियों के नियंत्रण के सिद्धान्त पीडकों और रोगों का जैविक नियंत्रण पीडकों व रोगों का समाकलित प्रबन्धन जानपदिक रोग निदान एवं पूर्वानुमान पीडकनासियों, संरूपण एवं क्रिया विधि, राइजोबियमी निवेश द्रव्य के साथ उनकी संगतता, सूक्ष्म जीवी अविष।

अनाज व दालों के भण्डार पीडक तथा रोग और उनका नियंत्रण। भारत में खाद्य उत्पादन तथा उपभोग की प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य नीतियाँ उत्पादन प्राषण वितरण और संसाधन के अवरोध राष्ट्रीय आहार प्रतिमान से खाद्य उत्पादनो का सम्बन्ध, कैलोरियों और प्रोटीन की विशेष कमियां।

कृषि इंजीनियरिंग

प्रश्न पत्र-1

खण्ड-क

1. मृदा तथा जल संरक्षण : मृदा तथा जल संरक्षण का क्षेत्र भूमि कटाव की प्रक्रिया तथा प्रकार और उनके कारण वर्षा, अपवाह तथा अवसादन सापेक्षता और उनका मापन भूमि कटाव के जैविक तथा अभियांत्रिकी नियंत्रक उपाय जिनमें धारा-किनारा संरक्षण, वनस्पतिक (वेजिटेटिव) अवरोधक, समोच्च बांध, समोच्च खाइयाँ, समोच्च पथरीली दीवारें, वेदिकाएं (टैरेस), निकासी तथा घासाच्छादित जलमार्ग शामिल हैं, नाली नियंत्रण संरचनाएं- अस्थायी तथा स्थायी- स्थायी मृदा संरचनाएं जैसे ढलवीं नाली (शूट), जलप्रपात तथा वेग-नियंत्रक, उत्थूलव मार्ग का अभिकल्प फार्म तालाब तथा अन्तःसावी तालाबों का अभिकल्प, बाढ़ नियंत्रण-बाढ़ अनुशीलन के सिद्धान्त, जल विभाजन प्रबन्ध-अन्वेषण, योजना तथा कार्यान्वयन-प्राथमिकताओं पर क्षेत्रों का चयन तथा जल विभाजन कार्य योजना, जल हार्बेस्टिंग तथा आर्द्रता संरक्षण, भूमि विकास-समतलन, खनन मिट्टी आयतन का आकलन और लागत निर्धारण, वायु कटाव प्रक्रम-शेल्टर बैल्टो तथा वायु अवरोधों का अभिकल्प तथा उनका प्रबन्ध, वन (संरक्षण) अधिनियम।

2. वायवीय फोटोग्राफी तथा सुदूर संवेदन : फोटोग्राफिक छवि की मूलभूत विशेषताएं, व्याख्या शैलियाँ, व्याख्या

Cont...

के लिए उपस्कर, भूमि उपयोग, भूविज्ञान, मृदा तथा वानिकी के लिए छवि व्याख्या, सुदूर संवेदन—परम्परागत तथा सुदूर संवेदी उपगमन के गुण तथा अवगुण, उपग्रह छवियों के प्रकार उपग्रह छवि व्याख्या के मूल सिद्धान्त, मृदा जल तथा भूमि उपयोग के प्रबन्ध के लिए दृश्य तथा अंकीय निर्वचन की तकनीकें वन व्यवस्था, जलस्रोतों आदि सहित जल विभाजकों, वनों की योजना तथा विकास में जीआइएस का उपयोग।

खण्ड—ख

3. सिंचाई तथा जलनिकास (ड्रेनेज): सिंचाई के लिए जल के स्रोत, लघु सिंचाई परियोजनाओं की योजना तथा डिजाइन—मृदा आर्द्रता मापन की तकनीकें—प्रयोगशाला तथा स्वस्थानें, मृदा—जल—पादप सम्बन्ध, फसल की जल अपेक्षाएं, भूतल तथा भूमिगत जल के कंजक्टिव प्रयोग की योजना, सिंचाई जल का मापन, मापने के साधन मुखछेद, बंधारा तथा अवनलिका, सिंचाई की पद्धतियाँ—सतही, छिड़काव तथा टपकना, फर्टिगेशन, सिंचाई कुशलताएं और उनका आकलन, नहरों, खेतों में जलमार्ग, भूमिगत पाइपलाइन, निकासद्वार, दिश परिवर्तन कक्ष तथा सड़क पार करने की संरचनाओं का डिजाइन तथा निर्माण।

भूजल की प्राप्ति, कुओं की जल व्यवस्था, कुओं के प्रकार (ट्यूबवैल तथा ओपेन वेल) और उनका निर्माण कुओं का विकास और परीक्षण, पम्पों के प्रकार, चयन तथा स्थापना, रूग्ण तथा विफल कुओं की पुनर्स्थापना, जल निकास जल ग्रसन के कारण तथा लवण समस्याएं, जल निकास की पद्धतियाँ—सिंचित तथा असिंचित भूमि का जल विकास, सतह, उपसतह तथा उर्ध्वधार जल निकास पद्धतियाँ, निकृष्ट जल का सुधार तथा उपयोग, सेलीन और अल्काली मृदाओं का उद्धार, सिंचाई तथा जल निकास प्रणालियों का अर्थशास्त्र/व्यर्थ जल का सिंचाई के लिए उपयोग—दीर्घवधि सिंचाई, संगतता तथा अर्थोपाय के लिए व्यर्थ जल के मानक स्तर।

4. कृषिक संरचनाएं: फार्म प्रतिष्ठान, फार्म हाउस, पशुगृह, डेयरी भुसौरा, मुर्गी—गृह, शूकर गृह, मशीनें तथा उपस्कर स्थल के लिए स्थान का चयन, डिजाइन व निर्माण, खाद्यान्नों, भोजन तथा चारे के लिए भंडारण संरचनाएं, बाड़ा तथा कृषि सड़कों के लिए डिजाइन और निर्माण, पादप पर्यावरण के लिए संरचनाएं, ग्रीन हाउस, पॉली हाउस तथा शोड हाउस, निर्माण में प्रयोग की जाने वाली सामान्य भवन निर्माण सामग्री, टिम्बर, ईट, पत्थर, टाइलें, कंक्रीट आदि और उनके गुणधर्म, जल आपूर्ति, जलनिकास तथा स्वच्छता प्रबन्ध पद्धतियाँ।

कृषि इंजीनियरिंग

प्रश्न पत्र—2

खण्ड—क

1. फार्म पावर तथा मशीनरी: कृषि यंत्रिकरण और इसका क्षेत्र फार्म पावर के स्रोत—सजीव तथा इलेक्ट्रो यांत्रिक, तापगतिकी, आंतरिक दहन इंजिनों की संरचना और कार्यप्रणाली आंतरिक दहन इंजिनों के लिए ईंधन, प्रज्वलन, स्नेहन, शीतलन तथा नियंत्रण प्रणाली, विभिन्न प्रकार के ट्रैक्टर तथा पावर ट्रिल्लर पावर ट्रांसमिशन, ग्राउण्ड ड्राइव, पावर टेक—ऑफ तथा कंट्रोल सिस्टम प्राथमिक तथा द्वितीयक जुताई के लिए।

फार्म मशीनरी का प्रचालन तथा रख—रखाव, कर्षण सिद्धान्त बुआई, प्रतिरोपण तथा निराई—गुड़ाई उपकरण तथा औजार, पादप संरक्षण यंत्र छिड़काव तथा प्रकीर्णन, फसल कटाई, थ्रेसिंग तथा कम्बाइन उपकरण, अर्थ—मूविंग तथा भूमि विकास मशीनरी—पद्धतियाँ तथा लागत आकलन अर्गोनामिक्स ऑफ मेन—मशीन सिस्टम बागवानी तथा कृषि वानिकी के लिए उपकरण, भोज्य एवं चारा, कृषि तथा वन उत्पादों की ढुलाई।

2. कृषि ऊर्जा: कृषि सम्बन्धी कार्यों तथा कृषि संसाधनों की ऊर्जा जरूरतें, कृषि अनुप्रयोगों के लिए बिजली की मोटरों का चुनाव, अधिष्ठापन, सुरक्षा तथा रख—रखाव, सौर (थर्मल तथा फोटोवोल्टिक) पवन तथा बायोगैस ऊर्जा और कृषि में उनका उपयोग, आईसी इंजिनों के प्रचालन तथा इलैक्ट्रिक पावर उत्पादन के लिए बायोगैस का गैसीकरण ऊर्जा दक्ष कुकिंग स्टोव तथा विकल्पी कुकिंग ईंधन, कृषि तथा कृषि उद्योग अनुप्रयोगों के लिए बिजली का वितरण।

खण्ड—ख

3. कृषि संसाधन इंजीनियरिंग: फसलों की उपजोत्तर प्रौद्योगिकी और इसका क्षेत्र, कृषि उत्पादों और उत्पादों के इंजीनियरिंग गुणधर्म, यूनिट प्रचालन—कृषि उत्पादों तथा उपोत्पादों की सफाई, ग्रेडिंग, आकार, न्यूनन, घनीकरण सांद्रण, शुष्कन/निर्जलीकरण, वाष्पन, फिल्टरन, प्रशीतन तथा संवेष्टन—सामग्री संभालने के उपकरण।

बैल्ट तथा स्कूवाहक, बाल्टी उत्पापक, उनकी क्षमता तथा शक्ति अपेक्षाएं

दुग्ध तथा डेयरी उत्पादों का संसाधन—समांगीकरण, क्रीम पृथक्करण, पाश्चुरीकरण, निर्जर्मीकरण, स्फ्रे तथा रोलर शुस्कन, मक्खन बनाना, आईसक्रीम, पनीर तथा श्रीखण्ड बनाना अवशेष तथा उपोत्पाद उपयोग—चावल की भूसी, चालव का चोकर, गन्ने की खोई, पादप अवशिष्ट तथा क्रोयर मज्जा।

4. कृषि इंजीनियरिंग में माप यंत्रण तथा कम्प्यूटर अनुप्रयोग: इलेक्ट्रॉनिक साधन तथा उनके लक्षण—दिष्टकारी, प्रवर्धक, दोलित्र, बहुकम्पित्र, अंकीय—सर्किट—अनुक्रमिक तथा संयुक्त प्रणालियाँ, आंकड़े प्राप्त करने तथा कृषि इंजीनियरी प्रक्रम नियंत्रण में माइक्रोप्रोसेसरों का अनुप्रयोग, तल, प्रवाह, विकृति, बल, बल—आघूर्ण, शक्ति, दबाव, निर्वात तथा तापमान के लिए, माप पद्धतियाँ, कम्प्यूटर—परिचय, इनपुट/आउटपुट डिवाइसेस, सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट, मैमोरी डिवाइसेस, आपरेटिंग सिस्टम, प्रोसेसर की—बोर्ड तथा प्रिन्टर्स, कृषि इंजीनियरी में कलनविधि प्रवाह चार्ट विनिर्देश, प्रोग्राम रूपान्तरण तथा समस्या विश्लेषण, मल्टीमीडिया तथा श्रव्यदृश्य सहायक सामग्री।

वनस्पति विज्ञान

प्रश्न—पत्र—1

1. सूक्ष्मजैविकी एवं पादप रोग विज्ञान: विषाणु, जीवाणु एवं प्लाज्मिड—संरचना एवं जनन, संक्रमण का सामान्य वर्णन, पादप प्रतिरक्षा विज्ञान, कृषि, उद्योग, चिकित्सा तथा वायु एवं मृदा एवं जल में प्रदूषण—नियंत्रण में सूक्ष्मजैविकी के अनुप्रयोग।

विषाणुओं, जीवाणुओं, माइकोप्लाज्मा, कवकों तथा सूत्रकृमियों द्वारा होने वाले प्रमुख पादप रोग, संक्रमण तथा रोग प्रतिरोध/प्रतिरक्षा की विधियाँ, परजीविता की कार्यिकी और नियंत्रण के उपाय। कवक आविष।

2. क्रिप्टोगेम्स: शैवाल, कवक, बायोफाइट, टेरिडोफाइट—संरचना और जनन के विकासात्मक पहलू, भारत में क्रिप्टोगेम्स का वितरण और उनके आर्थिक महत्व की सम्भावनाएं।

3. पुष्पोद्भिद : अनावृतबीजी : पूर्व अनावृतबीजी की अवधारणा, अनावृतबीजी का वर्गीकरण और वितरण, साइकैडेलीज, कोनीफेरेलीज और नीटेलीज के मुख्य लक्षण, संरचना व जनन, साइकैडोफिलिकेलीज, बैन्नेटिटेलेज तथा कार्डेलीज का सामान्य वर्णन।

आवृतबीजी (एंजियोस्पर्म): वर्गीकी, शरीर, भ्रूण विज्ञान, परमाणु विज्ञान और जाति वृत्त।

आवृतबीजियों के वर्गीकरण की विभिन्न प्रणालियों का तुलनात्मक विवरण, आवृतबीजी कुलों का अध्ययन—मैग्गोलिएसी, रैननकुलैसी, ब्रैसीकेसी (कूसीफेरी), रोजेसी, लेग्यूमिनोसी, यूफार्बिऐसी, मालवेसी, डिप्टेरोकार्पोसी, एपिएसी (अम्बेलीफेरी), एस्कलेपिडिएसी, वर्बनिसी, सोलैनेसी, रुबि नएसी, कुकुरबिटेसी, ऐस्टीरसी (कंपोजिटी), पोएसी (ग्रामिनी) ऐरीकेसी (पामी), लिलिएसी (म्यूजेसी), आर्कीडेसी। रंध और उनके प्रकार, विसंगत द्वितीयक वृद्धि, सी—3 और सी—4 पौधों का शरीर।

नर और मादा युग्मकोद्भिद का परिवर्धन, परागण, निषेचन, भ्रूणपोष—इसका परिवर्धन और कार्य। भ्रूण परिवर्धन का स्वरूप। बहु—भ्रूणता, असंगजनन, परागण विज्ञान के अनुप्रयोग।

4. पादप उपयोगिता तथा दोहन: कृष्ट पौधों का उद्भव, उद्भव सम्बन्धी वैविलोव के केन्द्र। खाद्य, चारा, रेशों, मसालों, पेय पदार्थों, औषधियों, स्वापकों (नशीले पदार्थों), कीटनाशियों, इमारती लकड़ी, गोंद, रेशियों तथा रंजकों के स्रोतों के रूप में पौधे।

लैटेक्स, सेलुलोज, मंड और उनके उत्पाद, इत्रसाजी, भारत के सन्दर्भ में नृकुलवनस्पतिकी का महत्व, ऊर्जा वृक्षरोपण, वानस्पतिक उद्यान और पादपालय।

5. आकारजनन: पूर्णशक्तता ध्रुवणता, सममिति और विभेदन, कोशिका, ऊतक, अंग एवं जीवद्रव्यक संवर्धन, कायिक संकर और द्रव्यसंकर।

वनस्पति विज्ञान

प्रश्न—पत्र—2

1. कोशिका जैविकी: कोशिका जैविकी की प्रविधियाँ, प्राकेन्द्रकी और सुकेन्द्रकी कोशिकाएं—संरचनात्मक और परासंरचनात्मक बारीकियाँ, कोशिकाबाह्य आधात्री अथवा ईसीएम (कोशिकाभित्त) तथा झिल्लियों की संरचना और कार्य/कोशिका आसंजन, झिल्ली अभिगमन तथा आसयी अभिगमन, कोशिका अंगकों (हरितलवक, सूत्रकणिकाएं, ईआर, राइबोसोम, अंतःकाय, लयनकाय, परआक्सीसोम हाइड्रोजिनोसोम) की संरचना और कार्य, केन्द्रक, केन्द्रक, केन्द्रकी रंध समिश्र, क्रोमेटिन एवं न्यूक्लियोसोम, कोशिका संकेतन और कोशिका ग्राही, संकेत पारक्रमण (जी—1 प्रोटीन्स आदि), समसूत्रण और अर्धसूत्रण, विभाजन, कोशिका चक्र का आण्विक आधार, गुणसूत्रों में संख्यात्मक और संरचनात्मक विभिन्नताएं तथा उनका महत्व, बहुपट्टीय, लैम्ब्रुश तथा बी—गुणसूत्रों का अध्ययन—संरचना, व्यवहार और महत्व।

2. आनुवंशिकी, आण्विक जैविक और विकास: आनुवंशिकी का विकास और जीन बनाम युग्मविकल्पी अवधारणा (कूटविकल्पी) परिमाणात्मक आनुवंशिकी तथा बहुकारक, सहलग्नता तथा विनिमय—आण्विक मानचित्र (मानचित्रण प्रकार्य की अवधारणा) सहित जीन मानचित्रण की विधियाँ, लिंग गुणसूत्र तथा लिंग सहलग्न वंशागति, लिंग निर्धारण और लिंग विभेद का आण्विक आधार, उत्परिवर्तन (जैव रासायनिक और आण्विक आधार) कोशिकाद्रव्यी वंशागति एवं कोशिकाद्रव्यी जीन (नर बंध्यता की आनुवंशिकी सहित) प्रोसंक तथा प्रोसंक परिकल्पना, न्यूक्लीक अम्नों और प्रोटीनों की संरचना तथा संश्लेषण, आनुवंशिकी कूट और जीन अभिव्यक्ति का नियमन, बहुजीन वर्ग।

जैव विकास—प्रमाण, क्रियाविधि तथा सिद्धान्त, उद्भव तथा विकास में आर0एन0ए0 की भूमिका।

3. पादप प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी तथा जैव सांख्यिकी: पादप प्रजनन की विधियाँ—आप्रवेश, चयन और संकरण (वंशावली, प्रतीप प्रसंकरण, सामूहिक चयन, व्यापक पद्धति)।

नर बंध्यता तथा संकर ओज प्रजनन, पादप प्रजनन में असंगजनन का उपयोग, सूक्ष्मप्रवर्धन तथा आनुवंशिक इंजीनियरी—जीन अंतरण की विधियाँ तथा परजीनी सस्य, पादप प्रजनन में आण्विक चिह्नक का विकास एवं उपयोग।

मानक विचलन तथा विचरण गुणांक (सीवी) सार्थकता परीक्षण, (जैड—परीक्षण, टी परीक्षण तथा काई—वर्ग परीक्षण), प्राधिकता तथा वितरण (सामान्य, द्विपदी और प्वासों बंटन) सम्बन्धन तथा समाश्रयण।

4. शरीर क्रिया विज्ञान तथा जैव रासायनिकी: जल सम्बन्ध, खनिज पोषण तथा आयन अभिगमन, खनिज न्यूनताएं।

प्रकाश संश्लेषण—प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाएं, फोटो—फास्फोरिलेशन एवं कार्बन पाथवे जिसमें शामिल हैं सी—पाथवे (प्रकाश श्वसन) सी 3, सी 4 और कैम दिशामार्ग, श्वसन (किण्वन सहित अवायुजीवीय और वायुजीवीय)— इलेक्ट्रान अभिगमन ख और आक्सीकरण, फॉस्फोरिलेशन, रसोपरासरणी सिद्धान्त तथा एटीपी संश्लेषण, नाइट्रोजन स्थिरीकरण एवं नाइट्रोजन उपापचय, किण्व, सहकिण्व, ऊर्जा—अंतरण तथा ऊर्जा—संरक्षण, द्वितीय उपापचयजों का महत्व, प्रकाशाग्राहियों के रूप में वर्णक (प्लैस्टिडियल वर्णक तथा पादपवर्णक) दीप्तिकालिता तथा पुष्पन, वसंतीकरण, जीर्णन, वृद्धि पदार्थ—उनकी रासायनिक प्रकृति, कृषि बागवानी में उनकी भूमिका और अनुप्रयोग, वृद्धि संकेत, वृद्धि गतियाँ, प्रतिबल शरीरक्रिया विज्ञान (ताप, जल, लवणता, धातु), फल एवं बीज शरीर क्रियाविज्ञान बीजों की प्रसुप्ति, भंडारण तथा उनका अंकुरण, फल का पकना—इसका आण्विक आधार तथा मैनिपुलेशन।

5. परिस्थितिविज्ञान तथा पादप भूगोल: परिस्थितिक कारक, समुदाय की अवधारणायें और गतिकी, पादप अनुक्रमण, जीवमण्डल की अवधारणा, पारितंत्र और उनका संरक्षण, प्रदूषण और उसका नियंत्रण (फाइटोरेमिडिएशन सहित)।

भारत के वनों के प्ररूप—वनरोपण, वनोन्मूलन तथा सामाजिक वानिकी। संकटापन्न पौधे, स्थानिकता तथा रेड डाटाबुक। जैव—विविधता। जैव विविधता, प्रभुसत्ता अधिकारी तथा बौधिक सम्पदा अधिकारों पर सम्मेलन। जैव—भूरासायनिक चक्र—वैश्विक तापन।

रसायन विज्ञान

प्रश्न—पत्र—1

1. परमाणु संरचना: क्वांटम सिद्धान्त, हाईसेनबर्ग अनिश्चितता सिद्धान्त, श्रोडिंगर तरंग समीकरण (काल अनाश्रित) तरंग फलन की व्याख्या, एकल विमीय बाक्स में कण, क्वांटम संख्याएं, हाइड्रोजन परमाणु तरंग फलन। एसपी और डी कक्षों की आकृति।

2. रासायनिक आबन्ध: आयनी आबन्ध, आयनी यौगिकों के अभिलक्षण, आयनी यौगिकों की स्थिरता को प्रभावित करने वाले कारण, जालक ऊर्जा, बार्नहैबर चक्र, सह—संयोजक आबन्ध तथा इसके सामान्य अभिलक्षण। अणुओं में आबन्ध की ध्रुवणा तथा उसके द्विध्रुव आघूर्ण। संयोजी आबन्ध सिद्धान्त, अनुनाद तथा अनुनाद ऊर्जा की अवधारणा। अणु कक्षक सिद्धान्त (एलसीएओ पद्धति), समन्यूक्लीय अणुओं में आबन्ध: H2+, H2 Is NC2, NO, CO, HF, CN, CH, BeH2 तथा CO2A। संयोजी आबन्ध तथा अणु कक्षक सिद्धान्तों की तुलना, आबन्ध कोटि, आबन्ध सामर्थ्य तथा आबन्ध लम्बाई।

3. ठोस अवस्था (सोलिडस्टेट): ठोसों के प्रकार, अंतराफलक कोणों के स्थिरांक का नियम, क्रिस्टल पद्धति तथा क्रिस्टल वर्ग (क्रिस्टलोग्राफिक समूह) क्रिस्टल फलकों, जालक संरचनाओं तथा यूनिट सेल का स्पष्ट उल्लेख, परिमेय सूचकों के नियम, ब्रेग का नियम, क्रिस्टल द्वारा एक्स—रे विवर्तन, क्लोज पैकिंग (सुसंकुलित रचना) अर्द्धव्यास अनुपात नियम, लिमिडिंग अर्द्धव्यास अनुपात मूल्यों के आकलन। NaCL, ZnS, CsCL, CaF2, CdL2 तथा स्टाइल की संरचना। क्रिस्टलों में अपूर्णता, स्टाइकियोमीट्रीक तथा नानस्टाइकियोमीट्रिक दोष, अशुद्धता दोष, अर्द्धचालक, द्रव रवों का प्रारम्भिक अध्ययन।

4. गैस अवस्था: वास्तविक गैसों की अवस्था का समीकरण, अन्तरा—अणुक पारस्परिक क्रिया, गैसों का द्रवीकरण तथा क्रांतिक घटना, मैक्सवेल का गति वितरण, अन्तराणुक संघट्ट, दीवार पर संघट्ट तथा अभिस्पन्दन।

5. ऊष्मागतिकी तथा सांख्यिकीय ऊष्मागतिकी: ऊष्मागतिकी पद्धति, अवस्थाएं और प्रक्रम कार्य, ऊष्मा तथा आन्तरिक ऊर्जा, ऊष्मागतिकी का प्रथम नियम, निकाय पर किया गया कार्य तथा विभिन्न प्रकार के प्रक्रमों में शोषित ऊष्मा, कैलोरीमिति, विभिन्न प्रक्रमों में ऊर्जा एवं ऐंयाल्पी परिवर्तन और उनकी ताप पर निर्भरता।

ऊष्मागतिकी का दूसरा नियम: एंट्रोपी एक अवस्था फलन के रूप में विभिन्न प्रक्रमों में एंट्रोपी परिवर्तन, एंट्रोपी—उत्क्रमणीयता तथा अनुत्क्रमणीयता, मुक्त ऊर्जा फलन, साम्यावस्था का मापदण्ड, साम्य स्थिरांक तथा ऊष्मागतिकी राशियों के बीच सम्बन्ध, नेन्सर्ट ऊष्मा प्रमेय तथा ऊष्मागतिकी का तीसरा नियम। सूक्ष्म तथा स्थूल अवस्थाएं: विहित समुदाय तथा विहित विभाजन फलन, इलेक्ट्रॉनिक, घूर्णी तथा कम्पनिक विभाजन फलन तथा ऊष्मागतिकी राशियाँ, आदर्श गैस अभिक्रियाओं में रासायनिक साम्य।

6. प्रावस्था साम्य तथा विलयन: शुद्ध पदार्थों में प्रावस्था साम्य, क्लासियस—क्लेपिरन समीकरण, शुद्ध पदार्थों के लिए प्रावस्था आरेख, द्विआधारी पद्धति में प्रावस्था साम्य, आंशिक मिश्रणीय द्रव—उच्चतर तथा निम्नतर क्रान्तिक विलयन ताप, आंशिक मोलर राशियाँ, उनका महत्व तथा निर्धारण, आधिक्य ऊष्मागतिकी फलन और उनका निर्धारण।

7. विद्युत रसायन: प्रवल विद्युत अपघट्यों का डेवाई हुकेल सिद्धान्त, विभिन्न साम्य तथा अधिगमन गुणधर्मों के लिए डेवाई हुकेल सीमान्त नियम।

गैलवेनिक सेल, सान्द्रता सेल, इलेक्ट्रोकेमिकल सीरीज, सेलों के ईएमएफ का मापन और उसका

Cont...

अनुप्रयोग, ईंधन सेल तथा बैटरियाँ। इलेक्ट्रोड पर प्रक्रम, अन्तरापृष्ठ पर द्विस्वर, चार्ज ट्रांस्फर की दर, विद्युत धारा घनत्व, अतिविभव, वैद्युत विश्लेषण तकनीक वोल्तामिति, पोलरोग्राफी, एम्परोमिति, चक्रीय-वोल्तामिति, आयन वर्णात्मक इलेक्ट्रोड और उनके उपयोग।

8. रासायनिक बलगतिकी: अभिक्रिया दर की सान्द्रता पर निर्भरता, शून्य, प्रथम, द्वितीय तथा आंशिक कोटि की अभिक्रियाओं के लिए अवकल और समाकल दर समीकरण, उत्क्रम, समान्तर, क्रमागत तथा श्रृंखला अभिक्रियाओं के दर समीकरण, दर स्थिरांक पर ताप और दाब का प्रभाव। स्टॉप-फ्लो और रिलेक्सेशन पद्धति द्वारा द्रुत अभिक्रियाओं का अध्ययन। संघटन और संक्रमण अवस्था सिद्धान्त।

9. प्रकाश रसायन: प्रकाश का अवशोषण, विभिन्न मार्गों द्वारा उत्तेजित अवस्था का अवसान, हाइड्रोजन और हेलोजनों के मध्य प्रकाश रसायन अभिक्रिया और क्वान्टमी लब्धि।

10. पृष्ठीय परिघटना तथा उत्प्रेरकता: ठोस अधिशोषकों पर गैसों और विलयनों का अधिशोषण, अधिशोषण समताप रेखा-लैंगम्यूर तथा बीईटी अधिशोषण रेखा, पृष्ठीय क्षेत्रफल का निर्धारण, विषमांगी उत्प्रेरकों पर अभिक्रिया के अभिलक्षण और क्रियाविधि।

11. जैव-अकार्बनिक रसायन: जैविक तन्त्रों में धातु आयन तथा मिति के पार आयन गमन (आण्विक क्रिया विधि), आइनोफोर्स, फोटोसिंथिसिज-पीएस I, पीएस II, नाइट्रोजन फिक्सेशन, ऑक्सीजन अपटैक प्रोटीन, साइटोक्रोम तथा फेरॉडोक्सिन में उनकी भूमिका।

12.समन्वय रसायन: (क) इलेक्ट्रानिक विन्यास, संक्रमण धातु संकुल में आबन्ध सिद्धान्तों का परिचय, संयोजकता आबन्ध सिद्धान्त, क्रिस्टल फील्ड सिद्धान्त और उसमें संशोधन, धातु संकुल के चुम्बकीय तथा इलेक्ट्रानिक स्पेक्ट्रम की व्याख्या में सिद्धान्तों का अनुप्रयोग।

(ख) समन्वयी यौगिकों में आइसोमेरिज्म (समावयकता), समन्वयी यौगिकों का आईयूपीएसी नामकरण, 4 तथा 6 समायोजन वाले संकुलों का भिविम रसायन, किलेट प्रभाव तथा बहुनाभिकीय संकुल, परा-प्रभाव और उसके सिद्धान्त, वर्ग समतली संकुल में प्रतिस्थापनिक अभिक्रियाओं की बलगतिकी, संकुलों की तापगतिकी तथा बलगतिकी स्थिरता।

(ग) मैटल कार्बोनीलों का संश्लेषण तथा उनकी संरचना, कार्बोक्सिलेट ऐनियन, कार्बोनिल हाइड्राइड तथा मैटल नाइट्रोसिल यौगिक।

(घ) एरोमैटिक प्रणाली के संकुल, मैटल ओलेफिन संकुलों में संश्लेषण, संरचना तथा बंध एलकाइन तथा साइक्लोपेन्टाडायनिक संकुल, समन्वयी असंतुपता, आक्सिडेटिव योगात्मक अभिक्रियाएं, निवेशन अभिक्रियाएं, प्रवाही अणु और उनका अभिलक्षणन, मैटल-मैटल आबंध तथा मैटल परमाणु गुच्छे वाले यौगिक।

13. एफ ब्लाक तत्वों का सामान्य रसायन: लेन्थेनाइड और एक्टिनाइड: पृथक्करण, आक्सीकरण अवस्थाएं, चुम्बकीय तथा स्पेक्ट्रमी गुणधर्म, लेन्थेनाइड संकुचन।

14. निर्जल विलायक : द्रव NH₃, HF, SO₂ तथा H₂SO₄ में अभिक्रियायें, विलायक निकाय अवधारणा की असफलता, निर्जल विलायकों का समन्वयन माडल, कुछ उच्च अमलीय माध्यम, क्लोरोसल्फ्युरिक एसिड तथा सुपर एसिड।

रसायन विज्ञान

प्रश्न पत्र-2

1. विस्थानिक सहसंयोजक बन्ध: एरोमैटिकता, प्रति एरोमैटिकता, एन्थलीन, एजेलीन, ट्रोपोलोन्स, केकुलीन फुल्वीन, सिडनोन।

2. (क) अभिक्रिया क्रियाविधि: उदाहरणों द्वारा कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधियों के अध्ययन की सामान्य विधियों (गतिक एवं गैर-गतिक दोनों) समास्थानिकों का उपयोग, क्रास-ओवर प्रयोग, मध्यवर्ती ट्रेपिंग, त्रिविम रसायन, सामान्य कार्बनिक अभिक्रियाओं के ऊर्जा डायग्राम- (रेखाचित्र) संक्रामी अवस्थाएं एवं मध्यवर्ती, संक्रियण ऊर्जा, अभिक्रियाओं का ऊष्मागतिकी नियंत्रण तथा गतिक नियंत्रण।

(ख) अभिक्रियाशील मध्यवर्ती: कार्बोनियम तथा कार्बोनियम आयनों, कार्बोनियनों, मुक्त मूलकों (फ्री रेडिकल) कार्बोनो, बेन्जाइन तथा नाइट्रेनो का उत्पादन, ज्यामिति, स्थिरता तथा अभिक्रिया।

(ग) प्रतिस्थापन अभिक्रियायें : S_N1, S_N2, S_Ni, S_Ni, S_N2, S_Ni तथा S_{RN}1 क्रिया विधियाँ, प्रतिवेशी समूह भागीदारी, पाईरोल, फ्यूरेन, थियोफीन, इंडोल जैसे हेट्रोसाइक्लिक यौगिकों सहित एरोमैटिक यौगिकों की इलेक्ट्रोफिलिक तथा न्यूक्लियोफिलिक अभिक्रियाएं।

(घ) विलोपन अभिक्रियाएं : E1, E2 तथा E1cb क्रियाविधियाँ, सेजेफ तथा हॉफमन E2 अभिक्रियाओं में दिक् विन्यास, पाइरोलिटिक SYN विलोपन-एसिडेट पाइरोलिसिस। चूर्णीय तथा कोष विलोपन।

(ङ) संकलन अभिक्रियायें: C-C तथा C=C के लिए इलेक्ट्रोफिलिक संकलन, C=O, C-N के लिए न्यूक्लियोफिलिक संकलन, संयुग्मी ऑलिफिन्स तथा कार्बोनिल्स।

(च) पुनर्विन्यास: पिनाकोल-पिनाकोलोन, हॉफमन, बेकमन, बेयर-विलिंगर, फैंडोस्की, फ्राईस, क्लेसेन, कोप, स्टीवेन्ज तथा वाग्नर-मेरबाइन पुनर्विन्यास।

3.पररम्भीय अभिक्रियाएं (Pericyclic reaction): वर्गीकरण और उदाहरण, वुडवर्ड-हॉफमन नियम-इलेक्ट्रोसायक्लिक अभिक्रियाएं-साइक्लोएडीसन अभिक्रियाएं (2+2 तथा 4+2) तथा सिग्माट्रोपिक शिफ्ट (1, 3, 3, 3 तथा 1, 5) FMO उपगमन।

4. रसायन विज्ञान तथा अभिक्रियाओं की क्रियाविधि: एल्डोल संघनन (डायरेक्टेड एल्डोल संघनन सहित), क्लैसेन संघनन डीकमन, परकिन, नोवेनेजेल, विटिज, क्लीमेंसन, वोल्फ-किशनर, केनिजारों तथा फान-रिक्टर अभिक्रियाएं, स्टॉब, बेन्जोइन तथा एसिलोइन संघनन; फिशर ईडोल संश्लेषण, स्कराफ संश्लेषण, विप्लर-नेपिएरास्की, सैंडमेयर, रेमेर-टाइमन तथा रेफॉरमास्की अभिक्रियाएं।

5. बहुलक प्रणाली: (क) बहुलकों का भौतिक रसायन: बहुलक विलयन और उनके ऊष्मागतिक गुणधर्म, बहुलकों की संख्या और भार औसत अणुभार। अवसादन (सेडिमेंटेशन), लाइट स्केटरिंग, ऑसमोटिक प्रेशर, श्यानता (FMO), अत्यं समूह विश्लेषण पद्धति द्वारा अणुभार का निर्धारण।

(ख) बहुलकों का निर्माण और गुणधर्म: कार्बनिक बहुलक-पोलिथिलीन, पॉलीस्टाइरीन, पोलीविनाइल क्लोराइड, टेफ्लॉन, नाइलॉन, टेरीलीन, संश्लिष्ट तथा प्राकृतिक रबड़। अकार्बनिक बहुलक-फोस्फोनिट्रिलिक हेलाइड्स, बोराजाइन, सिलिकोन और सिलिकेट।

(ग) जैव बहुलक: प्रोटीन, डीएनए, आरएनए में मूलभूत बन्ध।

6. अभिकारकों के सांश्लेषिक उपयोग: OsO₄, HIO₄, CrO₃, Pb(OAc)₄, SeO₂, NBS, B₂H₆, Na द्रव अमोनिया LiAlH₄, NaBH₂, n-Buli, MCPBAA

7. प्रकाश रसायन: साधारण कार्बनिक यौगिकों की प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाएं, उत्तेजित और निम्नतम अवस्थाएं, एकक और त्रिक अवस्थाएं, नोरिश टाइप-1 और टाइप-2 अभिक्रियाएं।

8. स्पेक्ट्रमिकी सिद्धान्त और संरचना के स्पष्टीकरण में उनका अनुप्रयोग

(क) घूर्णी स्पेक्ट्रम: द्विपरमाणुक अणु: समस्थानिक प्रतिस्थापन तथा घूर्णी स्थिरांक।

(ख) कांपनिक स्पेक्ट्रम: द्विपरमाणुक आण्विक, रैखिक त्रिपरमाणुक अणु, बहु परमाणुक अणुओं में कार्यात्मक समूहों की विशिष्ट आवृत्तियाँ।

(ग) इलेक्ट्रॉनिक स्पेक्ट्रम: एकक और त्रिक अवस्थाएं: N->P तथा P->P संक्रमण; संयुग्मित द्विआबन्ध तथा संयुग्मित करबोनील में अनुप्रयोग-वुडवर्ड-फीशर नियम।

(घ) नाभिकीय चुम्बकीय अनुनाद: आइसोक्रोनस और एनिसोक्रोनोस प्रोटॉन: कैमिकल शिफ्ट और कपलिंग स्थिरांक, HNMR का साधारण कार्बनिक अणुओं में अनुप्रयोग।

(ङ) द्रव्यमान स्पेक्ट्रम: पेरेंट पीक, बेस पीक, डॉटर पीक, मेटास्टेबल पीक, साधारण कार्बनिक अणुओं का खण्डन, -क्लिवेज, मैकलेफटी पुनर्विन्यास।

(च) इलेक्ट्रॉन चक्रण अनुवाद: अकार्बनिक संकर तथा मुक्त मूलक।

रासायनिक इंजीनियरिंग

प्रश्न पत्र-1

खण्ड-क

(क) तरल तथा कण गतिकी: रलों की श्यानता, स्तरीय और विक्षुब्ध प्रवाह, अविच्छिन्नता समीकरण तथा नेवियर-स्टोक्स समीकरण-बरनौली का प्रमेय, प्रवाह मापी, तरल संकर्ष तथा दाब ह्रास-रेनाल्ड संख्या तथा घर्षण गुणक-पाइप (नल) की रुक्षता का प्रभाव- लाभप्रद नल व्यास, पम्प, जल, वायु/भाप जेट निष्कासक (इंजेक्टर), संपीडक (कम्प्रेसर), आध्माता (ब्लोअर) तथा पंखे, द्रव पदार्थों का विलोडन और मिश्रण-ठोस पदार्थों तथा लेपों का मिश्रण-संदनल तथा पीसना-सिद्धान्त तथा उपस्कर, रिटिन्जर तथा बांड के नियम-निस्पंदन तथा निस्पंदन उपस्कर, तरल कण यांत्रिकी-मुक्त तथा अवरुद्ध निषदन (सैटलिंग)-तरलीकरण तथा न्यूनतम तरलीकरण वेग-सम्पीड्य तथा असम्पीड्य प्रवाह की संकल्पना-ठोस पदार्थों का परिवहन।

(ख)द्रव्यमान अन्तरण: आणविक विसरण गुणांक-विसरण का प्रथम तथा द्वितीय नियम-द्रव्यमान अंतरण गुणांक-द्रव्यमान अंतरण के फिल्म तथा अन्तर्वेशन आसवन, सरल आसवन, आपेक्षिक वाष्पशीलता, आंशिक आसवन, आसवन के प्लेट तथा संकुलित स्तम्भ, प्लेटों की न्यूनतम संख्या का आंकलन, द्रव-द्रवसाम्यावस्था, निष्कर्षण-सिद्धान्त तथा व्यवहार, गैस-अवशोषण स्तम्भ का अभिकल्पन शुष्कन, आर्द्रिकरण, अनार्द्रिकरण, क्रिस्टलीकरण, उपस्कर का अभिकल्पन।

(ग) ऊष्मा अंतरण: चालन, तापीय ऊष्मा चालकता, विस्तृत सतह ऊष्मा अंतरण, मुक्त तथा प्रणोदित संवहन/ऊष्मान्तरण गुणांक- नसैल्ट संख्या-एलएमटीडी तथा प्रभावशीलता, द्विपाइप और खोल तथा द्यूब ऊष्मा विनिमयित्र के अभिकल्पन के लिए एनटीयू पद्धतियों, ऊष्मा तथा संवेग अंतरण के बीच सादृश्यता, क्वंथन (बॉयलिंग) तथा संघनन तापीय ऊष्मा अन्तरण, एकल तथा बहुल प्रभावी वाष्पक, विकिरण-स्टीफन-बोल्टजमैन नियम, उत्सर्जकता तथा अवशोषकता-भट्टी के तापीय आधार पर आकलन-सौर तापक।

खण्ड-ख

(घ) नवीन पृथक्करण प्रक्रियाएं: साम्य पृथक्करण प्रक्रियाएं-आयन-विनियम, परासरण, इलेक्ट्रो डायलिसिस, उत्क्रम (विपरीत) परासरण, परा निस्पन्दन तथा अन्य झिल्ली (मैम्बरेन) प्रक्रियाएं, आणविक आसवन, अति क्रांतिक (सुपर क्रिटिकल) तरल निष्कर्षण।

(ङ) प्रक्रिया उपस्कर अभिकल्पन: बाहिका (वैसल) अभिकल्पन (डिजाइन करने) के निकष को प्रभावित करने वाले कारक, लागत सम्बन्धी विचार, संघनन वाहिकाओं का अभिकल्पन-उर्ध्वाधर, क्षैतिज तथा गोल भूमिगत वाहिका (वैसल), वायुमण्डलीय तथा उच्च दाब के लिए संवरकों का अभिकल्पन, चपटी तथा दीर्घवृत्तीय शीर्ष वाली संवृत्तियां, आधारों (सपोर्टस) का अभिकल्पन (डिजाइन), निर्माण सामग्री-अभिलक्षण तथा चयन।

(च) प्रक्रिया गतिकी तथा नियंत्रण: प्रक्रिया परिवर्त्यों के लिए मापनयंत्र- जैसे तल, दाब, प्रवाह, तापमान, पीएच (PH) तथा सांद्रता को दृश्य/ वायुचालित/ सादृश्य/अंकीय सूचक रूपों में दर्शाते हुए, नियंत्रित परिवर्त्य, युक्त प्रयुक्त परिवर्त्य तथा भाराधिक्य पारिवर्त्य, रैखिक नियंत्रण सिद्धान्त, लाल्तास-रूपान्तर (ट्रांसफार्मस), पीआईडी नियंत्रक, खण्ड आरेख (ब्लॉक डायग्राम) निरूपण, अल्पस्थायी तथा आवृत्ति अनुक्रिया, बन्द लूप पद्धति का स्थायित्व, उन्नत नियंत्रण नीतियां, कम्प्यूटर आधारित प्रक्रिया नियंत्रण।

रासायनिक इंजीनियरिंग

प्रश्न पत्र-2

खण्ड-क

(क) सामग्री तथा ऊर्जा समायोजन: पुनश्चक्रण/उप मार्ग/रंजन (पर्ज) वाली प्रक्रियाओं में सामग्री तथा ऊर्जा संतुलन का आकलन, ठोस/द्रव/ गैस ईंधनों का दहन, रससमोकरणमिति (स्टाईकियोमीट्री) समीकरण और अधिक वायु आवश्यकताएं-रूढोष्प ज्वाला तापमान।

(ख) रासायनिक इंजीनियरिंग ऊष्मा गतिकी: ऊष्मा गतिकी के नियम-शुद्ध अवयवों तथा मिश्रण के लिए दाब-आयतन-तापमान (पीवीटी) समीकरण, ऊर्जा फलन तथा परस्पर सम्बन्ध, मैक्सवैल-समीकरण, पलायनता, सक्रियता तथा रासायनिक विभव, आदर्श/अनादर्श, शुद्ध-अवयव तथा बहु-अवयव मिश्रण के लिए वाष्प-द्रव साम्यावस्था, रासायनिक अभिक्रिया साम्यावस्था के मानदण्ड, साम्य स्थिरांक तथा साम्यावस्था रूपान्तरण, ऊष्मा गतिकी चक्र-प्रशीतन तथा शक्ति।

(ग) रासायनिक अभिक्रिया इंजीनियरिंग: धान (बैच) रिएक्टर, समांगी अभिक्रियाओं की गतिकी तथा गतिकी आंकड़ों की व्याख्या, आदर्श प्रवाह रिएक्टर- सतत विलोडित रिएक्टर (सीएसटीआर), प्लग प्रवाह रिएक्टर तथा उनके निष्पादन समीकरण-ताप प्रभाव तथा अनियंत्रित अभिक्रियाएं, विषमांगी अभिक्रियाएं, उत्प्रेरित तथा अनुत्प्रेरित अभिक्रियाएं तथा ठोस-गैस, द्रव-गैस अभिक्रियाएं, नैज गतिकी तथा सार्वभौमिक अभिक्रिया दर संकल्पना, निष्पादन के लिए एक प्रावस्था से दूसरी प्रावस्था में तथा कण के भीतर द्रव्यमान अंतरण का महत्व, प्रभाविता घटक, समतापीय तथा गैर-समतापीय रिएक्टर तथा रिएक्टर स्थिरता।

खण्ड-ख

(घ) रासायनिक प्रौद्योगिकी: प्राकृतिक कार्बनिक उत्पाद-काष्ठ तथा काष्ठ आधारित रसायन-लुगदी तथा कागज/कृषि उद्योग-शर्करा, खाद्य तेल निष्कर्षण (वृक्ष आधारित बीजों सहित), साबुन तथा डिटरजेंट। सुगन्ध तेल, बायोमास गैसीकरण-(बायोगैस सहित), कोयला तथा कोयला रसायन-पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस-पेट्रोलियम परिशोधन (वायुमण्डलीय आसवन/भंजन/शोधन), पेट्रोरसायन उद्योग-पोलिथिलीन (एल डी पी ई/एच डी पी ई/एल एल डी पी ई) पोलिविनाइल क्लोराइड, पोलिस्टाइरीन, अमोनिया का औद्योगिक निर्माण, सीमेंट, तथा चूना उद्योग-रोगन तथा वार्निश-कांच तथा मृत्तिका शिल्प, किण्वन-अल्कोहल तथा प्रतिजैविक (एंटीबायोटिक्स)।

(ङ) पर्यावरणीय इंजीनियरिंग तथा सुरक्षा: पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण, वायु तथा जल में प्रदूषण के स्रोत, ताप प्रभाव (ग्रीन हाउस इफेक्ट), ओजोन परत का ह्रास, अम्ल बौछार, सूक्ष्म मौसम विज्ञान तथा पर्यावरण में प्रदूषक तत्वों का प्रसरण (प्रदूषण का फैलाव), प्रदूषण स्तर को मापने की विधियां तथा उन पर नियंत्रण की नीतियां, ठोस अपशिष्ट, उनके जोखिम और उनके निपटान के तरीके, प्रदूषण नियंत्रण उपस्करों का अभिकल्पन (डिजाइन) तथा निष्पादन विश्लेषण, अग्नि तथा विस्फोट जोखिम निर्धारण, एच ए जैड ओ पी तथा एच ए जैड ए एन, आपातकालीन योजना, आपदा प्रबन्ध, पर्यावरणीय विद्यान, जल, वायु तथा पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, वन (संरक्षण) अधिनियम।

(च) प्रक्रिया इंजीनियरिंग अर्थशास्त्र: प्रक्रम उद्योग के लिए नियत (फिक्सड) तथा कार्यशील पूंजी आवश्यकताएं तथा अनुमान पद्धतियाँ। लागत अनुमान और विकल्पों की तुलना, डिस्काउंटेड कैश फ्लो द्वारा निवल वर्तमान मूल्य, वापस भुगतान विश्लेषण, आई आर आर मूल्य हास, कर तथा बीमा, सीमान्त बिन्दु विश्लेषण, परियोजना अनुसूचन, पी ई आर टी तथा सी पी एम, लाभ तथा हानि लेखा, तुलन पत्र तथा वित्त विवरण, पाइप लगाने सहित संयंत्र स्थल तथा संयंत्र अभिन्यास।

सिविल इंजीनियरिंग

प्रश्न पत्र-1

भाग-क

यांत्रिक इंजीनियरिंग, पदार्थ-सामर्थ्य तथा संरचनात्मक विश्लेषण

यांत्रिकी इंजीनियरिंग:मात्रक तथा विमाएं, एस आई मात्रक, सदिश, बल की संकल्पना, कण तथा दृढ़ पिण्ड संकल्पना, संगामी, असंगामी तथा समतल पर समान्तर बल, बल आघूर्ण तथा वैरिगनोन प्रमेय, मुक्त पिण्ड आरेख, संप्रतिबन्ध साम्यावस्था, कल्पित कार्य का सिद्धान्त, समतुल्य बल प्रणाली।

प्रथम तथा द्वितीय क्षेत्र आघूर्ण, द्रव्यमान जड़त्व आघूर्ण, स्पैतिक घर्षण, आनत तल तथा बेयरिंग।

शुद्धगतिकी तथा गतिक: कार्तीय शुद्धगतिकी तथा ध्रुवीय निदेशांक, समान तथा असमान त्वरण के अधीन गति,

Cont..

गुरुत्वाधीन गति, गतिक कण: संवेग तथा ऊर्जा सिद्धान्त, डी एल्मबर्टस सिद्धान्त, प्रत्यास्थ पिण्डों का संघटन, दृढ़ पिण्डों का घूर्णन, सरल आवर्त गति, गति पालक चक्र।

पदार्थ-सामर्थ्य: सरल प्रतिबल तथा विकृति, प्रत्यास्थ स्थिरांक, अक्षीत: भारित संपीडांग, अपरूपण बल तथा बंकन आघूर्ण, सरल बंकन का सिद्धान्त, अनुप्रस्थ काट का अपरूपण, प्रतिबल वितरण, समसामर्थ्य धरण, पत्तीदार कमानी, प्रत्यक्ष प्रतिबल में विकृति ऊर्जा, बंकन तथा अपरूपण।

धरन विक्षेप: मैकाले विधि: मोर की आघूर्ण क्षेत्र विधि, अनुरूप धरण विधि, एकांक भार विधि, शाफ्ट की ऐंटन, संचरण क्षमता, सघन कुण्डलित कमानी, स्तम्भों का प्रत्यास्थ स्थायित्व। ऑयलर, रेनकाईन तथा सीकेंट सूत्र, दो विमाओं में प्रमुख प्रतिबल तथा विकृति, मोर का वृत्त, प्रत्यास्थ भंग के सिद्धान्त, स्थूल तथा तनु सिलिंडर: आंतरिक तथा बाह्य दाब के कारण प्रतिबल-लामें समीकरण।

संरचनात्मक विश्लेषण: कार्टिलियानोस प्रमेय। तथा II एकांक भार विधि, धरण और कील संधियुक्त कैची (ट्रस) में प्रयुक्त संगत विकृति की विधि। ढाल विक्षेप, आघूर्ण वितरण, अपरिमित धरण तथा दृढ़ ढांचों में प्रयुक्त कनि की विश्लेषण विधि तथा स्तम्भ सादृश्य विधि।

वेलन भार और प्रभाव रेखाएं: धरण के खण्ड पर अपरूपण बल तथा बंकन आघूर्ण के लिए प्रभाव रेखाएं, गतिशील भार प्रणाली द्वारा धरण चक्रमण में अधिकतम अपरूपण बल तथा बंकन आघूर्ण हेतु मानदण्ड, सरल आलम्बित समतल कील संधियुक्त कैची (ट्रस) हेतु प्रभाव रेखाएं।

डाट: त्रिकील, द्विकील तथा आबद्ध डाट, पर्शुका लघीयन तथा तापमान प्रभाव डाट में प्रभाव रेखाएं। विश्लेषण की मैट्रिक्स विधि: अपरिमित धरण तथा दृढ़ ढांचों का बल विधि तथा विस्थापन विधि से विश्लेषण, धरण और ढांचों का प्लास्टिक विश्लेषण: प्लास्टिक बंकन सिद्धान्त, प्लास्टिक विश्लेषण, स्थैतिक प्रणाली, यांत्रिकी विधि।

असममित बंकन: जडत्व आघूर्ण, जडत्व उत्पाद, उदासीन अक्ष और मुख्य अक्ष की स्थिति बंकन प्रतिबल की परिगणना।

भाग-ख

संरचना अभिकल्प: इस्पात, कंक्रीट तथा चिनाई संरचना

संरचनात्मक इस्पात अभिकल्प: संरचनात्मक इस्पात: सुरक्षा गुणक और भार गुणक, कवचित, कावला तथा वेल्डित जोड़ तथा संयोजन, तनाव तथा संपीडांग इकाइयों का अभिकल्प, संघटित परिच्छेद का धरण, कवचित तथा वेल्डित प्लेट गर्डर, गैट्री गर्डर, बत्ता और बन्धक, स्लैब एवं गसेटिड (स्तम्भ आधार) कालम बेस सहित स्टंचियन्स।

राजमार्ग तथा रेलवे पुलों का अभिकल्प: थ्रू एंड डेक टाइप प्लेट गर्डर, वारेन गर्डर, प्रांट कैची।

कंक्रीट तथा चिनाई संरचना का अभिकल्प: मिश्र अभिकल्प की संकल्पना, प्रबलिक कंक्रीट: कार्यकारी प्रतिबल तथा सीमा अवस्था विधि से अभिकल्प- आईएस पुस्तिकाओं की सिफारिशें/वन वे एवं टू वे स्लैब का डिजाइन, सोपान-स्लैब, सरल तथा आयताकार सतत धरण, टी, एवं एल काट के सरल एवं सतत धरण, उत्केन्द्रता सहित अथवा रहित प्रत्यक्ष भार के अन्तर्गत संपीडांग इकाइयां, विलगित एवं संयुक्त नीब, केन्टीलिवर एवं पर्शुका युक्त पतिधारक भित्ति।

जल टंकी: पृथ्वी पर रखे आयताकार एवं गोलाकार टंकियों के अभिकल्पन के लिए शर्तें।

पूर्व प्रतिबलित कंक्रीट: पूर्वप्रतिबलित के लिए विधियां और प्रणालियां आनति आधारित परिच्छेद पर विश्लेषण और अभिकल्प के द्वारा कार्यकारी प्रतिबल, पूर्व प्रतिबलित हानि।

आई एस (पुस्तिकाओं) कोड के अनुसार ईट की चिनाई का अभिकल्पन।

चिनाई प्रतिधारक भित्ति अभिकल्पन।

भाग-ग

तरल यांत्रिकी, मुक्त वाहिका प्रवाह एवं द्रवचालित मशीनें तरल यांत्रिकी: तरल गुणधर्म तथा तरल गति में उनकी भूमिका, तरल स्थैतिकी जिसमें समतल तथा वक्र सतह पर कार्य करने वाले बल भी शामिल हैं। तरल प्रवाह की शुद्धगतिकी एवं गतिक: वेग और त्वरण, सरिता रेखाएं, सांतत्य समीकरण, आघूर्णी तथा घूर्णी प्रवाह, वेग विभव एवं सरिता अभिलक्षक, प्रवाह जाल, आरेखण प्रवाह जाल विधि, स्रोत और निग्मन, प्रवाह पृथक्करण, मुक्त तथा प्रतिबलित भंवर।

आयतन नियंत्रण समीकरण, सांतत्य, संवेग, आयतन नियंत्रण समीकरण से ऊर्जा तथा संवेग आघूर्ण।

नेवियर स्टोक्स समीकरण, ऑयलर आघूर्ण समीकरण, तरल प्रवाह समस्याओं का अनुप्रयोग, पाइप प्रवाह, समतल, बक्र, अचल एवं चल वेन, स्टूलइस गेट, वियर, आस्वमापी तथा वेंटुरी मापी।

विमीय विश्लेषण एवं समरूपता: बर्किगहम पी-प्रमेय विमारहित प्राचल, समस्या सिद्धान्त, निदर्श नियम, अविकृत एवं विकृत प्रतिरूप।

स्तरीय प्रवाह: समान्तर, अचल एवं चल प्लेटों के बीच स्तरीय प्रवाह, ट्यूब द्वारा प्रवाह।

परिसीमा परत: चपटी प्लेट पर स्तरीय एवं विक्षुब्ध परिसीमा परत, स्तरीय उप-परत, मसृण एवं रुक्ष परिसीमाएं, विकर्ष एवं लिफ्ट।

पाइपों द्वारा विक्षुब्ध प्रवाह: विक्षुब्ध प्रवाह के अभिलक्षण, वेग वितरण एवं पाइप घर्षण गुणक की विविधता, जलदाब प्रवणता रेखा तथा पूर्ण ऊर्जा रेखा, साइफन, पाइप प्रसारण और संकुचन, पाइप जालकार्य, पाइपों और उल्लोल कुण्डों में जलाघात।

मुक्त वाहिका प्रवाह: समान एवं असमान प्रवाह, आघूर्ण एवं ऊर्जा संशुद्धि गुणक, विशिष्ट ऊर्जा तथा विशिष्ट बल, क्रान्तिक गहराई, प्रतिरोध समीकरण तथा रूक्षता गुणांक की विविधता, तीव्र परिवर्ती प्रवाह, संकुचन में प्रवाह, अपच्छिन्न अवपात प्रवाह, जलोच्छाल और इसके अनुप्रयोग, प्रोत्कर्ष एवं तरंग, क्रमश: परिवर्ती प्रवाह, पृष्ठ परिच्छदिका वर्गीकरण, नियंत्रण काट, परिवर्ती प्रवाह समीकरण के समाकलन की सोपान विधि, चल प्रोत्कर्ष एवं द्रवचालित बोर।

द्रवचालित यंत्र तथा जल शक्ति: अपकेन्द्री पम्प- प्रकार, अभिलक्षण, नेट पाजिटिव सक्शन हाइट (एन पी एस एच), विशिष्ट गति, समान्तर पम्प।

प्रत्यगामी पम्प, वायु भांड, द्रवचालित रैग, दक्षता प्राचल, घूर्णी एवं धनात्मक विस्थापन पम्प, डायफ्राम तथा जेट पम्प।

द्रवचालित टरबाइन, प्रारूप वर्गीकरण, टरबाइन चयन, निष्पादन प्राचल, नियंत्रण, अभिलक्षण, विशिष्ट गति। जल शक्ति विकास के सिद्धान्त, प्रकार, अभिन्यास तथा घटक कार्य, प्रोत्कर्ष टैंक, प्रकार और चयन, प्रवाह अवधि वक्र तथा आश्रित प्रवाह; भण्डारण तथा जल संचयन, पम्पन भण्डारण संयंत्र, लघु, सूक्ष्म-जल वैद्युत संयंत्र के विशेष लक्षण।

भाग-घ

भू-तकनीकी इंजीनियरिंग

मृदा के प्रकार, कला सम्बन्ध, गाढ़ता सीमाएं, कण आकार वितरण, मृदा वर्गीकरण, संरचना तथा मृत्तिका खनिज विज्ञान। कोशिकीय जल तथा संरचनात्मक जल, प्रभावी प्रतिबल तथा रंध जल दाब, डारसी नियम, पारगम्यता को प्रभावित करने वाले कारक, पारगम्यता का निर्धारण, स्तरित मृदा निक्षेपों की पारगम्यता।

रिसन दाब, बालू पंक अवस्था, संपीडयता तथा संहनन, टेरजाधी का एक विमीय सिद्धान्त, संहनन परीक्षण।

मृदा संहनन, संहनन क्षेत्र नियंत्रण, कुल प्रतिबल तथा प्रभावी प्रतिबल पारगम्यता, रंध दाब गुणांक। मृदा का सामर्थ्य अपरूपण, मोर कूलांब भंगता सिद्धान्त, अपरूपण परीक्षण, भू दाब बिराम, सक्रिय तथा निष्क्रिय दाब, रेनकाइन सिद्धान्त, कूलांब का फन्नी सिद्धान्त, प्रतिधारक भित्ति पर भू दाब, चारदी स्थूणा भित्ति, बंधनयुक्त खनन। दिक्मान धारिता, टेरजाधी तथा अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्त, शुद्ध तथा कुल दिक्मान दाब। आसन्न तथा संघनन प्रबन्ध। ढाल, स्थायित्व, कुल प्रतिबल तथा प्रभावी प्रतिबल विधि, स्लाइसों की रूढ़ विधि, स्थायित्व अंक। अंध स्तल अन्वेषण, प्रबंधन विधि, प्रतिचयन, अन्तर्वेशन परीक्षण, दाब मापी परीक्षण।

नींव के महत्वपूर्ण लक्षण, नींव के प्रकार, अभिकल्पन मापदण्ड, नींव के प्रकार का चयन, मृदा में प्रतिबल वितरण, बासिनस्क सिद्धान्त, न्यूमार्क चार्ट, दाब बल्क, संस्पर्श दाब, विभिन्न दिक्मान धारिता सिद्धान्तों की अनुप्रयोज्यता, क्षेत्र परीक्षण से दिक्मान धारिता का मूल्यांकन अनुज्ञेय दिक्मान धारिता, निषदन विश्लेषण, अनुज्ञेय निषदन।

पाद अनुपालन, विलगित तथा संयुक्त पाद, रैपटस, उत्प्लावकता रैपटस, स्थूणा नींव, स्थूणा के प्रकार, स्थूणा धारिता, स्थैतिक तथा गतिक विश्लेषण, स्थूणा समूहों के अभिकल्प, स्थूणा भारत परिक्षण, स्थूणा निषदन, पाश्चिम धारिता, पुलों हेतु नींव, भूमि सुधार तकनीक-पूर्व भारण, बालू नाली, पत्थर-स्तम्भ, अभिपूरण, मृदा स्थायीकरण।

सिविल इंजीनियरिंग

प्रश्न पत्र-2

भाग-क

निर्माण तकनीक, उपकरण, योजना और प्रबन्ध

1. निर्माण तकनीक: इंजीनियरिंग सामग्री: निर्माण सामग्री के भौतिक गुणधर्म: पत्थर, ईट तथा टाइल, चूना, सीमेंट तथा सुरखी मसाला, चूना कंक्रीट तथा सीमेंट कंक्रीट, ताजा मिश्रित तथा कठोरित कंक्रीट के गुणधर्म, फर्श की टाइलें, प्रबलित सीमेंट, तंतु प्रबलित तथा पालिमर कंक्रीट, उच्च सामर्थ्य कंक्रीट तथा हल्की कंक्रीट, प्रकाष्ठ का प्रयोग, इमारती लकड़ी: गुणधर्म एवं प्रयोग, इमारती लकड़ी में दोष, इमारती लकड़ी का संशोधन एवं संरक्षण, प्लास्टिक, रबड़ एवं आद्रतारोधी सामग्री, अंतस्थ रोधी, कम लागत के आवास हेतु सामग्री।

निर्माण: भवन के घटक और उनके कार्य, ईट-चिनाई, बन्धन, जोड़, पत्थर चिनाई। आईएस कोडों (पुस्तिकाओं) के अनुसार दीवार की ईट-चिनाई का डिजाइन, सुरक्षा गुणक, उपयुक्तता तथा सामर्थ्य आवश्यकताएं, प्लास्टर, टीप, फर्शा एवं छतों के प्रकार, संवातन, भवनों की मरम्मत।

भवन की कार्यभूलक योजना: भवन अभिन्यास, परिसंचरण, क्षेत्रों का समूहन, गुप्त संकल्पना तथा ऊर्जा दक्ष भवन का डिजाइन, राष्ट्रीय भवन कोड व्यवस्था, भवन आकलन एवं विनिर्देशन, कार्य की लागत, मूल्यांकन।

2. निर्माण उपकरण: मानक एवं विशेष प्रकार के उपकरण, निरोधक अनुरक्षण एवं मरम्मत, उपकरण के चयन को प्रभावित करने वाले कारक, संतुलित आयु, समय एवं गति अध्ययन, पूंजी एवं अनुरक्षण लागत।

कंक्रीट उपकरण: तौल बैचर, मिश्रक, कम्पन, बैचिंग संयंत्र, कंक्रीट पम्प।

मिट्टी कार्य के उपकरण: विद्युत, फावड़ा, कुदाल, बुलडोजर, डम्पर, ट्रैलर और ट्रैक्टर, रोलर, मेष पाद वेल्हन।

3. निर्माण योजना और प्रबन्ध: निर्माण सक्रियता, कार्यक्रम, कार्य अभिन्यास, बार चार्ट संविदा करने वाले फर्मों का संगठन, परियोजना नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण। लागत कम करने के उपाय।

नव कार्य विश्लेषण: सीपीएम एवं पीईआरटी विश्लेषण, प्लवी समय, सक्रियता ध्वंस लागत, इष्टतमीकरण आधुनिकीकरण हेतु नेटवर्क संकुचन, लागत विश्लेषण और साधन नियतन, इंजीनियरी अर्थशास्त्र के तत्त्व, मूल्य निर्धारण की विधियां, वर्तमान मूल्य, वार्षिक लागत, लाभ लागत, वार्षिक विश्लेषण, अनुमाप एवं आकार की अर्थ व्यवस्था, निवेश स्तर सहित विकल्पों को चुनना, परियोजना लाभदायिकता।

भाग-ख

सर्वेक्षण एवं परिवहन इंजीनियरिंग

सर्वेक्षण: दूरी एवं कोण मापने की सामान्य विधि, प्लेन टेबल सर्वे, समतलन, चक्रम सर्वेक्षण, त्रिकोणन सर्वेक्षण, संशोधन एवं समायोजना, रूपरेखण, स्थलाकृतिक मानचित्र, उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए सर्वेक्षण उपकरण, टकीमिति, वृत्ताकार एवं संक्रमण चक्र फोटोग्रामिति के सिद्धान्त रिलवे: रेलपथ, स्लीपर, रेल आबन्धन, गिट्टी, कांटे तथा क्रॉसिंग, उत्क्राम अभिकल्प, स्टेशन तथा यार्ड, (टर्नटेबल) भूमिपटल, सिग्नल तथा अन्तःपाशन, समतल पारक। रेलपथ का निर्माण एवं अनुरक्षण, बाह्योत्थान, रेल का विसर्पण, नियंत्रक प्रवणता, ट्रेक प्रतिरोध, संकर्षण प्रयास, ट्रेक रिलेकरण (प्रविसारण)।

राजमार्ग इंजीनियरिंग: राजमार्ग योजना के सिद्धान्त, राजमार्ग संरेखन, ज्यामितिक अभिकल्प, अनुप्रस्थ काट, उभार (कैम्बर), बाह्योत्थान, क्षैतिज एवं उर्ध्वाकार वक्र, मार्गों का वर्गीकरण, कम लागत मार्ग, नम्य कुटिटम, दृढ़ कुटिटम, कुटिटम (पेवमेंट) डिजाइन एवं उनका निर्माण, कुटिटम मंगला और मजबूती का मूल्यांकन।

सड़क अपवाह: बहिस्तल एवं अघस्तल अपवाह। यातायात इंजीनियरी: पूर्वानुमान तकनीक, उदगम एवं गन्तव्य सर्वेक्षण राजमार्ग क्षमता, सरणीकृत एवं असरणीकृत परिच्छेद, घूर्णी अभिकल्पन अवयव, अंकन, चिह्न सिग्नल, मार्ग प्रकाश व्यवस्था: यातायात सर्वेक्षण, राजमार्ग वित्त व्यवस्था के सिद्धान्त।

भाग-ग

जल विज्ञान, जल संसाधन एवं इंजीनियरिंग

जल विज्ञान, जल चक्र, अवक्षण, वाष्पीकरण, वाष्पोत्सर्जन, अवनमन संचयन, अन्तःस्पन्दन, अधिभार प्रवाह, जलारेख, बाढ़ आवृत्ति विश्लेषण, बाढ़ आवकलन, जलाशय द्वारा बाढ़ अनुसिलन, वाहिका प्रवाह मार्गाभिगमन- मस्किंग विधि।

भू जल प्रवाह : विशिष्ट लब्धि, संचयन गुणांक, पारगम्यता गुणांक, परिरुद्ध तथा अपरिरुद्ध जलवाही स्तर, स्रावी जलरोधी स्तर, परिरुद्ध तथा अपरिरुद्ध स्थितियों के अन्तर्गत एक कूप के भीतर अरीय प्रवाह, नलकूप, पम्पन तथा पुनर्जाप्ति, परीक्षण, भूजल विभव।

जल संसाधन इंजीनियरिंग: भू तथा धरातल जल संसाधन, एकल तथा बहुउद्देशीय परियोजनाएं, जलाशय की संचयन क्षमता, जलाशय हानियां, जलाशय अवसाधन, जल संसाधन परियोजना का अर्थशास्त्र।

सिंचाई इंजीनियरिंग: फसलों के लिए जल की आवश्यकता: जल का क्षयी उपयोग, सिंचाई के लिए जल की गुणवत्ता, कृति तथा डैल्टा, सिंचाई के तरीके तथा उनकी दक्षताएं।

नहरें: नहर सिंचाई के लिए आवंटन पद्धति, नहर क्षमता नहर की हानियां, मुख्य तथा वितरिका नहरों का संरेखन-अत्यधिक दक्ष काट, अस्तरित नहरें, उनके डिजाइन, रिजीम सिद्धान्त, क्रान्तिक अपरूपण प्रतिबल, तलभार, स्थानीय तथा निलम्बित भार परिवहन, अस्तरित तथा अनास्तरित नहरों की लागत का विश्लेषण, अस्तर के पीछे जल निकास, जल ग्रस्तता: कारण तथा नियंत्रण, जल निकास पद्धति का डिजाइन, लवणता।

नहर संरचना: क्रास नियंत्रक का डिजाइन, मुख्य नियामक, नहर प्रपात, जलवाही सेतु, अवनलिका का नहर निकास में मापन।

द्विपरिवर्ती शीर्ष कार्य: पारगम्य तथा अपरागम्य नींवों पर बाधिका के सिद्धान्त और डिजाइन, खोसला-सिद्धान्त, ऊर्जा क्षय, समन द्रोणी, अवसाद अपवर्जन।

संचयन कार्य: बांधों की किस्में, डिजाइन, दृढ़ गुरुत्व तथा भू-बांधों के सिद्धान्त, स्थायित्व विश्लेषण, नींवों का (ट्रीटमेंट) उपचार, जोड़ तथा दीर्घाएं, निस्पंदन का नियंत्रण।

उत्पलव मार्ग: उत्पलव मार्ग की किस्में, (शिखर द्वार) क्रेस्ट गेट, ऊर्जा क्षय।

नदी प्रशिक्षण: नदी प्रशिक्षण के उद्देश्य, नदी प्रशिक्षण की विधियां।

भाग-घ

पर्यावरण इंजीनियरिंग

जल पूर्ति: भू-पृष्ठ तथा उप भू-पृष्ठ जल स्रोतों का आकलन, जल मांग की प्रागुक्ति, जल की अशुद्धता तथा उसका महत्व, भौतिक, रासायनिक तथा जीवाणु विज्ञान सम्बन्धी विश्लेषण, जल से होने वाली बीमारियां, पेयजल के लिए मानक।

जल का अर्तग्रहण: पंपन तथा गुरुत्व योजनाएं। जल उपचार: स्कंदन के सिद्धान्त, ऊर्णन तथा सादन, मंद-द्रुत, दाब फिल्टर, क्लोरीनीकरण, मृदूकरण, स्वाद, गंध तथा लवणता को दूर करना।

जल संग्रहण तथा वितरण: संग्रहण एवं संतुलन जलाशय-प्रकार, स्थान और क्षमता।

वितरण प्रणालियां: अभिन्यास पाइप लाईनों की द्रव इंजीनियरी, पाइप फिटिंग, रोधक तथा दाब कम करने वाले वाल्वों सहित अन्य वाल्व, मीटर, वितरण प्रणालियों का विश्लेषण, क्षरण अभिज्ञान, वितरण प्रणालियों का अनुरक्षण, पंपन केन्द्र तथा उनका परिचालन।

वाहितमल व्यवस्था: घरेलू तथा औद्योगिक अपशिष्ट, झंझावत वाहितमल-पृथक और संयुक्त प्रणालियां, सीवरों द्वारा बहाव, सीवरों का डिजाइन, सीवर उपस्कर, मैनहोल, अंतर्गम जंकशन, साइफन, सार्वजनिक भवनों में प्लम्बिंग।

सीवेज लक्षण: बी ओ डी, सी ओ डी, ठोस पदार्थ, विलीन ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और टी ओ सी, सामान्य जल मार्ग तथा भूमि पर निष्कासन के मानक।

सीवेज उपचार: कार्यकारी नियम, इकाइयां, कोष्ठ अवसादन टैंक, च्वाशी फिल्टर, आक्सीकरण-पोखर, उत्प्रेरित अवपंक प्रक्रिया, सैप्टिक टैंक, अवपंक निस्तारण, अवशिष्ट जल का पुनः चालन।

ठोस अपशिष्ट: गावों और शहरों में संग्रहण एवं निस्तारण, दीर्घकालीन कुप्रभावों का प्रबन्ध।

<p>पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान</p> <p>प्रथम प्रश्न पत्र</p> <p>सेक्शन - अ</p> <p>पशुधन व्यवसाय- इसके अवसर एवं सम्भावनायें। जंगली जानवरों के सन्दर्भ में मानव जनसंख्या। जंगली जानवरों का महत्व।</p> <p>अनुवांशिकी एवं पशु प्रजनन-</p> <p>पशु अनुवांशिकी-</p> <p>मेण्डेलियन वंशागति, जीन अभिव्यक्ति, सहलग्नता एवं विनियम प्रभावित एवं लिंग समेयित लक्षण गुणसूत्र विपंथन</p> <p>जीन संरचना</p> <p>डी0एन0ए0 एवं अनुवांशिक द्रव्य</p> <p>पुनः संयोजित डी0एन0ए0 तकनीकी उत्परिवर्तन</p> <p>मात्रात्मक प्रति बनाम गुणात्मक लक्षण</p> <p>जीन आवृत्ति को परिवर्तित करने वाले कारक</p> <p>पशु प्रजनन</p> <p>प्रजनन पद्धति - अंतः प्रजनन, बाह्य प्रजनन, क्रमोन्नति, प्रसंकरण संकरण तथा भिन्न संकरण, चयन एवं उससे सम्बन्धित लाभ, विभिन्न प्रकार के पशुओं का अनुवांशिक सुधार- गोधन, भैंस, भेड़, बकरी, सूकर, घोड़े, मुर्गी एवं जंगली जानवर।</p> <p>पर्यावर्णीय अनुकूलन</p> <p>जानवरों में तापीय संतुलन</p> <p>जानवरों पर मौसम का प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव</p> <p>शरीर से पानी का ह्रास</p> <p>वृद्धिदर, शरीर भार</p> <p>प्रकाश संवेदी व्यतिक्रम</p>	<p>खण्ड-ब</p> <p>मुख्य फलों की खेती हेतु समग्र कृषि क्रियायें - आम, केला, नीबू प्रजाति, अंगूर, अमरुद, लीची, पपीता एवं माइनर फल- अनन्नास, अनार, बेल, आँवला, करौंदा, फालसा और कटहल तथा रोपण, फसलें- कॉफ़ी, चाय एवं नारियल। फल संरक्षण के सिद्धान्त। जैम, जेली एवं मार्मलेड के बनाने की विधियाँ।</p> <p>उद्यान विज्ञान - "सब्जियाँ तथा अलंकृत फसलें"</p> <p>प्रश्नपत्र-द्वितीय</p> <p>खण्ड - अ</p> <p>सब्जियाँ तथा अलंकृत फसलों का महत्व एवं कार्यक्षेत्र। सब्जी वाटिका। सब्जियों का वर्गीकरण, क्षेत्र, उत्पादन एवं समग्र कृषि क्रियायें- टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिन्डी, तरबूज, खरबूजा, लौकी, करैला, पातगोभी, फूलगोभी, प्याज, लहसुन, राजमा, मटर, आलू, सूरन, गाजर, मूली, चौलाई एवं पालक। सब्जी उत्पादन में वृद्धि नियामकों का प्रयोग। सब्जियों की जैविक खेती। सब्जियों की संरक्षित खेती। बेमौसम सब्जी उत्पादन। फर्टीगेशन, सब्जी संरक्षण के सिद्धान्त, सब्जियों को सुखाना, निर्जलीकरण और डिब्बाबन्दी।</p> <p>खण्ड-ब</p> <p>अलंकृत बागवानी एवं पुष्पोत्पादन का महत्व। अलंकृत बागवानी के तरीके एवं भाग। शोभाकारी उद्यान में वृक्षों, झाड़ियों, लताओं, पाम, सरस एवं मौसमी पुष्पों का प्रयोग। गुलाब, चमेली, कारनेसन, गेन्दा, रजनीगन्धा और ग्लेडियोलस के उत्पादन में समग्र कृषि क्रियायें। अलंकृत पौधों में वृद्धि नियामकों का प्रयोग। लूज, कट एवं शुष्क पुष्प (झाई पुष्प)। औषधीय, सुगंधित और मसाले वाले पौधे।</p>
<p>सेक्शन - ब</p>	<p>पर्यावरण विज्ञान</p> <p>प्रथम प्रश्न-पत्र</p> <p>खण्ड-अ</p> <p>- पर्यावरण विज्ञान का मूल, परिभाषा, अर्थ, सम्भावित कार्यक्षेत्र, पर्यावरण विज्ञान के अध्ययन का महत्व।</p> <p>- पर्यावरणीय खण्ड: भूमंडल, स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल एवं जीवमंडल, उनके विस्तार, संयोजन तथा उनके बीच पारस्परिक सम्बन्ध।</p> <p>- पर्यावरणीय एवं परिस्थितिकीय सिद्धान्त, परिस्थितिकीय शब्दकोष तथा परिभाषायें संगठन का स्तर, आवास एवं निच, व्यक्तिगत, प्रजाति, आबादी, समुदाय, जीवोम तथा परिस्थितिकीय तंत्र का संगठन।</p> <p>- परिस्थितिकीय अनुक्रम, जलीय तथा मरुस्थलीय अनुक्रम, पराकाष्ठीय व अनुक्रमिक समुदायों की अवधारणा।</p> <p>- इकोतंत्र की अवधारणा, जैविक एवं अजैविक घटक, इकोतंत्र के संरचनात्मक एवं कार्मिक गुण, उत्पादकता ऊर्जा प्रवाह, खाद्य शृंखला, खाद्य जाल तथा परिस्थितिकीय (पिरामिड्स) सूची स्तम्भ, स्थलीय व जलीय इकोतंत्र।</p> <p>- कार्बन, नाइट्रोजन एवं फास्फोरस के भूजैविक - रसायनिक चक्र एवं जलीय चक्र।</p>
<p>पशु रोग -</p>	<p>खण्ड-ब</p> <p>प्राकृतिक संसाधन - जल, इसके स्रोत, सतही एवं भूजल, जल का वैश्विक वितरण एवं उपयोग, जल त्रासदी एवं संरक्षण रणनीति।</p> <p>- भारत की मृदा एवं भूसंसाधन व उनके उपयोग, संरक्षण रणनीति, समग्रित भूमि उपयोग की योजना।</p> <p>खनिज एवं पदार्थ - उनके उपयोग एवं खनन परिचालन।</p> <p>- भारत के वन संसाधन, वन प्रक्षेत्र, सामूहिक एवं सामाजिक वानिकी, वनीकरण कार्यक्रम, वन संरक्षण एक्ट एवं राष्ट्रीय संरक्षण रणनीति।</p> <p>- जैव विविधता और इसका महत्व, कीस्टोन प्रजाति और हाट स्पेट, जैव विविधता का मापन, जैव विविधता ह्रास के कारक, जैवविविधता का संरक्षण-स्वगृही एवं बहिगृही संरक्षण, जैविक विविधता एक्ट।</p> <p>- भारत के वन्य जीव अभयारण व राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, संरक्षित जीवोस्फियर की अवधारणा</p> <p>- पुनर्नवीनित (रिन्यूवेबुल) व अपुनर्नवीनित (नॉन रिन्यूवेबुल) उर्जा स्रोत व उनका इष्टतमीकरण।</p>
<p>पशु रोग -</p>	<p>खण्ड-अ</p> <p>- पर्यावरणीय विघटन, मृदा अपरदन, वनोन्मूलन, सूखा, बाढ़ और मरुस्थलीकरण- प्रक्रियायें, कारक व उनके प्रशमन के उपाय।</p> <p>पर्यावरण प्रदूषण- वायु प्रदूषण-श्रोत, पौधों, जानवरों, मनुष्यों व स्मारकों पर उनके प्रभाव और उनके नियंत्रण के तरीके, वायु गुणवत्ता मानक</p> <p>- जल प्रदूषण के प्रकार व मुख्य स्रोत, जलीय तन्त्र के भौतिक, रसायनिक व जैविक गुणधर्म पर जल प्रदूषकों के प्रभाव, यूटोफीकेशन की प्रक्रिया व नियंत्रण, जल के प्रदूषकों से पैदा होने वाली बीमारियाँ।</p> <p>- मृदा प्रदूषकों के प्रकार व मुख्य स्रोत, मृदा प्रदूषकों के मृदा की उर्वरता व जैविक गुणों पर प्रभाव।</p> <p>- ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोत, ध्वनि प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव।</p> <p>मानव जनित व अन्य जैविक सक्रियतायें- चराई, जलन, खनन इत्यादि तथा उनका कृषि एवं पर्यावरण पर प्रभाव, औद्योगिकीकरण का पर्यावरणीय प्रभाव।</p> <p>- वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं का परिचय जैसे अम्ल वर्षा, ओजोन परत क्षरण, हरित गृह गैसेस तथा वैश्विक तापन और जलवायु परिवर्तन।</p> <p>- टोस अपशिष्ट निस्तारण व इसका पर्यावरण पर प्रभाव व प्रबन्धन, घरेलू औद्योगिक तथा शहरी प्रक्षेत्र में टोस अपशिष्ट प्रबन्धन, अपशिष्ट से उर्जा उत्पादन।</p>
<p>पशु रोग -</p>	<p>खण्ड-ब</p> <p>- पर्यावरणीय प्रबन्धन का परिचय एवं सम्भावित कार्यक्षेत्र, पर्यावरणीय नीतियाँ और पारिस्थितिकी के धर्म।</p> <p>- टिकाउ विकास की मूल अवधारणा, औद्योगिक परिस्थितिकी, पुनश्चक्रीय उद्योग।</p> <p>- पर्यावरण के मूल नियम एवं नीतियाँ जैसे पर्यावरण संरक्षण, एक्ट, वायु एक्ट, जल एक्ट।</p> <p>- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु रणनीतियाँ तथा उनके संस्थान।</p> <p>- जनसंख्या और पर्यावरण, वाहन क्षमता की अवधारणा और जनसंख्या नियंत्रण।</p> <p>- प्राकृतिक विपदायें, चक्रवात, बवंडर, भूकम्प, हिमस्खलन, भूस्खलन व ज्वालामुखी के कारण व प्रभाव, आपदाओं की चेतावनी शमनीकरण, तैयारियाँ एवं प्रबन्धन।</p> <p>- पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागृति, पुनस्थापन, पारिस्थितिकी की अवधारणा एवं प्रयोग।</p> <p>- भारत में पर्यावरण प्रबन्धन हेतु तत्कालिक चुनैतियाँ एवं प्राथमिकतायें।</p>
<p>पशु रोग -</p>	<p>सचिव</p>
<p>पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान</p> <p>द्वितीय प्रश्न पत्र</p> <p>सेक्शन - अ</p>	<p>खण्ड-अ</p> <p>उद्यान विज्ञान की परिभाषा एवं इसकी शाखायें। भारत में फल एवं रोपण फसलों के महत्व एवं कार्यक्षेत्र। विभिन्न फलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन। फलों का भौगोलिक वर्गीकरण। पोषण वाटिका। बागवानी की योजना एवं स्थापना। सघन-रोपण। प्रवर्धन विधियाँ और मूलवृत्त के प्रयोग। सूक्ष्म प्रवर्धन। पौधशाला प्रबन्धन। सधाई एवं कटाई विधियाँ। फलोत्पादन में वृद्धि नियामकों का प्रयोग।</p>